राम दुलारी

वा

सदाचार की देवी

लेखक और प्रकाशक

बाबू सूरजभान साबिक़ वकील,

देवबन्द ज़िला (सहारनपुर)

([illegible] मोहनी नाटक, ब्याही बहू, गृह देवी, जच्चा बच्चा,
विधवाकर्तव्य, जीवननिर्वाह, सतीसतवन्ती
आदि अनेक पुस्तको के रचयिता)

मुद्रकः—
त्रैलोक्यनाथ शर्मा,
जमुना प्रिन्टिंग वर्कस,
मथुरा।
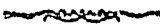
[illegible]त्ति [illegible]० } १९२५ { मूल्य एक रुपया

* रामदुलारी *

वा

[illegible]
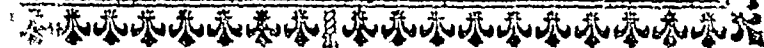
१—सगाई की बात चीत ।

स्त्री—वाह वह तो चालीस बरस का बुड्ढा है, उसके साथ मैं अपनी दुलारी को कभी भी न ब्याहूं ।

—नहीं, चालीस बरस का तो नहीं है, हां ३० से ऊपर

स्त्री—अच्छा तीसही का सही, चाहे इससे भी कमती सही, यह फूलसी नन्ही बच्ची ऐसे के साथ ब्याहने जोग है ।

—फिर जब कोई अच्छा वरमिले ही नहीं तो क्या करें, ... को कब तक घर मे बिठा रक्खें, अबतो इसको ...कर कहीं धक्का ही देना होगा ।

...छा जो धक्का ही देना है तो किसी ग़रीब के साथ ...पर वर तो जोगम जोग हो । मेरी दुलारी को इस जेठ ...बरस लगा है, तुम बहुत से बहुत १६ बरस का वर १८ का ढूंढलो, हद से हद २० का ढूंढलो, इससे ज्यादा ...जोग को तो मै अपनी बच्ची दूंगी नहीं ।

पुरुष–बडे आदमियों के साथ रिश्ता जोड़ने से तो इज़्ज़त बढ़ती ही है, कुछ घटती तो है नहीं, मै तो यह समझू हूं कि यह सम्बन्ध हो जायगा तो इन लड़को की सगाई भी बीसो घरो से आने लग जायगी, नहीं तो आज कल हमे कौन पूछता है

स्त्री–मेरे लड़के कुंवारे भी रह जांयगे तो रहजाने दो, पर मुझे अपनी बेटी क़साई को सौंप कर इनका ब्याह कराना मंजूर नही है।

पुरुष–घर गृहस्थ की बातों में तिरिया हट से काम नहीं चला करता है।

स्त्री–मै हट नहीं करती हूं, सच कहती हूं कि अगर किसी के बहकाये में आकर तुमने मेरी दुलारी की सगाई इस बुड्ढे से करदी तो एक छुरी तो मै अपने पेट में घुसेड़ लूंगी और एक इस लड़की के पेट में घुसेड़ दूंगी, तुम्हें तो मै क्याही कहूं।

इस प्रकार की यह बातें रामप्रसाद और उसकी स्त्री में रात के दस बजे होरही थीं। रामप्रसाद के पिता गंगास्वरूप काशीपुर मे एक अच्छे धनी मानी पुरुष थे, ज़मीदारी अ लेन देन करते थे, सुन्दरी उनकी एक लड़की थी, जो बहुत अमीर घर ब्याही गई थी, उसही के विवाह मे गंगास्वरू इतना धन लगाना पड़ा था कि आगे को उसका लेन व्यापार ही जाता रहा था, इस समय गंगास्वरूप का हो चुका है और रामप्रसाद के तीन लड़के और एक मे से बड़े लड़के कामताप्रसाद का विवाह भी होगया ह

इस अपने बड़े लड़के के विवाह की बाबत रामप्रसा यह ही चाहता था कि १८ बरस की उमर में ही द वे

दुलारी-(कांप कर) अच्छी बहन मुझे ना सौंपियो ऐसे पापी के हाथ।

कमला-वह बेईमान तो मिट्टी भी खाता है, और भले घरों की स्त्रियों को बुला २ कर उनका धर्म भी भ्रष्ट करता है; आधा नीचे और आधा ऊपर धरती में गड़वाने लायक़ है वह पापी तो। नाशगये चंडाल ने दसयो दासियां भी तो रख रक्खी हैं जो लोगों के घरों में जाजाकर स्त्रियों को फुसलाती फिरा करती हैं। मेरे यहां भी तो आने लगीं थी यह उसकी कुटनियां. पर मुझसे तो ज्योंही उन्होंने खुलना शुरू किया मैंने उनको एक दम धक्के देकर निकाल दिया, मेरे यहां तो फिर वह आई नहीं।

दुलारी-मैं तो साफ़ साफ कहे देती हूँ कि जो तुम लोगो ने मुझे उसही के हाथ सौंपनी चाही तो मैं तो अपनी जान खोदूंगी पर उसके यहां नहीं जाऊंगी।

कमला-नहीं ताऊ जी ऐसे नहीं हैं जो तुझे उस पापी के हाथ सौंप दें।

दुलारी-नहीं! बहन अब वह पहले जैसे नहीं रहे हैं, अव्वल तो जब से करज़ा उनके सिर होगया है तब ही से उनकी बातों में फ़रक़ आगया है और अब जब से जायदाद नीलाम पर चढ़ गई है तब से तो वह बिल्कुल ही बदल गये हैं।

कमला-अच्छा तो वह कैसे ही बदल गये हों पर यह सगाई तो मैं किसी तरह भी न होने दूंगी।

दुलारी-नहीं मानेंगे तो मुझे मरना तो आता है, फिर ब्याह सगाई किस की कर देंगे।

कमला–क्यों पागलों वाली बातें करती है, जा मुझ पर भरोसा कर के निश्चिन्त होकर बैठ।

मौक़ा पाकर तीसरे पहर कमलावती ने यह सब बातें अपनी मां से कहीं और ज़ोर देकर कहा कि पिता जी को कहकर जिस तरह भी हो सके यह सगाई न होने दे।

मां–सगाई तो न होने दूं पर मुझे तो यह डर है कि कल को दुलारी की मां हमको उलाहना देने लग जावेगी कि इनको मेरी बेटी का ऐसे बड़े घर ब्याहा जाना न भाया इसही से यह सम्बन्ध न होने दिया।

कमला–नहीं मां वह तो आप ही यह सगाई होना नहीं चाहती है।

मां–हां अब तो नहीं चाहती है पर पीछे हमारे ऊपर ठोना धरने का तो उसको मौक़ा मिल जावेगा।

कमला–जो किसी की जान बचाने के वास्ते ताने भी सहने पड़े तो क्या हरज है और फिर दुलारी तो अपनी ही जान जिगर है।

मां–तू भी आज बच्ची ही बन गई है जो उस ज़रासी लड़की की बातों में आगई है, भला कहीं ब्याह सगाई के मामलों में बच्चो की सुनी जाती है और सच पूछो तो अब तो कलजुग ही आगया है जो ऐसी ज़रा २ सी लड़कियां भी अपने ब्याह सगाई के मामले में दख़ल देने लग गई हैं और जान पर खेल जाने का डरावा दिखाती हैं।

कमला–अच्छा दुलारी की बातों को जाने दे, पर तू ही बता कि क्या ऐसे महादुराचारी को लड़की देनी जोग है।

मां–बेटी इन मर्दों का दुराचार क्या और बेदुराचार क्या, वह तो सब ही ऐसे होते हैं।

कमला–पर मां उस जैसा तो कोई भी न होगा, वह तो बड़ा ही खोटा है।

मां–उनसे तो बुरा न होगा जो भङ्गनों और चमारियों तक को भी नहीं छोड़ते हैं और फिर भी बिरादरी के पंच बने रहते हैं, बेटी इन मर्दों की दूर बला, इन्हें कोई कुछ नहीं कह सक्ता है।

कमला–तो मर्द कैसे ही सही पर यह सगाई तो मैं होने नहीं दूंगी।

मां–क्यों, तुझे क्या ज़िद पड़ गई है इस बात की।

कमला–ज़िद्द क्या मै तो साफ़ २ कहे देती हूँ कि जो दुलारी वहां ब्याही गई तो न तो मै उसे बुलाउंगी और न उस के यहां जाऊंगी, कल को कोई मुझे उलाहना देने लगे, मैं पहिले ही से खोलकर कहे देती हूँ।

मां–क्यों ऐसा क्या बिगाड़ आगया है उनमें।

कमला–यह थोडा बिगाड़ है कि उसकी दासियां भले घरों की औरतों को फुसलाती फिरती हैं।

मां–फिर तू कोई दुनियां की ठेकेदार है, जो चाहें करें।

कमला–अच्छा कुछ हो, पर मुझे उनका अपने यहां आना मंजूर नहीं है।

मां–क्यों कभी कोई तेरे पास भी आई थी क्या। साफ़ २ क्यों नहीं कहती है।

कमला—तुझे साफ़ २ तो कह दिया अब और क्या कहूं।

मां—तो जूते न लगवाये अपने मर्दों से उन नाशगइयों को।

कमला—क्यों उसको जूते न लगने चाहियें जिसने उनको भेजा था।

मां—तो क्या इतना ढेठ हो गया है उस मूड़ी काटे का, देख लेना कोढी होकर मरा करते हैं ऐसे आदमी। ना जी मैं नहीं होने दूंगी यह सगाई, आज ही कहती हूं तेरे बाप से, वह तो ऐसा फटकारेगा दुलारी के बाप को कि धरती ही कुरेदता रह जावेगा, इस पचास बरस के बुड्ढे को लड़की देकर क्या हमें अपने घर को दाग़ लगाना है।

२--कमला का पिता।

रात को सब के सोजाने पर कमला की मां ने अपने पति से इस प्रकार बात छेड़ी।

स्त्री-तुमने भी सुना तुम्हारी दुलारी धरमपुर वाले किसी करोड़पति सेठ से ब्याही जाने वाली है।

मर्द-गुमानीलाल से, वह क्यों लेने लगा है हमारे घर की सगाई उसके साथ सगाई करनेको तो बड़े २ लखपती हाथ जोड़ते फिरते होंगे, तब रामप्रसाद की तो हक़ीक़त ही क्या है। और जो उसने यह सगाई ले भी ली तो उसकी टक्कर को कौन झेलेगा, वह तो राजा आदमी है, कोई ठट्ठा थोड़ा ही है।

स्त्री- कुछ तो इन्तज़ाम कर ही लिया होगा उसकी टक्कर के झेलने का तुम्हारे भाई ने, पर कोई गुप चुप ही इन्तज़ाम किया होगा तबही तो तुम तक ख़बर नहीं होने दी है।

मर्द-नहीं रामप्रसाद ऐसा आदमी नहीं है, बेशक वह क़रज़ में जरूर दब गया है, तोभी वह लड़की पर तो रुपया लेने वाला नहीं है।

स्त्री-वह तो तय्यार बैठा है, पर जेठानी कुछ गर्दन हिला रही है।

मर्द-अच्छा तो फिर होने दो हमें क्या ?

स्त्री-तुम को क्यों नही, साथ में तुम्हारी आबरू भी तो आवेगी।

मर्द-क्यों तुझे क्यों इतनी फ़िकर होगई है, साफ़ २ क्यों नहीं कहती।

स्त्री-सुना है उसका चाल चलन अच्छा नहीं है, रंडियां रखता है और घर विरस्तनों को भी बुलाता रहता है, ऐसे के साथ ब्याहे जाने से क्या सुख भोगेगी हमारी दुलारी।

मर्द—तो एक दुलारी क्या किसी से भी उसकी सगाई न होने दो तब बात है तुम्हारी तो। और एक वह ही क्या सब ही दुराचारियों की सगाई बन्द करा दो।

स्त्री—मेरा बस चले तो मैं तो कहीं भी सगाई न होने दूं ऐसे मूंडी काटों की।

मर्द-मर्द नहीं मानेंगे तो औरतें तो मानेंगी तुम्हारी सलाह को उनही की एक पंचायत कर धरो और हुकम चढ़ा दो कि जो कुशीला हो उसको कोई अपनी बेटी न ब्याहे।

स्त्री-तुम्हें तो सूझ रही है मज़ाक और मैं कह रही हूं सतभाव में, सच कहती हूं वह बड़ा दुष्ट है, उसके साथ दुलारी की सगाई मत होने दो, नहीं तो पछताओगे।

मर्द-मैने तो मज़ाक की कोई भी बात नही कही, मै भी तो सत् भाव में ही कह रहा हूं कि स्त्रियों की पंचायत करके एक दम हड़ताल कर दो और मर्दों की शकल तक देखना बंद करदो, क्यो कि मर्द तो बहुत करके कुशीले ही निकलैंगे, अब तो भंगी चमार तक हड़ताल करने लग गये है, तुम भी करलो, तुम क्यों चुप बैठो हो, यह तो कलजुग है इस कारण अबतो ऐसे ही ऐसे काम होने है।

स्त्री (हंसकर) यह कलजुग हुवा कि सतजुग जो हम यह चाहती है कि मर्द भी सब सुशीले ही होजावें और जो कुशीले हों उनको कोई भी अपनी लड़की न व्याहवे।

मर्द-और यह भी तो कहदो कि कुशीले पुरुषों की स्त्रियां भी अपने मर्दों को छोड़ देवें।

स्त्री-चाहिये तो ऐसा ही, जब मर्द अपनी कुशीली स्त्री का मुंह देखना नही चाहते तब स्त्रियां ही क्यो अपने कुशीले मर्द का मुंह देखें।

मर्द--और मार भी क्यों न डालें यह भी तो कहदो।

स्त्री--तुम्हें तो हंसी हंसी की बातों में गुस्सा आने लग जाता है।

मर्द--तो पागल गुस्से की तो तू बात ही कर रही है, कहीं मर्द औरत बराबर हो सक्के है, मर्द अपनी ठौर है और स्त्री अपनी ठौर, दोनो का एक नियम कैसे होसक्का है,

स्त्री--शील का नियम तो दोनो के वास्ते एक ही होना चाहिये।

मर्द--(गुस्से में भरकर) तभी तो कहता हूं कलयुग आगया है, एक वह भी समय था जब स्त्रियां अपने पति की चितापर बैठकर जीती जल मरती थी और एक यह भी समय है कि मर्दों को कुशील का दोष लगाकर जीते ही की शकल देखना नहीं चाहती है।

स्त्री--तुमने तो कहीं की बात कहीं लेडाली, अब मै कोई सारी दुनियां का प्रबंध बांधने थोड़ा ही बैठी हूं, मैं तो इस अपनी दुलारी की बात कहती हूं कि उसकी सगाई उस नीच से मत होने दो।

मर्द--हम नहीं समझते वह किस बात में नीच होगया है, बड़े २ इज्जतदार तो सुबह उठकर उसके आगे सिर निवाते हैं, अगर ऐसे आदमी भी नीच होजावेंगे तो फिर भलामानस ही कौन रहजावेगा। सच मानो ऐसे भागवान पुरुषों के तो दर्शन से ही बेडे पार होजाते हैं तब वह नीच कैसे हो सक्ते है। वह तो महा पुन्यवान, बिरादरी का सर्दार और ज़िले भर की चादर है, रही ऐश इशरत की बात, सो अमीर लोग कियाही करते है, धन है काहे के वास्ते।

स्त्री--ऐश करने को कौन मना करता है, बाग़ लगावें, महल चिनावें, अच्छे से अच्छा खावें पहने, मुलकों २ की सैर कर आवें, खुशियां मनावे, पर रंडियां रखना और भले घरों की बहू बेटियों को फुसलाते फिरना, यह कोई ऐश थोड़ाही है, यह तो महा नीचों का काम है।

मर्द--किस सती सतवन्ती को फुसलाता फिरता है वह, जो कुचाल हैं वह ही आती होंगी उसके फुसलाये में, और

आती क्या होंगी मुफ्त, उसके रुपये के लालच में आती होगी, अब तू ही बता कि नीच वह औरतें हैं जो यों अपना काला मुंह कराती हैं वा वह है जो उन को भरपूर रुपये देता है।

स्त्री—वह औरतें भी नीच है जो इस तरह लालच में फंस जाती है और वह मर्द भी नीच है जो उन्हें रुपया देकर फंसाते हैं।

मर्द—तब ही तो कहता हूं कि स्त्रियों की पंचायत करके जो जो मर्द कुशीले हों सब को काला मुंह करके निकलवादो, यह उलट फेर तो होना ही है इस कलजुग में, पहले मर्दों का राज था तो अब औरतों का होना चाहिये।

स्त्री—नहीं मालूम मर्दों को चिड़ क्यों लगती है ऐसी बातों से, हम तो साफ़ कहती हैं कि जो स्त्री कुशीली हो उस को भी नाक चोटी काटकर घर से निकाल दो और जो मर्द कुशीला हो उस के वास्ते भी कोई ऐसा ही दंड तजवीज़ हो।

मर्द—तो यही मतलब हुआ ना कि औरत मर्द दोनों बराबर हो जावें।

स्त्री—पाप पुन्य तो दोनों को बराबर ही लगता है, परमात्मा के दरबार में तो अंधेर हो नहीं सकता है इस वास्ते वहां तो दंड भी दोनों को बराबर ही मिलता होगा, फिर यहां भी कुशीली स्त्री और कुशीले पुरुषों से बराबर घृणा क्यों न की जावे।

मर्द—तो कल को यह भी कहने लग जाना कि जिस प्रकार मर्द अपनी स्त्री के मरने पर दूसरी व्याह लाते हैं इसी प्रकार स्त्रियां भी किया करें।

स्त्री—ऐसा तो होने ही लगा है।

मर्द—तो फिर यह भी करने लगो कि जिस प्रकार मर्द एक स्त्री के जीतेजी दूसरी तीसरी ब्याह लाता है इसी प्रकार स्त्रियां भी एक साथ कई कई पति कर लिया करें।

स्त्री—नहीं, मर्दों की तरह स्त्रियां कुशीली नहीं हैं जो ऐसा करने लगें, किन्तु वह तो यह ही कहती हैं कि जिस प्रकार स्त्री एक पति के जीते जी दूसरा पति नहीं कर सकती है इसी प्रकार मर्द भी एक स्त्री के जीतेजी दूसरी स्त्री न कर सकें।

मर्द—क्या कहने है तुम्हारे, आज तो तुमने बड़े २ पंडितों को भी मात देदी।

स्त्री—यह मज़ाक़ की बातें तो होलीं, अब तुम मेरी बात पर ध्यान दो और जिस तरह भी होसके दुलारी की सगाई वहां मत होनेदो।

मर्द—अच्छा तो असली बात बता, तुझे क्यों इतनी लाग हो रही है इस बात की।

स्त्री—हमारी कमला बहुत ख़याल कर रही है इस बात का, वह तो यहां तक कहती है कि जो वह ब्याह होगया तो न तो मै दुलारी को अपने यहां बुलाऊं और न उसके यहां जाऊं।

मर्द—तो कुछ सबब भी इस बात का।

स्त्री—सबब क्या होता, नाश गया डोरे डालता फिरे है भले घरों की बहू बेटियों पर, इनके यहां भी तो अपनी कुटनियां भेजी थीं, पर इसने तो धक्के देकर निकालदीं।

मर्द--अच्छा तो इतना बढ़गया है वह हरामज़ादा। अपने मर्दों को खबर न करी इसने, नहीं तो वह तो ऐसे ज़हरी हैं कि साले की सारी अमीरी एक दम में निकाल देते, अब भी देख लेना जो उस बेईमान के बच्चे को बीच बाज़ार भंगियों से जूतियो न पिटवाया तो हमें ही क्या जानेगा।

स्त्री--अब गई बीती बात को कुरेदना क्या कुछ अच्छा है, तुम कमला के मर्दों से ज़िकर करोगे वे न मालूम क्या से क्या समझ जावें और क्या से क्या कर बैठें, इस वास्ते इस बात पर तो अब मिट्टी डालो, पर दुलारी की सगाई वहां न होने दो।

मर्द—नहीं दुलारी की सगाई अब वहां नहीं हो सकती है।

अगले ही दिन कमला का पिता माधोलाल रामप्रसाद से मिला और कहा:—

माधोलाल—भाई लड़की जवान हो गई इसके व्याह का भी कुछ फ़िकर किया कि नहीं।

रामप्रसाद—मुझे तो अभी तक कोई वर मिला नहीं, कोई तुम्हारी निगाह में हो तो बताओ।

माधोलाल—मैं भी तलाश करूंगा, पर हां यह कैसी चर्चा हो रही है कि तुम उसकी सगाई गुमानीलाल से करने वाले हो।

रामप्रसाद—नहीं करने वाला तो नहीं हूं पर लोग ज़ोर ज़रूर दे रहे हैं कि वहां करदो।

माधोलाल—नहीं मालूम क्या मिलता है इन पाजियों को किसी भले आदमी को बदनाम करने में। देखो यह हरामज़ादे

तुम को तो यह सलाह देते हैं कि वहीं सगाई करदो और बाहर लोगों मे यह उड़ाते फिर रहे हैं कि राम प्रसाद ने सात हज़ार रुपये ठहरा लिये हैं। सच मानो मेरी तो लड़ाई होगई होती कई आदमियो से।

रामप्रसाद—लड़ने की क्या ज़रूरत है, बकनेदो उन बेई-मानों को, जब मै वहां सगाई ही नहीं करूंगा तो वे आपही झूठे पड़ जावेंगे।

माधोलाल--हां यह ही मेरी सलाह है, वहां हर्गिज़ सगाई नहीं करनी चाहिये नहीं तो हम ख्वामख्वाह बदनाम होजावेंगे, तुम जानो यह दुनिया है किस किस का मुंह पकड़ते फिरेंगे।

३--सगाई के वास्ते जाल।

अब माधोलाल ने अपनी स्त्री से जाकर कह दिया कि वहां सगाई नहीं होगी मैने राम प्रसाद को रोक दिया है, कमला-वती ने जब यह बात सुनी तो वह तुरन्त ही दुलारी के पास जाकर यह खुशखबरी सुना आई, और अन्य भी अनेक स्त्रियों से कहती फिर गई कि गुमानीलाल का चाल चलन ख़राब होने के कारण मैने उस से दुलारी की सगाई नहीं होने दी है, फिर दो चार दिन पीछे जब सुसराल गई तो वहां भी यह ही बात गाई। होते २ यह बात गुमानीलाल के भी कानों तक पहुंच गई।

गुमानीलाल उन दिनों नगर का औनरेरी मजिस्ट्रेट था, यह बात सुनते ही उसने एक बदमाश को बुलाकर कमलावती

के पति राधेलाल से उसकी बेतू करादी और उस बदमाश के बदन पर लाठियों की मार के निशान कराकर राधे लाल और उसके नौकर पर फ़ौजदारी मे दावा करा दिया, मुकदमे का समन पहुचने पर राधेलाल और उसके पिता को बड़ा भारी फ़िकर हुआ और वह घबराये हुए गुमानी लाल से मिलने को दौडे परन्तु उसने दूर से ही टकासा जवाब देदिया कि जबतक यह मुक़दमा है तब तक तो मै दोनों तरफ़ वालों मे से किसी से भी नही मिलूंगा।

अब दूसरी बात सुनो कि जिस डिगरी में रामप्रसाद की जायदाद नीलाम पर चढ़ रही थी वह डिगरी भी गुमानीलाल ने ख़रीद करली और मामला तै करने के वास्ते रामप्रसाद को बुला भेजा, न्यादरसिंह कारिन्दा जो रामप्रसाद को बुलाने आया वह जिस तिस प्रकार सैर तमाशे के बहाने से रामप्रसाद के साथ उसके दोनों छोटे बच्चों को भी लिवा लेगया। सगाई की बाबत रामप्रसाद अपनी स्त्री की तो तसल्ली कर गया कि अव्वल तो वहां इस बात का ज़िकर ही नही आवेगा और जो आवेगा भी तो साफ़ इनकार कर दिया जावेगा परन्तु दुलारी का मन नहीं मानता था। वह बहुतेरा अपने मन को समझाती थी पर उसके हृदय के अंदर से यहही आवाज़ आती थी कि अबतो पिताजी बिना सगाई करे नहीं आ सक्ते हैं, इस वास्ते कभी तो उसके मन में आता कि कूये में डूब कर सारा ही खटका मिटा दूं कभी मन को समझाती कि नहीं अभी नहीं मरना चाहिये किन्तु जब उसकी बारात आले और फेरों के वक्त दोनों तरफ़ के आदमी इकट्ठे होलें तब उनके सामने ही पेट में चाकू देकर मरना चाहिये जिस से कुछ तो इन पुरुषों को शरम आवे और अपने अत्याचारों से बाज़ आवें। फिर उसको

ख़याल आता है कि पुरुष तो ऐसे पाषाण हृदय हो रहे हैं कि चाहे हज़ारों और लाखो स्त्रियां भी अपनी जान खोदें तो भी जुल्म करने से न हटें, हां, यदि इन पुरुषो की छाती में हृदय होता, यदि इन मे मनुष्यपने का कुछ भी भाव रहता तो क्या मृतक पति के साथ स्त्रियो को जीती जलमरती देखकर पुरुषों को कुछ भी लज्जा न आती, किन्तु, वह तो स्त्री के मरने पर बेखटके दूसरी ब्याह लाते है और कुछ भी नही लजाते हैं। अब भी जब से सती होना सर्कार ने बन्द कर दिया है, स्त्रियां तो बाल विधवा होकर भी पति के नाम पर धूनी रमा कर बैठ जाती है और सारी उमर रंडापे में ही काट कर दिखाती हैं, और पुरुष यह सब कुछ देखते हुए साठ साठ सत्तर सत्तर बरस का बुड्ढा होने पर भी स्त्री के मरते ही दूसरी ब्याह लाते हैं और कुछ भी नही शरमाते है, यहांतक कि घर में बेटे, पोते की जवान बहू वा बेटी पोती तो रंडापा काट रही हैं और बुड्ढे बाबा मौर बांधकर एक छोटी सी कन्या ब्याह लाते हैं और कुछ भी नही लजाते है।

ऐसी दशा में इन हृदय शून्य पुरुषों के सामने कटारी मार कर मर रहना तो अंधे के आगे रोने और अपने नैन खोने के समान बिल्कुल ही निरर्थक है। मुझको तो अब इस स्वार्थी संसार को लात मार कर और किसी निर्जन स्थान में जाकर राम नाम की धूनी ही रमा लेनी चाहिये। फिर जोश में आकर सोचती कि नहीं अपनी इन करोड़ों बहनो को इन निर्दई पुरुषों के हाथों महा त्रास भुगतते छोड़ जाना भी तो स्वार्थ साधन ही होगा। इस कारण मुझको तो अपना जीवन स्त्री जाति के उद्धार के वास्ते ही अर्पण करदेना चाहिये और निर्भय

होकर इस ही में लग जाना चाहिये। इस प्रकार दुलारी के चोट खाये दिल में अनेक संकल्प उठते थे और विलाय जाते थे।

रास्ते में न्यादरसिंह ने रामप्रसाद से बातें करते हुए गुमानीलाल की तारीफ़ों का ऐसा पुल बांधा, ऐसा नेक सदाचारी और धर्मात्मा उसको सिद्ध करके दिखाया कि रामप्रसाद को भी यक़ीन आगया और जो जो बुराइयां उसकी सुनी थीं उन सब को झूठ मानने लग गया। चलते २ आख़िर यह लोग गुमानीलाल के मकान पर पहुंच गये। रास्ते में न्यादरसिंह ने रामप्रसाद को इस बात का भी यक़ीन दिला दिया था कि अपने यहां कोई बच्चा न होने से गुमानीलाल दूसरों के बच्चों को देखकर बहुत ही ज़्यादा खुश होता है और लाड़ प्यार करने लग जाता है। इस कारण रामप्रसाद अपने बच्चों समेत ही गुमानीलाल के पास गया, जिनको देखकर गुमानीलाल बहुतही प्रसन्न हुआ, बहुत ही प्रेम दिखाया और बहुत कुछ मेवा मिठाई मंगायी। फिर डिगरी की बात छिड़ी जिसपर रामप्रसाद ने अपनी सारी ही व्यथा सुनाई। गुमानीलाल ने भी बहुत कुछ करुणा जताई और अन्त को बहुत कुछ बात चीत होने पर यह बात तै पाई, कि रामप्रसाद पच्चीस बरस तक अपनी जायदाद की आधी आमदनी गुमानीलाल को देता रहे, इसही से डिगरी बेबाक़ हो जावे।

इतने में हाथी तय्यार होकर आगया और गुमानीलाल रामप्रसाद के बच्चों को साथ लेकर सैर को चल दिया और सब से पहिले उनको एक अंग्रेज़ी दूकान पर लेजा कर उनके वास्ते अंग्रेज़ी पोशाकें ख़रीदीं, और वहीं उनको पहिनादीं। फिर दूसरी दूकान पर जाकर बढ़िया २ खिलौने मोल ले दिये और

कम्पनी बाग़ और नहर की झाल दिखा कर घरले आया।

अब कमलावती के घर की सुनिये कि इन बेचारों के यहां तो सोच फ़िकर में चूल्हा भी नहीं चढ़ता था, सारा कुटुम्ब इस ही तदबीर में फिरता था कि किसी तरह राज़ीनामा हो जाय। यह लोग तो उस नालिश करने वाले बदमाश की मिन्नत खुशामद भी करते थे और सौ दोसौ रुपया भी देना चाहते थे, पर वह एक नहीं सुनता था और मुक़दमा लड़ाने का ही डर दिखाता था।आख़िर जब उसपर बहुत दबाव डाला गया तो उसने साफ़ साफ़ खोल दिया कि यह नालिश तो गुमानीलाल ने ही कराई है और उसही को फ़ैसला करने का अख्तियार है। इन लोगो ने तो उसकी यह बात झूठ ही समझी पर जब कमलावती ने सुनी तो वह सहम गई और बुड़ बुड़ा २ कर कहने लग गई कि हो नहो यह तो दुलारी की ही सगाई का सारा फिसाद है। पर इस में हमारा क्या मतलब है, दुलारी की सगाई उसके मां बाप करैंगे या हम। मेरे तो बाप से भी उनको छै सात पीढ़ी का फ़रक है, न सलाह न मशवरा न बात न चीत, भला फिर बेमतलब हमें क्यों फांसा?

वहू की यह बातें सुनकर उसकी सास ने अपने पति से साफ़ २ कह दिया कि यह तो सारे बीज इस बहू के ही बोये हुए हैं। इस ही को बैठे बिठाये नचनची उठी थी और सारे में कहती फिर गई थी, कि गुमानीलाल तो दुराचारी है इस ही कारण मैंने दुलारी की सगाई उससे नहीं होने दी है।

रतनलाल-(राधेलाल का बाप) दुलारी कौन?

स्त्री-कोई रामप्रसाद है इसका ताऊ, कुन्बे में बहुत दूर

पार, दुलारी उसकी लड़की है जिसकी सगाई गुमानीलाल से होती थी। बस बीच में यह टमक पड़ी और उसको बदमाश, रंडीबाज़ और ख़बर नहीं क्या २ बताकर सगाई न होने दी।

रतनलाल-हो हो ऐसा ढेठ इस बहू का जो ऐसे बड़े इज्ज़तदार में भी ऐब निकाल दिये। इतनी बेशर्मी, ऐसी निर्लज्जता हाः भले घरों की बहू बेटियों की यह बातें, (सिर में दुहत्थड़ मारकर) फूट गई हमारी क़िस्मत तो जो ऐसी बहू आई, भला पूछो तो ज़रा इससे, कौनसा ऐसा साधू सन्त वर ढूंढा है इसने अपनी बहन के वास्ते। गुमानीलाल जैसा लायक़ वर तो इसकी बहन को सात जनम में भी नहीं मिलेगा, ऐसा नेक तो आदमी ही होना मुश्किल है। आज दिन जो इज्ज़त गुमानीलाल की है वह किसको नसीब होसकती है, पुन्यवान जीव है, भगवान की सब तरह दया है, अच्छे २ धुजाधारी सुबह उठकर प्रणाम करने आते हैं और पैर चूमकर जाते हैं।

स्त्री-यो तो है ही, वह तो राजा आदमी है, और वह बेचारा तो धर्म कर्म में भी सब कुछ लगाता है। देखलो कैसा भारी मंदिर बनवाया है, सदाव्रत भी लगा रक्खा है जहां हज़ारों कंगला रोटी खाता है। अब सुना है मंदिर की प्रतिष्ठा भी करावेगा, उसमें भी लाखों ही लगावेगा। यह ही हुवा करता है मर्दों का धरम करम तो, और क्या मर्दों से कहीं शील पल सक्ता है, यह तो औरतों ही के वास्ते फ़रमाया है।

रतनलाल-राधे की बहू अब मर्दों को ही शीलवान बनावेगी। उनको तो लेंहगा पहनाकर घर में बिठावेगी और उनकी पगड़ी स्त्रियों के सिर पर धरकर बाहर लेजावेगी।

स्त्री-आज कल की बहू बेटियों की ज़बान अपने वस में थोड़ा ही होती है, यह, तो जो मन में आया बकने लग जाती है और फिर पीछे पछताती हैं। अब तो वह भी आठ आठ आंसू रो रही है और अपने किये को पछता रही है। भगवान हमारे लड़के को बचादें इस आफत से, हमतो इतना चाहते है और हमें क्या मतलब है, कोई भला होगा तो अपने वास्ते और बुरा होगा तो अपने वास्ते।

रतनलाल-उसका तो कुछ फ़िकर नहीं है, जो क़िस्मत में होगा हो रहैगा, पर इसने तो हमें भले मानसो में मुंह दिखाने जोग नही रक्खा, और किसी के बुरा कहने से क्या ऐसो की ब्याह सगाई रुक सक्ती है। वह चाहैं तो दिन के दिन सौ ब्याह करासक्ते हैं।

स्त्री-ब्याह की तो यूं लो कि हमारे यहां बिलासपुर में वह है नही, हीरालाल हीरालाल जो सदा रंडी के यहां पड़ा रहता है, वही खाता है, वहीं पीता है, कोई कहै वह मुसलमानी है, कोई कहै भंगन है, कोई कहै चमारी है। घर की औरत बेचारी अपने बाप के यहां पड़ी रहती थी जो पार साल ही तो मरी है, पर यह देख लो कि उस औरत के मरते ही बीसयों ही जगह के लोग सगाई करने को टूक पड़े थे। कई ने तो मुझे आ आ कर कहा था कि हमारी ही लड़की की सगाई करादे। आखिर बीजापुर वाले कृपाराम की लड़की की सगाई रक्खी गई। अब देख लो कैसा बड़ा घर है कृपाराम का जिसने ऐसे के साथ सगाई करी, सो मर्दों में यह ऐब थोड़ा ही देखे जाते है। बेटी वालों को तो जैसे तैसे वर मिलते भी मुश्किल हो जाते हैं, पर

ख़ैर निकल गया इस बहू के मुंह से, अभी बच्ची ही तो है, वह क्या जाने इन बातों को।

इस प्रकार की बातें होकर रतनलाल बाहर आया और कमला के पिता माधोलाल को भी यह सब हाल सुनाया जो मुक़द्मे की बात सुनकर ही यहां आया था। यह बातें हो ही रही थीं कि रामप्रसाद भी इधर आ पहुंचा और मुक़द्मे की बात पूंछने लगा।

रतनलाल–मुक़द्मा बाबू गुमानीलाल की कचहरी में है जो एक देवता आदमी है, इस ही वास्ते कुछ ज्यादा फ़िकर की बात नहीं है।

रामप्रसाद–वह तो सचमुच ही देवता है।

माधौलाल–यहां तो मैं भी जिधर जाता हूं, उसही की तारीफ़ सुनता हूं और पछता रहा हूं कि क्यों मैंने तुमको दुलारी की सगाई उसके साथ करने से रोका। ऐसा वर हमारी लड़की को कहां मिल सकता है, पर अब तक क्या वह ख़ाली रहा होगा?

रामप्रसाद–नही सगाई तो उसने अभी तक कोई नहीं की है।

माधौलाल–तो भाई चूकोमत, जो लड़की के भाग से वह हमारी सगाई लेले तो बहुत ही अच्छी बात हो।

रतनलाल–ऐसा उत्तम वर तो चिराग़ लेकर ढूंढने से भी नहीं मिल सक्ता है। हमारी समझ में तो कोशिश कर देखो,

जो लड़की का नसीब ज़ोर करैगा तो मंजूर भी कर ही लेगा। कहो तो विघ लगाऊं इसकी, मेरा तो वेचारा बहुत ही लिहाज़ करता है।

रामप्रसाद्-अभी मै कुछ नही कह सक्ता हूं इस मामले में।

माधौलाल-वेशक जल्दी करना तो ठीक नहीं होता है, पर जो उसने कहीं की सगाई लेली तो फिर कुछ भी नहो सकेगा।

रामप्रसाद्-बात यह है कि अमीर के साथ सगाई करने में लोग बिन कारण भी कलंक लगाने लग जाया करते हैं।

माधोलाल--ऐसी तैसी उन सालों की, हलक़ में से जीभ निकाल डालूं जो कोई सांस भी निकाले। भाई साहव जहां चिहॅट होती है वहीं मक्खी वैठती है। जब हम पाक साफ़ है तो फिर हम को कौन दोष लगा सक्ता है।

रामप्रसाद्-अच्छा जव तुम्हारी यह ही मर्ज़ी है तो मुझे ही क्या उज़र हो सक्ता है, पर एक वार घर चलकर सब से सलाह करलो पीछे जो चाहे सो करो।

इस तरह इन मे यह बात हो ही रही थीं कि कमलावती ने रामप्रसाद को अन्दर बुला भेजा और राज़ी खुशी पूछने के बाद दुलारी की सगाई का ज़िकर छेड़ा।

कमला--ताऊजी दुलारी की सगाई तो जो इस गुमानीलाल से होजाय तो बहुत अच्छा हो जो यहां पीपल मुहल्ले म रहता है, पर नहीं मालूम वह हमारी सगाई क़बूल भी करै कि नहीं।

रामप्रसाद्–बेटी तेरी ताई तो तेरा ही नाम लेकर उसमें सौ ऐब निकालती है ।

कमला–उस वक्त मैं एक दूसरे आदमी को समझ गई थीं जो सीतला मुहल्ले में रहता है, वह तो बहुत ही बुरा आदमी है। पर यह पीपल मुहल्ले वाला तो बेचारा बहुत ही नेक है । राज करैगी हमारी दुलारी जो उन्होंने सगाई मंजूर करली तो, वह तो सच पूछो साधू ही है, चाल चलन भी ऐसा अच्छा है जैसे सोने में सुहागा, ऐसा वर तो ताऊजी ढूंढा भी नहीं मिलेगा। जो तुम कहो तो मैंतो आज ही उसकी बूआ के पास जाकर सारी बात ठीक कर आऊं ।

रामप्रसाद्–तेरी ताई से पूछे बिन मैं अभी कुछ नहीं कह सकता हूं ।

कमला–पर जो उन्होने कहीं की सगाई लेली तो हम देखते ही रहजावेंगे ।

इस प्रकार की बातें कर करा कर जब रामप्रसाद डेरे पर आया तो देखा कि उसके दोनों लड़के अंग्रेज़ बच्चे बने बैठे हैं । आगे उनके बढ़िया २ खिलौने रक्खे हैं, वह यह सब मामला देखकर हैरान होही रहा था कि चट न्यादरसिंह बोल उठा कि देखो मै कहता नहीं था, कि गुमानीलाल को बच्चों के साथ कैसा प्रेम है । वह जिस किसी के भी बच्चे को साथ ले जाता है ख़ाली नहीं आने देता है । भाई सच तो यह है कि अमीर तो बहुतेरे देखे पर इस जैसा नेक नहीं देखा । अमीर लोग रंडियां रखते हैं, नाच मुजरा कराते हैं, शराब पीने लग जाते हैं और भी सौ तरह की शैतानी मचाते हैं, पर इस के

यहां क्या मजाल है जो कोई नाम भी लेदे इन बातों का, यह तो सच मानो साधु है किसी जन्म का।

रामप्रसाद–तो मुन्शी जी मुझसे ऐसा क्या वास्ता था जो बच्चों को इतनी चीज़ें ख़रीद दी ?

न्यादरसिंह–तुम से क्या वास्ता होता, उस को बच्चो के साथ प्रेम है इस वास्ते लेदीं, और यह तो उसके घर आये थे वह तो रस्ते चलतो को लेदेता है सब कुछ।

घर आकर रामप्रसाद ने अपनी स्त्री को यह सब हाल सुनाया और गुमानीलाल का बहुत ही बड़ा जस गाया। बच्चों ने भी खुश हो होकर अपना सब सामान दिखाया। इन सब बातो से स्त्री के दिमाग़ ने भी चक्कर खाया, यहां तक कि अब वह उलटा रामप्रसाद को ही उलाहना देने लग गई कि जब तुमने अपनी आंखों देख लिया है कि वह देवता आदमी है तो तुम सगाई क्यों न कर आये, और फिर कमला के ससुर क्या कोई ग़ैर हैं जो खोटी सलाह देते, तुमने बहुत भूल करी जो उनका भी कहना नहीं माना।

४—खूंफांडा।

रामदुलारी अब छिप छिप कर अपने माता पिता की बातों को नहीं सुनती फिरती है और न इस बात की कुछ परवाह ही करती है कि मेरी सगाई की बाबत अब क्या हो रहा है। उसने तो निश्चय कर लिया है कि आजन्म कुंवारी रहूंगी

और स्त्रियों को पुरुषों के अत्याचार से बचाऊंगी, अब तो वह हर वक्त इस ही विचार में रहती है और पागल सी हो गई है। इन ही विचारों में मग्न होकर वह एक दिन छत पर घूम रही थी कि उसके कान में किसी स्त्री के चिल्लाने की आवाज़ आने लगी "अरे हायरे मार डाला रे बेदर्दी ने, हाय, हाय, हाय, अरे मेरी तो जान ही निकल जायगी रे, अरे कोई छुड़ाओ रे लोगो इस क़साई से"। इस आवाज़ के सुनते ही दुलारी छत ही छत दौड़ी गई और वह स्त्री एक पुरुष के हाथों पिटती हुई नज़र आई। गली मुहल्ले के लोग भी इस आवाज़ को सुनकर दौड़े आते थे। पर यह देखकर कि स्वयम पति ही अपनी स्त्री को पीट रहा है वापस लौट जाते थे। कोई कहता था कि औरत की कोई बद-माशी देखी होगी जिससे ऐसा बेदर्द होकर पीट रहा है। दूसरा कहता था नहीं औरत तो बहुत नेक है, यह तो मर्द ही झगड़ू जंगड़ू है, कमाता धमाता कुछ है नहीं, औरत बेचारी ने घर के ख़र्च के वास्ते छेड़ दिया होगा, जिससे चिढ़कर मारने लग गया होगा। तीसरा कहता कि नहीं जी ख़र्च के वास्ते वह बेचारी क्या कहती इस पाजी को, वह तो चक्की पीस-कर और तेरी मेरी टहल करके आप ही उसको खुलाती है साला भंग चरस के वास्ते उससे कोई ज़ेवर मांगता होगा और वह नही देती होगी तब ही पीट छेत रहा होगा॥

चौथा-ज़ेवर ही तो नहीं रहा है उस बेचारी के पास जिससे मार खा रही है।

इस प्रकार की बातें करते हुऐ यह लोग चले जाते थे और उस स्त्री के बचाने का कोई भी उपाय नहीं करते थे। परन्तु दुलारी से कब चुप रहा जासक्ता था, पागलसी तो वह हो ही

रही थी, धमसे कोठे पर से कूद कर उनके बीच में आपड़ी और उठकर ललकार कर बोली कि मै आपहुंची हूं इसकी रक्षा के वास्ते, खबरदार अब इसको कोई नही मार सक्ता है।

सर्जूपंडा–हटजा लड़की, हटजा बीचमेंसे, नही तो इसके साथ तेरा भी भुर्ता हो जावेगा, देखो आज सुवह से बिल्कुल भी नशा पानी नहीं हुवा है जिससे जानसी निकली जारही है। पर इस बेईमान की बच्ची को देखो कि चार आने के पैसे भी निकाल कर नहीं देती है। अच्छा तो कन्या तू ही दे दे चार आने के पैसे। तू तो साक्षात देवी ही है और मेरी जान बचाने के वास्ते ही आकाश से उतर कर आई है।

इतने हीमें वहां बहुत लोग इकट्ठे होगये जिनके द्वारा दुलारी ने दूध और हलदी मॅगाकर उस स्त्री को पिलाई।

पांडेजी–देवी, इन धर्म की मूर्तियों से मुझे भी एक ठनकता हुवा रुपया लेदे जिस से आजका नशा पानी होजावे, और मेरी जान बचजावे। मै भी असली शुक्ल ब्राह्मण हूं और देवता का इष्ट रखता हूं, जो चाहूं सो करा सक्ता हूं।

इतने में नगर भर में धूम मच गई कि सर्जू पांडे के घर आकाश से उतर कर देवी आई है। इस खबर के सुनते ही सारा शहर ढूक पड़ा और वहां मेलासा जुड़गया।

दुलारी–लोगो यह सती सतवन्ती पांडे की स्त्री अपने इस दुष्ट पति के हाथ से कैसे २ त्रास भोग रही है और तुम लोगों के कान पर जूं तक नहीं रेंगती है, तुम लोग कुछ भी उपाय इसकी रक्षा का नहीं करते हो और इसको बिल्कुल ही एक मामूली सी बात समझते हो।

कई पुरुष-देवी, इसमें हम क्या उपाय कर सक्ते हैं, पति पत्नी के वीच मे हम क्या दख़ल देसक्ते हैं ?

दुलारी-तो क्या पति को यह अधिकार है कि वह क़सूर विन क़सूर इस प्रकार वेदर्दी के साथ अपनी स्त्री को मार सके और कोई भी उसको किसी प्रकार की रोक टोक न कर सके ?

एक-अधिकार तो कुछ भी नहीं है। हमारे ही गांव की वात है, एक आदमी ने इस ही तरह अपनी औरत को वेदर्दी से पीटा था, थानेदार ने उसका चालान कर दिया। हाकिम के सामने औरत ने भी वहुतेरा कहा कि यह मेरा पति है जिसको मारने का अधिकार है और अव तो मुझे मेरे ही भारी दोष पर मारा है जिससे वह तो किसी तरह भी क़सूरवार नहीं है। परन्तु हाकिम ने उसकी एक भी न सुनी और उसके मालिक को वहुत कड़ी सज़ा करदी।

दूसरा-धन्य है स्त्री जाति को जो ऐसी मार खाती हैं, और फिर भी पति को सज़ा से वचाना चाहती हैं।

दुलारी-और लानत है उन पतियों पर जो स्त्रियो पर हाथ उठाते हैं और विशेष कर लानत है उन हृदय-शून्य पुरुषों पर जो अपनी आंखों स्त्रियों को पिटती देख कर भी रक्षा नहीं करते हैं, और चाहे क़सूर पीटने वाले ही का हो तब भी नहीं छुड़ाते हैं।

मर्द-पति-पत्नी के वीच में हम क्या दख़ल देसकते हैं।

दुलारी-किसी स्त्री की तरफ़ से कोई अनुचित कार्य होने पर तो तुम सारी ही स्त्री जाति को बुरा भला कहने लग जाते हो, परन्तु पुरुषों के क़सूर पर बिल्कुल ही अनाधिकारी हो जाते हो। यदि किसी की स्त्री दुराचारिणी हो जावे तो क्या तुम सब ही उस को धिक्कारने को उद्यत नहीं हो जाओगे और उस से घृणा नहीं करने लग जाओगे ? यहांतक कि उसका अपने घरों में आना जाना तक बन्द कर दोगे, परन्तु पुरुष के दुराचारी हो जाने पर तो तुम कुछ भी नहीं करते हो। इस सर्जू पांडे के ही दुराचार को क्या तुम सब नहीं जानते हो, परन्तु इससे तुम घृणा तो क्या करते यह तो बेखटके तुम्हारी स्त्रियों में जाता है। झाड़ा फूंकी करके और गंडे तावीज़ बनाकर उनसे अपनी पूरी पूरी पूजा कराता है और कोई भी कुछ नहीं कहता है।

एक-सर्जू पांडा तो शिवजी का भगत है, हर वक्त शिव शिव ही रटता है और दिन रात शिवाले में ही रहता है। वह दुराचारी कैसे हो सक्ता है।

दूसरा-क्यों गंठे के छिलके छिलके उधड़वाते हो, कौन है जो उसके कुकर्मों को नहीं जानता है चमारियों तक के साथ तो वह पकड़ा गया है, एक पैसे तक की चीज़ किसी की छोड़ता नहीं है, इस प्रकार चोरी और जारी इन दोनों ऐबों के होते हुए भी अगर वह दुराचारी नहीं है तब तो मानो कोई भी दुराचारी नहीं हो सक्ता है।

तीसरा-भाई साहब यह सब अनहोते के खेल है, जब आदमी के पल्ले कुछ नहीं होता है, तो नीयत बिचल हो ही जाती है रही दुराचार और व्यभिचार की बात, सो जो कोई

बिल्कुल पाक साफ़ हो वह मुझे बताओ । सच तो यह है कि ग़रीब की सब बात खुल जाती है और अमीर की छिपी रह जाती है ।

चौथा—वह तो हट्टा कट्टा जवान है, तब कमाता क्यों नहीं है जिससे नीयत विचल न करनी पड़े ।

पांचवां—अब तुम क्या यह चाहते हो कि ब्राह्मण का बेटा होकर भी वह टोकरी उठाने लगजावे वा घास खोदकर लावे ?

छटा—तो ब्राह्मण के बेटे को यह भी नहीं सोभता है कि दूसरों का माल तकता फिरे—इससे तो घास खोद कर बेचना लाख दर्जे अच्छा है ।

सातवां—कलजुग है भाई यह कलजुग है, इस में तो ब्राह्मणों और सर्जू पांडे जैसे शुक्ल ब्राह्मणों को भी टोकरी उठाना और घास खोदना बताया जावेगा । तुम्हारा क़सूर नहीं है इस में ठाकुर साहब, यह सब इस कलजुग का ही प्रभाव है ।

सर्जू पंडा—यह इतनी भीड़ खड़ी है, दिलवा दो कुछ नशे पानी को । देखते नहीं हो, जंभाई पर जंभाई आ रही है और जान सी निकली जा रही है ।

दुलारी—लोगो जिस प्रकार तुम स्त्री के वास्ते शील का होना ज़रूरी समझते हो, इस ही प्रकार मर्दों के वास्ते क्यों ज़रूरी नहीं समझते हो और क्यों अपना सुधार नहीं करते हो ?

कुछ देर बिल्कुल ही सन्नाटा रहता है और कोई कुछ नहीं बोलता है ।

एक-बोलो भाई बोलते क्यों नहीं हो, देवी पूंछ रही है तब जवाब क्यों नहीं देते हो ?

दूसरा-तुम ही आगे बढ़कर क्यों जवाब नहीं दे डालते हो।

दुलारी-मै जानती हूं, तुम कुछ जवाव नही दोगे। गिरते २ तुम्हारी आत्मा तो ऐसी पतित होगई है कि अब तुम स्वयम नहीं उठ सक्के हो, गहरे गढ्ढे में पड़ा रहना ही पसन्द करते हो, परन्तु अव तुम अधिक नहीं सोने पाओगे। कोड़े मार मार कर जगाये जाओगे। इस ही महान कारज के सिद्ध करने के वास्ते मेरा जन्म हुवा है और मैने प्रण कर लिया है कि मैं व्याह नहीं कराऊंगी, किन्तु जन्म भर कुंवारी रह कर स्त्री जाति को उठाऊंगी और उन ही के द्वारा पुरुषों को भी शील-वान बनाऊंगी।

याद रक्खो कि स्त्रियो में तुमसे कुछ कम साहस नहीं है। तुम तो दो पैसे के लालच से ही फ़ौज में भरती होते हो, अपना सिर कटाते हो और दूसरो का काटने लग जाते हो, परन्तु स्त्रियां सदा अपने धर्म की रक्षा के वास्ते ही जान देती रही हैं और अपना शील बचाती रही हैं। उस ही स्त्री जाति को मैं जगाऊंगी। उनका धर्म बताऊंगी। और शील की रक्षा करना सिखाऊंगी, याद रक्खो, अब ऐसी निर्लज्ज स्त्रियां नहीं रहैगी जो अपने पति के कुशीले होजाने पर भी उसकी संगति करती रहै और चूं तक न करने पावै। थोड़े ही दिनों में तुम देखोगे किस प्रकार वह अपने पतियों को सीधा करती हैं और उनको शीलवान बनाती हैं।

सरजू पांडा-तुम्हारी जय रहै, मेरा भी उपकार होजाय

और कुछ नशे पानी के वास्ते मिल जाय। यह सुनकर सब लोग हंस पड़े और इतने में रामप्रसाद भी वहां आपहुंचा और दुलारी को ज़बरदस्ती घर खींच ले गया।

५—ब्याह की फ़िकर।

घर पहुंच कर रामप्रसाद और उसकी स्त्री में दुलारी की इस दशा की बाबत यह ही बात ठहरी कि किसी देवी देवता या भूत प्रेत का असर होगया है वा किसी वैरी दुश्मन ने कुछ जादू मंतर करा दिया है, इस कारण किशनपुर की वणी में रहने वाले मोटे बाबाजी को या इस्लामनगर के लम्बेपीरजी को बुलाना चाहिये।

अगले दिन सुबह ही माधोलाल अपनी लड़की कमलावती और गुमानीलाल की एक दासी को साथ लेकर आपहुंचा, और आते ही यह सब रामप्रसाद के घर गये, दुलारी की मांने कमलावती से पूछा कि अभी तो तू गई थी ऐसी जल्दी कैसे आगई।

कमला—यहां घर में मेरे हाथों कुछ चीज़ रक्खी हुई थी, माँने बहुतेरा ही टटोली पर उसको न मिल सकी बस वह ही निकाल कर देने आई हूं, कल चली जाऊंगी।

दुलारी की मां—और यह तुम्हारे साथ दूसरी कौन है।

कमला—गुमानीलाल के यहां की दासी है, इसे रामगढ़ जाना है। बस यहां तक तो हमारी गाड़ी आती ही थी, उसही में बैठली, यहां से दूसरी गाड़ी किराये करा देंगे।

गुमानीलाल का नाम सुनकर दुलारी की माँ चौंक पड़ी और दासी को देख देख कर हैरान होने लगी, क्योंकि वह तो सिर से पैर तक सुंदर २ बहु मूल्य वस्त्राभूषण पहने हुये थी और किसी बड़े घर की स्त्री मालूम होती थी।

दुलारी की माँ-(दासी से) क्या अब भी तुम उनके यहां नौकर हो ?

दासी-नही जी अब तो हम उनके यहां नही हैं, जब से बहूजी का देहान्त होगया है अलग होगई हैं। दस दासियां थीं उनकी, दसो बेकार बैठी हैं।

मां-क्यों बेकार क्यों बैठीं हैं, किसी दूसरे के यहां नौकरी करलें।

दासी-मांजी न तो हमै ऐसी मालकन मिलैगी और न हम नौकरी करैंगी। सचमुच वह तो राजा की रानी ही थीं। तुम देखो मै जो गहने कपड़े पहने हूं वह सब उनही के दिये हुए है। जहां ज़रासी बात पर खुश हुईं और भरपूर इनाम देडाला, कोई दिन ऐसा खाली नही जाता था जो किसी न किसी को इनाम न मिलजाता हो। बाबूजी की भी यह ही ताकीद रहती थी कि अपनी बहूजी को राज़ी रक्खो और जो चाहो सो लो। सच तो यह है कि रामने अच्छी जोड़ी मिलाई थी हंस हंसनी की। वह उसको देखकर जीता था और वह उसको। अब नहीं मालूम बेचारे को कैसी मिले और कैसी निभै।

इतनी बात सुनकर दुलारी की मां ने अन्दर ही अन्दर सांस खैची और कमलावती ने दासी को इशारा किया जिससे

वह तुरन्त ही उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई चली गई कि मै तो जाती हूं और गाड़ी का इन्तज़ाम करार्ती हूं। पोछे कमला ने अपनी ताई से कहा कि मुझ से बड़ी भूल हो गई जो दुलारी की सगाई न होने दी। उस वक्त मै कोई दूसरा ही आदमी समझ गई, जो मै जानूं कि यह पीपल मुहल्ले वाला गुमानी लाल है तो इसके साथ सगाई करने को तो मै आप ही ज़ोर देती, ऐसा वर तो चिराग़ लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलता है।

दुलारी की मॉ-बेटी यह सब क़िस्मत के चक्कर हैं, पर अब ही क्या बिगड़ा है, जो तुम्हारी सब की यह ही मर्ज़ी है तो सगाई करदो।

माधोलाल--हमारी सब की तो मर्ज़ी है ही, पर नही मालूम तुम लोग क्यो देरी कर रहे हो, जो उसने कोई दूसरी सगाई लेली तो फ़िर देखते ही रह जाओगे।

रामप्रसाद-हमारी तरफ़ से कुछ देरी नहीं है, जो सब कुन्बे वालो को मंजूर हो तो चाहे आज ही सगाई करदो।

यह सुनकर माधोलाल उठकर चल दिया और सब कुटुम्ब वालो को रज़ामन्द करके साथ ले आया। इस प्रकार दुलारी की सगाई गुमानीलाल से होगई और एक महीने पीछे का विवाह निश्चय होगया।

रामप्रसाद-(अपनी स्त्री से) सगाई तो करदी और ब्याह भी ठहर गया पर इसका पूरा किस तरह पटैगा। मेरे पास तो एक कौड़ी भी नहीं है और न कही से कुछ कर्ज़ ही मिल सक्ताहै

स्त्री-मेरे पास ही क्या रहा है जो दे दूं, जो था वह सब लड़के के व्याह में निकाल कर दे ही दिया था और गहना भी सब बहू को ही डाल दिया था।

रामप्रसाद-तो फिर बहू से ही कुछ गहने ले।

स्त्री-नाजी, तुम जानते नहीं हो आज कल की बहू बेटियों को, वह थोडा ही दिवाल है एक छल्ला भी।

रामप्रसाद-अच्छा वह नहीं सुनती है तो लड़का तो सुनैगा, उसही से कहो।

स्त्री-हां कहूंगी तो ज़रूर, बिन कहे थोड़ा ही गुज़ारा होता है। पर आजकल के लड़के तो तुम जानो अपनी बहुओं के ही गुलाम होते हैं।

रामप्रसाद-तो क्या वह भी ऐसा नालायक़ होजावैगा जो ऐसे वक्त में भी काम नहीं आवेगा ?

स्त्री-नहीं वह बेचारा तो सब लायक़ है, पर आजकल की बहू बेटियां ही कुछ ऐसी होगई हैं कि पति को कुछ ख्याल में ही नहीं लाती हैं और ज़ेवर तो भला वह क्यों देने लगी है।

रामप्रसाद-तो फिर क्या करें मुझे तो क़र्ज़ भी मिलता नज़र नहीं आता है।

स्त्री-ज़रूरत में तो अपने ही काम आया करते हैं, जो ननॅद और फ़ुफ़स ही कुछ क़र्ज़ के तौर पर देदें तो क्या हम उनका रखलेंगे ?

रामप्रसाद-तो क्या मैं उनसे मांगने जाऊं ?

स्त्री-नहीं तुम क्यों जाओ, लड़के को भेजकर उनको ही बुलवालो, जब वह अपनी आंखों सब हाल देखेंगी तो आपही देंगीं, और अब व्याह के ही कितने दिन रहगये हैं। आख़िर उनको बुलाना तो है ही, दो दिन पहिले बुलालो, जिससे सब बातों में उनकी सलाह भी होती रहे।

रामप्रसाद-क़िस्मत जो करावेगी वह ही करना पड़ेगा, अब हम इस लायक़ होगये कि लड़कियों से क़र्ज़ लेते फिरें।

स्त्री-उन्हें बुला तो लो, या इस व्याह में उन्हें बुलाना भी नहीं है।

अगले दिन मुन्शी न्यादरसिंह आपहुंचे और कहने लगे कि बाबू गुमानीलाल के पांच गांव इधर पहाड़ की तरफ़ हैं, वहां घी बहुत होता है, यहां आठ छटांक विकता है तो वह बारह छटांक मिलता है और हम तो १६ ही छटांक लेते हैं। इस वास्ते तुम घी यहां मत ख़रीदना, मैं वहां से भिजवा दूंगा और व्याह पीछे हिसाब करके सब दाम लेलूंगा।

रामप्रसाद-यह तो ठीक है, पर मुन्शी जी एक बात मैं भी हाथ जोड़ कर कहता हूं कि बेटी की तरफ़ का कोई अंश मेरी तरफ़ न आवे, मैं हूं तो ग़रीब आदमी पर ऐसी बातों का बहुत ख़याल रखता हूं।

न्यादरसिंह-हरे हरे. यह क्या फ़रमाया आपने, हम क्या बेटा बेटी वाले नहीं हैं! हम भी तो कुछ थोड़ा बहुत धर्म कर्म

रखते हैं। हमें तो खुद ही इस बात का बहुत बड़ा खयाल है। इसकी तो आप बिलकुल भी फ़िकर न करें।

इससे अगले दिन एक आदमी गुमानीलाल के गुमाश्ते कुंवरसेन की चिट्ठी लेकर आया जिसमे लिखा था कि आप के नगर से ७ मील के फ़ासले पर रामगढ़ में जो पनचक्की है उसका ठेकेदार अपना ही आदमी है। आप को आटा मैदा जितना दर्कार हो वहां से ही मंगावें, वह सब रुपया हमारा ही बरतता है, इस वास्ते भाव भी सस्ता ही कट जावेगा और रुपया भी जब चाहे दिया जावेगा। खांड़ के वास्ते भी हम रामनगर अपने आड़ती को चिट्ठी लिखने वाले है, बहुत ही सस्ता परता पड़ेगा। आपको जितनी दर्कार हो लिख भेजें सब इकट्ठी आजावेगी। दाम भी दीवाली पर हिसाब होने पर ही भुगताये जावेंगे और फिर आपसे लेलिये जावेंगे।

फिर दो दिन पीछे एक और आदमी आया और कहा कि मुनीमजी ब्याह के वास्ते कपड़ा लेने दिसावर को जाने वाले है आपको भी बुलाया है जिससे इकट्ठा ही ले आवें। रुपया अभी साथ ले जाने की ज़रूरत नहीं है, सालभर में जब दिसावर का हिसाब होगा दे दिया जावेगा। इस प्रकार रामप्रसाद मुनीमजी के साथ दिसावर को गया, जहां बाबू गुमानीलाल के वास्ते भी बहुत सामान खरीदा गया और बहुत कुछ कपड़ा लत्ता गोटा ठप्पा सोना चांदी आदि रामप्रसाद को भी ले दिया गया।

६--नया गुल खिला ।

पाठक, आओ इस बीच में गुमानीलाल की भी ख़बर ले आवें। वह देखो वहां तो एक आदमी गुमानीलाल से एकान्त में कुछ बातें कर रहा है।

उत्तमचन्द-बस एक बार मेरी लड़की को आंख भर कर देखलो और जो साक्षात ही स्वर्ग की परी हो तो दस थैली देकर ब्याह लो।

गुमानीलाल-मगर मै तो सगाई लेचुका हूं।

उत्तमचन्द-मुझे ख़बर है आपने रामप्रसाद की लड़की की सगाई ली है, पर मेरी लड़की तो उससे पैर भी न धुलवावे। चांद की चांदनी पड़ने से तो उसका बदन मैला होता है और दस हज़ार की तो उसकी एक आंख है।

अच्छा फिर मिलूंगा मैं आपसे, यह कह कर गुमानीलाल तो कचहरी चला गया और पीछे उनका नौकर बारू उत्तमचन्द से बोला।

बारू-कहो लाला तुम्हारा दस हज़ार का सौदा बिक गया कि नहीं।

उत्तमचन्द-चुप रह कमीन ज़ात, तू भी हम से ठट्ठा करता है।

बारू-कमीन ज़ात तो बेशक हूं, पर तुम्हारे जैसे ऊंची ज़ात वालों की तरह अपनी छोकरियां नहीं बेचता फिरता हूं,

और साथ ही इसके यह भी सुनाये देता हूं कि जब तक मेरे पैर न पूज लोगे तब तक तुम्हारी लड़की इस घर तो बिक नही सकेगी। बाजार की रंडियां तक तो गुमानीलाल की सेज पर पैर रख नही सक्ती है जब तक यहां चढ़ावा नही चढ़ालेतीं हैं फिर तुम्हारी तो हक़ीक़त ही क्या है।

उत्तमचन्द्-तो सर्दार साहब, चौधरी साहब, इसमें नाराज़ होने की कौन बात है, हमको क्या तुमसे कुछ इनकार है ?

बारू-मैं तो साफ़ कहे देता हूं कि जितने पर सौदा हो उस की तिहाई ले लूंगा तब बात चलने दूंगा।

उत्तमचन्द्-तुम काम क्या करते हो इनके यहां ?

बारू-मै उनकी टांगें दबाता हूं, पंखा हिलाता हूं, रंडियाँ बुलाकर लाता हूं और घर घिरस्तनो को भी मिला देता हूं और बाबूजी की बदौलत मूछों पर ताव देकर मज़े उड़ाता हूं।

उत्तमचन्द्-अच्छा तो तब जानें जो रामप्रसाद की लड़की की सगाई तो ऊक चूक होजाय और हमारी चन्द्रमुखी ब्याही जाय।

बारू-ऐसा भी हो सक्ता है पर तब तो हम आधा ही बटवालेंगे।

उत्तमचन्द्-दस्तूरी का तो दसवां हिस्सा हुवा करता है सो ही हमने बड़ी लड़की के मामले में दिया था, जो सुहागपुर ब्याही गई थी।

वारू-अच्छा तो तुम वह उत्तमचन्द हो जिसने बुड्ढे वेणी-प्रसाद को एक रंडी की छोकरी दिखाकर मोह लिया था और फिर व्याह दी थी अपनी काली कलूटी।

उत्तमचन्द-भला कहीं ऐसा भी हो सक्ता है, जैसा तुम कहते हो, परमेश्वर से डर कर बात करो।

वारू-अच्छा तो वह नसीवन रंडी तो मौजूद है जिसको तुमने साड़ी पहना कर वेणी प्रसाद को दिखाई थी, कहो तो और भी कुछ वतादूं।

उत्तमचन्द-तुम तो फिर सव बात जानते ही हो।

वारू-तो अव के भी वैसा ही ढांचा वाधा है क्या, हमसे छिपाने से काम नही चलेगा।

उत्तमचन्द-नहीं अवके वह बात नहीं है, यह छोटी लड़की तो आप ही वहुत सुंदर है, रात में उजाला कर देने वाली पटबीजना है यह तो। जो किसी अमीर के मन चढ़ गई तो बीस हज़ार भी तो गिन देगा इसे देखते ही। पाठक इस बात के जानने के बड़े उत्सुक होगे कि यह उत्तमचन्द कौन है जो ऊंची ज़ात का हो कर भी ऐसी नीचता की बाते करता है। बात यह है कि इसका पिता महावीर प्रसाद बहुत ही उत्तम और श्रेष्ठ पुरुष था। पांच सौ रुपया महीने की आमदनी थी, और यह ही एक अकलौता बेटा था। दोनों मियां वीबी इस लाड़ले उत्तमचन्द को देख देख कर जीते थे और चाहे कुछ हो इसका मन मैला नहीं होने देते थे जिससे यह बहुत ही उद्धत और सिर चढ़ा होगया था।

फिर जब ज़रा बड़ा हुवा तो दुराचारी लड़कों की संगति में रहकर बिल्कुल ही निर्लज्ज और भ्रष्ट होगया। ११ बरस की उमर में इसका ब्याह होगया और १३ वें बरस गौना भी कर दिया। ब्याह इसका बहुत ही उच्च घराने मे हुआ था, स्त्री भी इसकी बहुत ही नेक और सुशीला थी, परन्तु पूज्य पति देव उस वेचारी को ऐसे मिले थे जो भगवान करै कभी किसी को भी न मिले। अव्वल तो यह महा पुरुष घरमे ही कम आते थे, रात दिन महा नीच दुराचारी लड़कों के साथ ही फिरते रहा करते थे, और जो कभी घर में आते भी थे तो बकते झकते और छीनते झपटते ही आते थे। देवी स्वरूपा अपनी स्त्री को अश्लील गालियां सुनाना तो उसकी बहुत ही मामूली बात थी। वह तो अपनी माँ को भी गंदी गंदी गालियाँ सुनाता था और डरा धमका कर जो चाहे लेजाता था। कुछ दिन पीछे इसके पिता का देहान्त होगया। फिर क्या था, अबतो उसके घर पर ही चंडाल चौकड़ी रहने लगी और खुल्लम खुल्ला शैतानी होनी शुरू होगई, उत्तमचन्द का रुपया पानी की तरह बहता था और लुच्चों गुंडों का मज़ा उड़ता था। होते होते थोड़े ही दिनों में कुल रुपया पैसा ख़र्च होगया और फिर यहां तक नौबत आगई कि क़र्ज़ मिलना भी बंद होगया, तब दस दस रुपये लेकर सौ सौ रुपये का कागज़ लिखना शुरू किया, और जब यह भी न चला तो घरका अस्बाव बेचने लगा। ग़रज़ थोड़े ही दिनों में रहने का मकान भी न रहा और बिल्कुल ही भूखा कंगाल होगया। उसका दुराचार देखते २ उसकी सुशाला स्त्री भी अब अपने चरित्र से गिर गई थी और वैसी ही निर्लज्ज होती जाती थी जैसा उसका पति था। उत्तमचन्द को कोई हुनर तो आता ही नही था जिसके द्वारा वह इस समय दो पैसे

कमा सक्ता और ऊंची जाति का आदमी होने के कारण वह मिहनत मज़दूरी भी नही कर सक्ता था जिससे अपना पेट पालता। लाचार वह तो अब अमीरों ही के यहां जा पड़ा, उनके नाच मुजरे के वास्ते रंडियां आदि बुलाकर और अन्य भी इस ही प्रकार की सेवा करके कुछ पैसे झटक लाता और अपने घर का ख़र्च चलाता।

इसही बीच में मथुरादास नामी साठ बरस के बुड्ढे धनवान को स्त्री के मरजाने के कारण व्याह कराने की ज़रूरत हुई, परन्तु बहुत कुछ कोशिश करने पर भी कोई कन्या न मिल सकी तब उत्तमचन्द इस बात के लिये मुक़र्रिर किया गया कि वह दूर दूर फिर कर कही से उसका जोग मिलादे। इस कार्य के लिये वह देश विदेश घूमा और सबही बेटी बेचने वालों से मिला, आख़िर एक जगह आठ हज़ार पर सौदा होगया और पांचसौ रुपया उत्तमचन्द को मिल गया, जो फिर दोही महीने में लुटा दिया गया, परन्तु इस भ्रमण में उसे बेटी बेचने वालों के व्यौपार का खूब अनुभव होगया था, यहां तक कि, उसको यह भी मालूम होगया था कि बहुत लोग ग्राम ग्राम फिर कर सब ही जाति की छोटी २ लड़कियों को चुरा लाते है और उनको ऊंची जाति के ऐसे लोगों के हाथ बेच देते है जो बेटी बेचने का ही काम करते है। वह इनको अपनी बेटी प्रसिद्ध करके पाल लेते है और जवान होने पर ऊंची जाति के बुड्ढों से व्याह कर खूब ही रक़म उठाते है। इसही प्रकार यह लोग अनेक लड़कियां अकाल पीड़ित कंगलो से, भंगि, चमार और डोम आदि अछूत जातियो से, व्यभिचारिणी स्त्रियों से और अन्य भी अनेक रीति से दस पांच रुपये में ख़रीद लेते है और अपनी बेटी बनाकर ऊंची जाति वालो को व्याह देते है।

इस व्यापार को सहज समझ कर अब उत्तमचन्द भी इस ही में लग गया और ऊंची जाति के बुड्ढों के घर बसाने लगा। उसकी स्त्री भी उसको उसके इस नवीन व्यापार में खूब सहायता देती थी और इससे भी ज़्यादा नीच और निर्लज्ज बन गई थी। इसकी बड़ी लड़की भी जो वेणीप्रसाद से व्याही गई थी वास्तव में इसकी लड़की नहीं थी, किन्तु इसही प्रकार से आई हुई थी, परन्तु यह दूसरी लड़की जिसको वह गुमानी लाल से व्याहना चाहता है वास्तव में उसही की बेटी है, परन्तु ऐसे घर में पैदा होने और पलने से वह भी महा नीच और निर्लज्ज ही होगई है।

पाठक कब तक आप इस महानीच उत्तमचन्द की कहानी सुनते रहेंगे? अन्त की बात यह है कि बारू नौकर ने उसकी लड़की को खूब अच्छी तरह परख लिया और फिर गुमानीलाल को बहका फुसलाकर इस बात पर राज़ी कर दिया कि रामप्रसाद की लड़की के साथ व्याह होने के पीछे इस लड़की को भी व्याह लिया जावे, और दस हज़ार रुपया उत्तमचन्द को दिया जावे जिसमें से तीन हज़ार रुपया दल्लाली का बारू ने अपना पक्का कर लिया।

७—देवी का मेला।

अब दुलारी की सुनिये, वह तो एकान्त में बैठी मन ही मन स्त्री सुधार की तदबीरें सोचती रहती थी और किसी से भी नहीं बोलती थी। माता पिता को उसकी इस दशा का बड़ा

सोच था परन्तु ब्याह की तय्यारियों में लगे रहने से कुछ भी उपाय नहीं कर सके थे। इन ही दिनों देवी का मेला निकट आगया, जो यहां से २० मील की दूरी पर भरता था। काशीपुर से भी अनेक स्त्रियां मेले में जाने वाली थी, जिन्होंने दुलारी की माँ को भी समझाया कि दुलारी जो अपने आपको देवी बताती है, ऐसा न हो उस पर देवी ही का असर हो। इस वास्ते अब तू इसको मेले में ले चल और देवी के चरणो में डालकर प्रार्थना कर कि मेरी बच्ची को छोड़दे, आशा है कि देवी इसको बख़्श देगी और जो कोई क़सूर हुआ होगा तो बता देगी, और जो किसी भूत प्रेत का असर हुवा तो उसको भी हटा देगी। स्त्रियों की यह सलाह दुलारी की माँ को पसन्द आई और वह भी बाल बच्चों और पुरोहतानी समेत छकड़े में बैठ कर मेले में चल दी। रास्ते में अन्य भी अनेक छकड़े मिलते गये जिससे छकड़ों का एक तांतासा बँध गया।

छकड़ों के हांकने वाले बैलों को अश्लील गालियां दे दे कर ही हांकते थे जो दुलारी को किसी प्रकार भी सहन नहीं होता था। उसने अपने बहलवान को कई बार टोका, रोका और समझाया, परन्तु उसको तो कुछ ऐसा अभ्यास हो रहा था कि ख़याल रखने पर भी उसके मुंह से कोई न कोई अश्लील शब्द निकल ही जाता था, जिससे तंग आकर आखिर को दुलारी गाड़ी से नीचे उतर पड़ी और साथ की स्त्रियों को ललकार कहने लगी कि ऐसे महा गंदे अश्लील शब्दों के सुनने मे क्या तुम को लज्जा नहीं आती है जो चुप चाप सुनती चली आरही हो और कुछ भी रोक टोक नहीं करा चाहती हो।

मां—बेटी यह गाड़ी वान तो सब ही इस तरह गालियां दे दे कर ही बैलों को हांका करते है।

दुलारी-तो क्या स्त्रियों को भी इनके यह अश्लील शब्द सुनते रहना चाहिये।

मां-नही सुनते तो नही रहना चाहिये, पर क्या करै दुनिया भर से किस तरह लड़ाई बांधें, यह पुरुष तो सब ही ऐसे हो रहे है जो हर वक्त गंदे ही बोल बोलते रहते है और कुछ भी खयाल नही करते है।

दुलारी-उनसे नही लड़ा जासक्ता है तो उनकी संगति से तो अपने आप को बचाया जा सक्ता है। मर्द ऐसे पतित होगये है तो स्त्रियें तो अभी ऐसी पतित नही हुई है। वह तो अभी तक शील को ही अपना सर्वस्व जानती है और लज्जा को ही अपना धर्म कर्म मानती है। उनको तो अपनी लाज शरम थामने के वास्ते अवश्य ही इन अश्लील बोलने वाले पुरुषों से अलग हो जाना चाहिये। नहीं तो साफ २ यह ही कहदेना चाहिये कि हम भी मर्दों की तरह डूब गई हैं, अपनी लज्जा कज्जा सब खो बैठी है।

पुरोहतानी-सच तो कहती है लड़की, बहू बेटियों के सामने इस गाड़ीवान का इस तरह गंदी २ गालियां बकते चलना क्या कुछ अच्छा है। इसही को क्यों नहीं गाड़ती हो जो अपनी ज़ीभ क़ाबू में रक्खे।

दुलारी-स्त्रियों में आत्म सन्मान हो तो सब ही कुछ होजावे, परन्तु स्त्रियो ने तो अपने को ऐसी तुच्छ और हीन अति हीन वस्तु समझ लिया है मानो उनको तो अपनी लज्जा की रक्षा का भी अधिकार नहीं है, यदि स्त्रियां कुछ भी हिम्मत करें और अश्लील बोल बोलने वाले पुरुषों से दूर हटती रहै तो

पुरुष तो इतने ही में सीधे होजावें, और अश्लील बोलना भूलजावें।

मॉ–नही गाड़ी वाले की क्या मजाल है जो कुछ बोले, तू निश्चिन्त होकर गाड़ी मे बैठ। यह कहकर गाड़ी वान को धमकाया और दुलारी को गाड़ी में बिठाया।

आगे चलकर दुलारी ने देखा कि आस पास के गांव की कुछ चमारियां सड़क पर जा रही थीं, उन को यात्रियो में से कुछ आदमियो ने अश्लील वाक्यों द्वारा छेड़ा और चमारियों ने भी बदले में उनको खूब ही गंदी गंदी मां बहन की गालियां सुनाई जिस पर वह लोग हॅस हॅस कर उनको और भी अधिक २ छेड़ने लगे और अधिक २ गालियां सुनने लगे। यह देखकर दुलारी अपनी गाड़ी मे खड़ी होकर ज़ोर २ के साथ चिल्ला कर कहने लगगई कि बेशरम मर्दो अगर तुमको गाली सुनने में ही मज़ा आता है तो उसके लिये तुमको इन स्त्रियों को छेड़ने का क्या अधिकार हो सक्ता है।

मॉ–बेटी तुझे क्या पड़ी है जो रस्ते चलती चमारियों का झगड़ा अपने सिर ले और साथ के यात्रियों से लड़ाई बांधे, (अपने पति से) अजी तुम ही समझाओ इस लड़की को, नहीं तो यह तो कोई न कोई फ़िसाद खड़ा किये बिदून न रहैगी।

रामप्रसाद (जो गाड़ी के पीछे २ पैदल आ रहा था) यह किसी के समझाये समझती तो यहां ही लाने की क्या ज़रूरत थी।

दुलारी–यात्रा की स्त्रियो! देखो रस्ते चलती स्त्रियों को यह

नीच पुरुष छेड़ रहे हैं। क्या अपनी आंखों के सामने भी तुम स्त्री जाति पर यह ज़ुल्म देखती रहोगी और कुछ नही करोगी ?

एक मर्द-यह तो वहुत ही उद्धत लड़की है। क्या इसके साथ मे कोई भी इसको रोकने वाला नही है ?

दूसरा-लड़की तेरा इन चमारियों से क्या वास्ता है जो इतना झगड़ा वांध रही है ?

दुलारी-मर्दो यदि तुम में इस बात की ग़ैरत नहीं रही है कि तुम्हारी आंखो के सामने लोग पराई स्त्रियो को छेड़े और तुम कुछ भी न वोलो, यदि तुम लोग विल्कुल ही निलज्ज और नामर्द होगये हो तो क्या स्त्रियां भी स्त्री जाति की रक्षा न करे? ऐसा होने पर तो विल्कुल ही अंधेर होजायगा और कोई भी स्त्री सुरक्षित न रह सकेगी।

यह कह कर वह गाड़ी से उतर पड़ी और सवही गाड़ियों को रोकने लग गई, रामप्रसाद ने उसको वहुतेरा मना किया, पकड़ा और धमकाया परन्तु दुलारी ने एक न सुनी, गाड़ियां रुकजाने पर उसने स्त्रियों को ललकार कर कहना शुरू किया कि पुरुष तो प्रायः सव ही अपने शील को खो वैठे हैं और मनुष्यत्व से वहुत ही ज़्यादा नीचे गिर गये है, इस कारण वह तो इस प्रकार के ज़ुलमो को रोकने की बिल्कुल भी चेष्टा नही करैगे, परन्तु तुम तो अपनी जान देकर भी शील की रक्षा करने वाली हो, तुम तो चुप मत वैठो, साहस करके इन वेशर्मों को पकड़वाओ और ऐसा दंड दिलाओ, जिससे आगे को इन पुरुषों को ऐसा ढेठ ही न होने पावे और स्त्री जाति की पूरी पूरी रक्षा हो जावे।

स्त्रियां--हम किस तरह इनको दंड दिला सक्ती हैं।

दुलारी--तुम सब अपने २ पुरुषों को दबाओ और ज़िद करके बैठ जाओ कि जब तक इन चमारियों का न्याय नहीं होगा और अत्याचारियो को दंड नहीं मिलेगा तब तक हम अपने को भी सुरक्षित नहीं समझेंगी और आगे नहीं चलैंगी। देखें फिर किस तरह दंड नही मिलता है, और किस तरह इन मर्दों की सब उदंडता दूर नही होजाती है।

स्त्रियां--सब स्त्रियां थोड़े ही तुम्हारी यह बात मान सक्ती है, अभी देखलो, गज़ गज़ भर की जीभ निकाल कर कैसी २ बातें बना रही है।

दुलारी- इज्ज़तदार स्त्रियों को ऐसी स्त्रियों की रीस नहीं करनी चाहिये, बल्कि चाहे सारी ही स्त्रियां एक तरफ़ होजावें तो भी इज्ज़तदार स्त्रियों को तो अपनी और पराई सबही स्त्रियों की इज्ज़त बचाने की कोशिश से नहीं चूकना चाहिये।

स्त्रियो! तुमने अपना सब कुछ खोदिया है, यहां तक कि तुम बांदी गुलामों और ढोर डंगरों से भी नीचे गिर गई हो, परन्तु अभी तक तुम्हारा शील रत्न और लज्जा धर्म तुम्हारे पास बाक़ी है, तुमने अपनी जान तक गंवादी है परन्तु अपने इस अमूल्य रत्न को नहीं जाने दिया है, याद रक्खो कि यदि अपनी बेपरवाही से तुमने इसको भी खो दिया तब तो तुम साक्षात ही सूरी कुत्ती के समान हो जाओगी और अब से भी ज्यादा अपनी बेइज्ज़ती और अपमान कराओगी। तुम्हारी इन सब बातों की रक्षा तो तब ही हो सकती है जब तुम सब ही

स्त्रियों की रक्षा को ज़रूरी समझो और किसी भी स्त्री पर पुरुषो की ज़्यादती न होने दो।

दुलारी की इस बात का स्त्रियों पर बड़ाभारी असर पड़ा। सबने उसको धन्य २ कहा और अपने २ पुरुषों को दबाया कि यदि इतने मर्दों के होते हुवे भी लुच्चे गुंडे लोग रस्ते चलती स्त्रियो को छेड़ सक्ते हैं तब तो मानो जग प्रलय ही आगई है, और स्त्रियों के शील और लज्जा की कुछ भी रक्षा नहीं रही है।

एक मर्द-(जोश में आकर) लोगो, क्या यह डूब मरने की बात नहीं है जो हम ऊंची जाति का घमंड रखते हुए भी चमारियो को छेड़ें और उन से मां वहन की गंदी २ गालियां खाकर खुश होवें।

दूसरा-भाई साहब हम लोगो की तो कुछ आदत ही ऐसी विगड़ गई है कि विना अश्लील शब्दों के तो कोई बात ही ज़बान से नही निकलती है, यहांतक कि ऊंची जाति के बड़े २ इज्जतदार भी भंगी चमार और कुत्ता बिल्ली तक पर नाराज़ होते हुवे उनको साला सुसरा कहते हैं मां वहन और धी वेटी की महा गंदी ऐसी गालियां देते हैं मानो उनके बहनोई वा जमाई बनना चाहते हैं और ज़रा नहीं लजाते हैं।

तीसरा-भाई पुरुषों की क्या पूछते हो, यह तो ईंट पत्थर लाठी, जूता, रुपया पैसा, रोटी पानी, आदि जिस भी किसी चीज का ज़िकर करते है तो उसे ही साली सुसरी कहने लग जाते हैं और मां बहन की गालियां देकर ही किसी चीज़ का ज़िकर कर पाते हैं।

चौथा-तो क्या यह शरम की बात नहीं है और क्या इस

अपनी नीचता को दूर करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये ?

पांचवां-ज़रूर करनी चाहिये परन्तु सब से पहले हम तो यह पूछते हैं कि पुरुषो को पराई स्त्रियों के छेड़ने का अधिकार कैसे मिल गया है यदि ऐसा कोई अधिकार नहीं मिला है। तो जिन लोगो ने इन रस्ते चलती चमारियो को छेड़ा है उनको क्या दंड दिया गया है।

छटा—दंड देने का हम को ही क्या अधिकार है ?

पांचवां-और कुछ नही तो उनको अपने से अलहदा करके उनका बाइकाट करदेने का अधिकार तो किसी ने नही छीन लिया है।

इस प्रकार की बात होकर आखिर यह तै पाया कि अब का मामला तो क्षमा किया जावे और आगे को जो कोई इस प्रकार की बदमाशी करे उसका बाइकाट करदिया जावे।

८—डिप्टी साहब की स्त्री।

चलते २ यह लोग अमरपुर गांव में पहुंच गये जहां से मेला आठ मील रह गया था। यहां सब गाड़ियां ठहर गईं और सब लोग कुछ देर आराम करने को उतर पड़े। इसही बीच मे उस इलाके के डिप्टी साहब की स्त्री भी रथमें सवार वहां आ-पहुंची। साथ के सिपाही कुछ देर पीछे आये जिनपर वह बहुत तड़की भड़की। उन बेचारो ने बहुतेरा कहा कि हम तो भागे हुवे आरहे हैं, परन्तु रथ के साथ किसी प्रकार भी नही भाग

सकते हैं। इस ही वास्ते पीछे रहगये हैं। पर उसने उनकी एक न सुनी और बकती झकती ही रही, जिस पर लाचार वह लोग पीठ फेर कर बैठ गये और आपस में कहने लगे कि यह चुड़ैल तो यूंही बका करती है और डिप्टी साहब का भी नाक में दम रखती है।

डिप्टन के साथ उसके छोटे छोटे दो बच्चे भी थे। जो बहुत ही नट-खट थे। वे चाट के वास्ते पैसे मांगने लगे। डिप्टन ने उनको बहुतेरा ही बहकाना चाहा कि यहां चाट नहीं बिकती है, पर उन्होंने एक न सुनी, आप ही उसकी संदूकची में से दाम निकाल कर भाग गये, और दूर जाकर दिखाने लगे गये कि देखो हमने यह चवन्नी निकाली है और हमने यह अठन्नी उठाली है। डिप्टन उनपर बहुत ही भभकी, बहुत ही धमकाया डराया पर बच्चों पर इसका कुछ भी असर न हुवा। वह तो दूर खड़े हंसते ही रहे और दूबदू जवाब भी देते रहे।

डिप्टन-धरती में गाड़ दूंगी तुम्हें दोनों को जीतो को।

लड़का-तुझे ही नही गाड़ देंगे जीती को।

डिप्टन-चूल्हे में धर दूंगी जो किसी घमंड में फिरता हो।

लडका-तुझे ही नहीं धर देंगे चूल्हे में।

डिप्टन-क्योंरी कान्ता तू भी कहना नहीं मानेगी। तेरी तो हड्डी २ तोड़ कर धरदूंगी, हां तुझे तो कोई छुडाने को भी नहीं आवेगा। आ इधर नहीं तो गला घोट दूंगी तेरा तो।

कान्ता-अच्छा भाई को भी बुलाले तब आऊंगी।

डिप्टन-भाई की रीस नहीं किया करती हैं लड़कियां, आजा मेरी मुन्नी तू तो बड़ी अच्छी लड़की है। मां का कहना मानती है।

लड़का-ना, कान्ता इसके पास मत जाना, जावेगी तो मारेगी।

कान्ता-हम तो नहीं आते, तू नो मारेगी।

डिप्टन-(सिपाही से) अच्छा जा इन बच्चों को दो दो पैसे की चाट लेदे। खबर नही इन्हों ने कितने २ पैसे निकाल लिये हैं, देखना कही खो न दें, चौकसी रखना। खो दिये तो तेरे से लिये जांवगे।

सिपाही-मेरे हाथ में पैसे दिलादो तो मै ज़िम्मेदार हो सक्ता हूं।

डिप्टन-जा क्यों वकवाद मारता है, इन बच्चो को चाट लेदे। डिप्टी साहव के सामने तो तुम कभी चूं भी नही करते हो, पर मेरी सारी ही बातों को काटने खड़े हो जाते हो।

सिपाही-डिप्टी साहव ऐसी वात भी तो नही कहते हैं जो काटनी पड़े।

इस पर डिप्टन वहुत ही ज़्यादा बकी झकी जिसके लिखने की यहां ज़रूरत मालूम नहीं होती है। डिप्टन की बकवाद सुनकर मेले की अनेक स्त्रियां वहां आकर खड़ी होगई और डिप्टन भी उनके साथ बातों में लगकर घमंड के साथ कहने लग गई कि हमारे डिप्टी साहब को इतना इख़्तियार है कि चाहे

जिसको क़ैद करदे। बड़े २ भुजाधारी ज़मीदार और सेठ साहूकार भी उनके आगे हाथ बांधे खड़े रहते हैं। तहसीलदार और थानेदार तक उनका पानी भरते हैं, पर उनको घर गिरस्त की अकल रत्ती भर भी नही है, जो वह चाहते तो इन ही लोगो से लाखो रुपया कमा लेते, पर वह तो एक कौड़ी भी नही लेते हैं और दौरे तक में भी रसद के दाम अपने पास से देते है। वह तो मै अपनी तरफ़ से थानेदारो को कहला कर, जलाने के वास्ते लकड़ी, ढ़ंगरों के वास्ते घास और घी दूध मंगाती रहती हूं, नही तो वह तो इन चीज़ो को भी मोल से ही मंगाने को कहते हैं और मुझे झिड़कते ही रहते हैं, पर में कब सुनती हूं उनकी यह बातें। बाल बच्चो का घर ठहरा, इस में तो सत्तर चीज़ें इधर उधर से आती रहैं तब ही गुज़ारा चलता है। सो मै तो लोगों की डालियां भी लेकर रख लेती हूं और किसी न किसी चीज़ के वास्ते लोगों को कहला कर भी भेजती ही रहती हूं, न कहूं तो क्या करूं, वह तो अपने फूटे मुंह से वचों कभी किसी को किसी चीज़ के वास्ते कहने लगे है। वह तो उलटा मुझे ही झिड़कने लग जाते है।

स्त्रियां-हां जी मर्दों को घर के मामलों की क्या खबर, वह तो बाहर के ही मृग ठहरे ना।

डिप्टन-भला मै उनकी किस किस बात को मानूं, वह तो मुझे यहां देवी पर आने को भी मना करते थे, पर मुझे तो जात देनी थी तब मै कैसे रुक सकती थी। मुझे तो तुम जानो अपने बच्चे पालने हैं, इस वास्ते मै तो देवी की भी जात दूंगी और पीर पैग़म्बर भी मनाऊंगी।

स्त्रियां-हां जी बच्चे वाली को तो सबही को मनाना पड़ता

है, क्या जाने किसकी कृपा से यह बच्चे जीते बचते रहें।

डिप्टन–जीने बचने की तो यह लो कि अब तक मेरे सात बच्चे हो चुके हैं, जिन में से पांच तो राम को प्यारे हुवे। यह दो बच्चे रह गये हैं, इन सबकी बीमारी में भी यह ही झगड़ा रहता था, वह तो कहते थे कि हकीम डाक्टर का इलाज करावें और मैं कहती थी स्याने चट्टे को बुलावें। आख़िर आते थे हकीम डाक्टर भी। पर आओ देख जाओ, मै उनकी दवाई कब दे सकती थी, इधर आई और मैने खिडाई। कह दिया पिलादी, चल छुट्टी हुई। हां स्यानों की बताई दवा भी देती थी और उनकी झाड़ फूंक भी कराती थी। इस प्रकार मैने तो बच्चों के मामले में अब तक इनकी एक भी नहीं चलने दी है, रही जीने मरने की बात सो यह तो किसी के भी बस में नही है, उनके भाग में जीना होता तो जी जाते, ना जीना हुवा तो चल बसे इसमें मेरा क्या बस।

स्त्रियां–ख़ैर जी, भगवान करे यह दोनो ही जीते रहैं, यह ही सब कुछ हैं।

दूर खड़ी दुलारी भी डिप्टन की यह सब बातें सुन रही थी और मन ही मन दुखी हो रही थी कि देखो यह पुरुष स्त्रियों को दासी गुलाम बना कर घमंड के मारे अंग में तो फूले नहीं समाते हैं परन्तु यह नहीं समझते हैं कि डला पत्थर समझी जाने वाली महा अपमानित और दुर दुर पर सुनने वाली नीच कन्यायों ही को तो वह अपनी अर्द्धांगिनी बनाते हैं। अपने घरबार की सब वाग डोर उनके हाथो में सौंप कर उनही के द्वारा अपनी घिरस्ती चलाते हैं, और अपने सब ही कामों की साझेदार और सलाहकार बनाते हैं। तब उनकी

मूर्खता और नीचता तो उन्हें भी नीच ही बनावेगी और उनके सब कामो को बिगाड़ कर उनकी इज़्जत खाक में मिलावेगी। ऐसी दशा में पुरुषों की यह शेखी किस काम आरही है, इससे तो उनकी घिरस्ती ही खराब नही हो रही है बल्कि बाल बच्चों को भी जान पर बन आरही है। अपनी स्त्रियों की नीचता और मूर्खता के कारण पुरुष तो अपने बच्चो की बीमारी का भी उचित इलाज नही कर सक्ते हैं। अपनी आंखो के सामने ही उन्हे यमदूत के हाथों सौंप देते है और टकटक देखते रह जाते है। दासी गुलाम के समान जूते के नीचे रक्खी जाने वाली तुम्हारी स्त्रियो के द्वारा ही तो ऐ मर्दो तुम्हारे बच्चे पलते है, दासी गुलामों वाले ही उनके स्वभाव बनते है और महाउद्धत नटखट और निर्लज्ज ही वह उठते है। आश्चर्य है कि अपनी इस सारी मुसीबत को तो तुम रोते रहते हो, परन्तु स्त्रियो की दशा सुधारने की कुछ भी चेष्टा नहीं करते हो। उनको नीच से उच्च बनाने को, और बराबरी का दर्जा देने को बिल्कुल भी तय्यार नही होते हो, ऐसी तो बात भी सुनना नही चाहते हो। परन्तु याद रक्खो जब तक तुम अपने झूठे घमंड को नहीं तोड़ोगे, स्त्री पुरुष को बराबर नही समझोगे, बचपन से ही कन्याओ का लालनपालन भी लड़कों के समान नही करने लग जाओगे, उनको बुद्धिमान नही बनाओगे, सन्मान देकर उनको आत्म सन्मान नही सिखाओगे, उनके भाव उच्च नही बनाओगे तब तक तो इन तुम्हारी बांदी गुलाम स्त्रियो के द्वारा तुम्हारा घर मटियामेट ही होता रहैगा और तुम भी किसी लायक नहीं बन पाओगे।

दुलारी यह सोचही रही थी कि उसके कान में किसी पुरुष के द्वारा किसी स्त्री को गदी २ गालियां देकर धमकाये

जाने की आवाज़ आई, जिसको सुनकर वह तुरन्त ही उधर दौड़ी गई और देखा कि डिप्टन के साथ का एक सिपाही एक ग़रीब चमारी को धमका रहा है कि तू अपनी यह घास की गठरी डिप्टी साहब के घोड़े के वास्ते लेचल। चमारी बेचारी हाथ जोड़ २ कर और पैरों में पड़ पड़ कर यह कह रही है कि मेरा मालिक एक महीने से बीमार पड़ा है और एक फूटी कौड़ी भी नही कमा सका है, मै भी उसकी सेवा में लगी रहने से मिहनत को नहीं जासकी हूं और तीन दिन से तो बिल्कुल ही पेट मसोसकर बैठी हूं और इन बच्चो का भी पेट नहीं भरसकी हूं। आज मेले के कारण ही यह घास खोद कर लाई थी कि तुरन्त ही बिक जायगी और इन बच्चों के पेट में भी कुछ पड़ जायगा, सो राम के वास्ते मुझ पर दया करो और मेरी घास छोड़ दो।

चमारी तो इस प्रकार बिनती कर रही थी, और पास में हाड़ों के ढांचे के समान उसके दो बच्चे नंग धड़ंग खड़े रो रहे थे। उस सिपाही को उनपर ज़रा भी दया नही आती थी बल्कि वहतो चटाचट गालियां ही बकता जाता था, डंडा भी उठाता था और यह भी कहता जाता था कि चल घास तो डाल तुझे पैसे भी दिला देगे। दुलारी ने वहां पहुंचते ही सिपाही को डांट कर कहा कि तू क्यों इस ग़रीब औरत पर ज़बरदस्ती कर रहा है?

सिपाही–कौन है तू लड़की जो सर्कारी मामले में दखल देती है?

दुलारी–यह सरकारी मामला नहीं है, बल्कि तुम्हारी ही ज़बरदस्ती का मामला है। किसी भली औरत को इस तरह

गंदी २ गालियां देने का और ज़बरदस्ती करने का तुम को कोई इख्तियार नहीं हो सकता है, तुम मनुष्य नहीं हो किंतु हृदय शून्य पत्थर की मूर्ति वा फाड़ खाने वाले जंगल के भेड़िये हो जो इसके इस प्रकार गिड़गिड़ाने पर भी ज़बरदस्ती करने से बाज़ नहीं आते हो।

सिपाही-देखो लोगो, यह लड़की बेमतलब मुझसे झड़ंगे लेती है और सरकारी काम में दख़ल देती है। इस को समझा लो नहीं तो मैं बुरी तरह पेश आऊंगा।

इतने में वहां बहुत से स्त्री पुरुष इकट्ठे हो गये और दुलारी को समझाने लग गये कि तुझे क्या पड़ी है जो एक नीच चमारी के वास्ते ज़लील होती है और सरकारी झगड़ा मोल लेती है।

दुलारी-यह ग़रीब चमारी हर्गिज़ भी नीच नहीं होसकती है। यह तो महा पतिव्रता पूजने योग्य स्त्री है जो अपने पति के बीमार पड़जाने पर मज़दूरी करने भी नहीं गई है, भूखी प्यासी रहकर उस ही की टहल करती रही है। धन्य है ऐसी महान स्त्रियों को जो अपना धर्म निभाती हैं और स्त्री जाति का मुख उज्वल कर जाती हैं, इस से ज़्यादा सन्मान के योग्य और कौन हो सकता है, परन्तु पुरुषों ने तो आज कल उलटी ही चक्की चला रक्खी है, अर्थात् महा व्यभिचारिणी कुल कलंकनी वेश्याओं की तो क़दर करते है, उनके तो दर्शनों से ही अपने को धन्य धन्य मानने लग जाते हैं और इन पतिव्रता स्त्रियों को नीच समझकर घृणा की दृष्टि से देखते है। इन ही नीच समझी जाने वाली चमारियों में से यदि कोई अपने पतिव्रत धर्म को छोड़ कर वेश्या होजावे तो वह भी तुम लोगों की निगाह में उच्च बन जावे। उसका इतना भारी सन्मान होने लगजावे कि

फूंस की झोपड़ी की जगह तो उसको वढ़िया पक्का मकान रहने को मिल जावे, फटे चीथड़ों की जगह रेशम और ज़री के कपड़े प्राप्त होजावें और भूखों मरने वा गला सड़ा अनाज खाने के स्थान में छत्तर प्रकार के भोजन तय्यार होने लगजावें परन्तु उच्च जाति के पुरुषो इस नीच चमारी को तुम्हारा सन्मान प्राप्त करना मंजूर नहीं है। तुम उसको हज़ार वार नीच कहकर और घृणा की दृष्टि से देखकर वड़े हो लो परन्तु परम पिता परमेश्वर की निगाह में जितनी उच्च यह चमारी है उतने तुम नहीं होसकते हो। तुम्हारे नीच कहने से वह नीच नहीं होसकती है किंतु नीच वह ही हैं जिनकी गर्दन अपने पापों के कारण परमेश्वर के दर्वार में ऊपर को नहीं उठसक्ती है।

सब लोग-देवी, तू हम पर क्यों क्रोध करती है? हम तो सर्कारी मामला होने के कारण ही तुझे हटाते थे, नहीं तो इस चमारी को थोड़ा ही हम कुछ वुरी वताते थे।

दुलारी-पुरुषो! पुरुष होकर तुम ऐसे कायर मत वनो, जो अपना कर्तव्य विल्कुल ही छोड़ वैठो। याद रक्खो, जो कोई किसी ग़रीव कमज़ोर पर जुल्म होता देखकर चुप हो रहता है वह किसी तरह भी पुरुष कहलाने के योग्य नहीं होसक्ता है और अपनी इज़्ज़त भी नहीं वचा सक्ता है। यह ही कारण है कि गांव के नम्वरदार और ज़मींदार वेख़ता भी मामूली सिपाहियों से जूतियो पिटते है और शहरों के वड़े २ साहूकार और दूकानदार वेक़सूर ही छोटे मोटे चपरासियों से गालियां खाते है और चूं तक नही कर पाते है।

इतना कह कर दुलारी बहुत वड़े साहस के साथ उस

चमारी के सामने जा खड़ी हुई और ललकार कर बोली, देखती हूं कौन मेरे ज़िन्दा रहते इस पर ज़ुल्म कर सक्ता है और इसकी घास छीन सकता है, फिर उसने सब स्त्रियो को पुकार कर कहा कि ग़ैरतदार स्त्रियों, पुरुषो में तो इतनी हिम्मत नहीं है कि पतिव्रता स्त्री की इज़्ज़त बचा सकें और उन पर किसी प्रकार का ज़ुल्म न होने दें, इस कारण अब तो तुमही आगे आओ और स्त्री जाति की लाज निभाओ। दुलारी की यह पुकार सुनकर अनेक स्त्रियां इकट्ठी होगईं और सिपाही को धिक्कार कर कहने लग गईं कि क्या तुझे और कहीं घास नहीं मिलती है जो इस ग़रीब चमारी को ही सता रहा है। ऐसा अंधेर तो इस राज्य में हो नहीं सक्ता है, इस पर वह सिपाही वहां से टल गया और बेचारी की घास पांच आने में बिक गयी।

इतने में डिप्टी साहब भी आपहुचे, वह अच्छी तरह बैठने भी नहीं पाये थे कि उनकी स्त्री ने घास का झगड़ा छेड़ दिया और दुलारी और चमारी की बुराइयां कर करके बहुत ही भड़-काना शुरु किया, परन्तु जब उन्होंने अर्दली से पूंछा तो उसने साफ़ २ कह दिया कि मैने घास के वास्ते चार आने के पैसे बहूजी से मांगे थे परन्तु उन्होने पैसे न दिये और यहही कह दिया कि किसी घास वाली को पकड़ कर घास डलवालो और दो चार पैसे दिलवा दो। मै तो यह बात सुनकर चुप हो रहा, पर तहसील का सिपाही घास वाली को पकड़ कर लाने लग गया। इसपर एक लड़की ने उस को ज़बरदस्ती करने से मना किया और जब वह नहीं माना तब उस लड़की ने बहुत से लोग इकट्ठे करके उसकी घास बचा ली और पांच आने में बिकवा दी।

इतना सुनते ही डिप्टी साहब अपनी स्त्री पर बरस पड़े

और गधी, सूरी, सूवर की बच्ची, हरामज़ादी आदि खोटे खोटे बोल बोलकर धमकाने लग गये, कि तू हर रोज़ ही मेरी पगड़ी मे ख़ाक डलवाती है, मुझे ज़लील और ख्वार कराती है और अपनी नीचता से बाज़ नहीं आती है। यह ही तेरी बातें रही तो एक दिन तू मुझे नौकरी से भी मौकूफ़ करावेगी और हथ कड़ियां डलवा कर जेलख़ाने भिजवावेगी।

स्त्री—सच कहा करते हैं कि भलाई करते बुराई पल्ले बंधती है। मुझे क्या, मेरी तरफ से तुम चाहे सारा घर लुटाया करो मेरी जूती को ग़रज़ पड़ी जो आगे को मै किसी बात में भी दख़ल दूं। यह कहकर उसने तालियों का गुच्छा डिप्टी साहब की तरफ फेंक दिया और कहा कि बस संभालो अपनी जमा पूंजी, आगे को तुम ही ख़र्च किया करो और मुझे कुछ भी न कहा करो।

नित्य के अभ्यास के अनुसार इस प्रकार पति पत्नी में थोड़ी देर बक बक होकर दोनों ही चुप हो रहे और किसने किसको क्या कहा था इस को बिल्कुल ही भूल भुलय्यां करके फिर पहले की तरह घुल मिल गये।

१—मेले का दृश्य

शाम को सब गाड़ियां मेले में पहुंच गईं, सबने अपना २ ठिकाना करके रात को आराम किया, सुबह ही देवी के दर्शन किये फिर मेले में घूम फिर कर अनेक प्रकार की वस्तु खरीदी, दोपहर को खाना खाकर आराम किया। तीसरे पहर अनेक

डेरों पर किसी किसी स्त्री के सिर भूत प्रेत वा देवी देवता आने शुरू हो गये। वह अपने बाल बखेर कर सिर हिला हिला कर, उछल कूद दिखाकर,देह को तोड़ मरोड़ कर अनेक प्रकार की बेतुकी बाते कहती थी। उनके सब साथी हाथ जोड़ जोड़ कर उनके चारो तरफ़ बैठ जाते थे, और मेले के अन्य बहुत लोग उनका तमाशा देखने खड़े हो जाते थे, पागल सी होकर वह स्त्रियां अपने कपड़े भी फाड़ डालती थीं और नंगे होकर जो मुंह आया बकने लग जाती थीं। घर वालों को खूब ही गालियां सुनाती थी और उनका सत्यानाश कर डालने का डर भी दिखाती थी, बेचारे घर वाले बैठे बैठे कांप रहेथे और लज्जा के मारे पानी पानी हुए जाते थे, ऐसी बेशरमी के अखाड़े जगह जगह जुड़ रहे थे और मेले के लोग ख़ुश हो होकर उनका तमाशा देखते फिर रहे थे।

रात को वह सब स्त्रियां मन्दिर के चौक में लाई गई। डोरू डन्के बजने लगे, मोरछल उनके सिर पर को फिराई जाने लगी और मन्दिर के पुजारी उनके चारों तरफ़ घूम २ कर, कोडे पटखा २ कर और अनेक प्रकार के उकसावे और हुङ्कार दे देकर उनको कुदाने लग गये। मेले के हज़ारों आदमी वहां इकट्ठे हो रहे थे और सारे चौक मे खचा खच भर रहे थे। दुलारी के मां बाप दुलारी को भी वहां लाये और पुजारियों ने अन्य स्त्रियो के समान उसको भी कुदाना चाहा जिस पर उसने शेरनी की तरह गरज कर कहा कि मै तुम्हारे नचाये नाचने वाली नहीं हूं, मै तो तुम्हारे इस माया जाल को तोड़कर स्त्रियों की इस निर्लज्जता और मूर्खता को हटाऊंगी और उनको आदमी बनाऊंगी।

पण्डे-लड़की, यह महा शक्तिशाली जगत् माता का मंदिर है जिसकी जागती जोत चारों खूंट संसार भर में फैली हुई है। यहां तो बड़े बड़े घमन्डी और भुजाधारी आते है और सिर नवाकर ही जाते हैं, तुझ ज़रा सी बच्ची की तो हक़ीकत ही क्या है।

दुलारी-मेरी कुछ हक़ीक़त हो या न हो पर मै खुले दहाने कहती हूँ कि यह सब स्त्रियां जो तुम्हारे कुदाये कूद रही हैं और पांच पांच आदमियों के भी क़ाबू में नही आती है इनका नाचना कूदना मैं एक दम बन्द कर सकती हूं और तुम्हारी सारी क़लई खोलकर धर सकती हूं।

पंडे-लड़की तू देवी के थले पर बैठकर ऐसे घमंड के बोल मत बोल। महाशक्तिशाली देवी पल भर में कुछ से कुछ कर सकती है, क्रोध आने पर सारे मेले को टांगकर धरसकती है।

दुलारी की मां-(पंडेके पैरो पड़ कर) महाराज जी तुम इस लड़की के कहने का ख़याल क्यों करते हो, इसको तो ओपरा असर हो रहा है। इस ही वास्ते तो मै इस को तुम्हारे क़दमों में लाई हूं, जिस से देवी मय्या की कृपा होजाय और यह अपने आपे में आजाय।

पंडे-माई तू मत घबरा, देवी तो भगत प्रति पालनी है। तेरी अर्दास ज़रूर क़बूल होगी और तेरी बेटी की बुद्धी ठिकाने आजायगी।

दुलारी-मेरी बुद्धी तो ठिकाने आई हुई है, पर मुझे तो दुनिया भर की इन स्त्रियों की बुद्धी ठिकाने लानी है जो तुम जैसों के जाल में फंसकर अपने धर्म कर्म को बिल्कुल ही खो

बैठी हैं और स्त्री जाति को लजा रही हैं। देखो, सब से अधिक मल्ल की तरह कूदन वाली और सब से ज़्यादा निलज्जता दिखाने वाली यह इन सेठ साहब के बेटे की वहू है जिन्हो ने कल ही हज़ारो रुपये का माल देवी पर चढ़ाया है और अपनी बहू के आराम होजाने पर सवा लाख रुपये की लागत का मन्दिर बनवा देने का वादा किया है, जिस से तुम सब पंडे भी अधिक करके इस ही स्त्री को कुदा नचा रहे हो और सेठजी को बहकाने-के वास्ते तरह तरह की पाते बना रहे हो। मैं भी अब सब से पहले इस ही का भांडा फोड़ती हूं और ललकार कर कहती हूं कि यह सब इस स्त्री का मकर फरेब है कोई किसी प्रकार का भी ओपरा असर इसको नहीं है, यदि सेठ साहब मुझको इस बात का इख्तियार दें कि मै जो चाहे करूं, तो मै अभी इस का सारा फ़रेब खोलकर दिखा सकती हूं, इसका सब नाचना कूदनैा वन्द करदे सकती हूं।

सेठ साहब तो पहले ही मेले वालो से दुलरी की बाबत सुन चुके थे-कि वह भी बहुत शक्ति शाली लड़की है और साक्षात देवी ही मानी जाती है। इस कारण उन्होंने तो दिन में ही यह चाहा था कि दुलारी को चढ़ावा चढ़ाकर उससे भी अपनी बहू को चंगी करावें, परन्तु दुलारी के मां बाप ने उनकी इस बात को स्वीकार न करके दूर से ही टाल दिया था। अब जो दुलारी ने स्वयम ही उनकी बहू पर हाथ डालने की इच्छा प्रगट की तो सेठ साहब ने खुशी से मंजूर कर लिया और कह दिया कि तुमको इख्तयार है जो चाहो करो। तब दुलारी ने लाल मिर्चें मंगाकर और उनको आग पर डालकर उस की खूब गहरी धूनी बहू को सुंघाई, जिसकी धसकसे बेचैन होकर वह बड़े ज़ोर के साथ दूर भागने की कोशिश करने लगी, परंतु

दुलारी ने उसको सेठ के आदमियों से मज़बूत पकड़वा दिया और मिर्चों का बहुतसा धूंआ ज़बरदस्ती उसको सुंघाही दिया जिस की धसकसे लाचार होकर पहले तो बहू ने चिल्ला २ कर यह ही कहना शुरू किया कि ख़बरदार इसको धूनी मत सुंघाओ नहीं तो हम नाराज़ होजावेंगे और तुम्हारा सत्यानाश कर दिखावेंगे, परन्तु जब इस कहने पर भी दुलारी ने उसको न छोड़ा तो मिन्नत के साथ यह ही कहना पड़ा कि मुझे छोड़ दो, नहीं तोधसक के मारे दम घुट कर मेरे तो प्राण हा निकल जावेंगे।

पंडे–दूर हटजा लड़की, तू तो साक्षात ही चांडालनी है, और बहू की जान ही लेना चाहती है, परन्तु इस देवी मन्दिर में हम कदापि ऐसा नहीं करने देसकते है।

एक आदमी–कौन है जो इस महा बुद्धिमान लड़की को चांडालनी कहता है, मैं भी डाक्टर हूं और मिर्चों की धूनी न देकर दूसरी बहुत हलकी दवा के द्वारा ही इन सब स्त्रियों को होश में ला सकता हूं, एक दम सबभूत प्रेत दूर भगा सक्ता हूं।

पंडे–देवी मन्दिर में महा अपवित्र और अशुद्ध अंग्रेज़ी औषधियां कोई नहीं लासकता है।

डाक्टर–कोई अपवित्र दवा नहीं बर्ती जावेगी, ब्रोमाईडा पोटासियम नाम का एक खारा खारा नमक तो खिलाया जावेगा, और चूने और नौसादर से बनी हुई अमोनिया नाम की दवा सुंघाई जावेगी, अगर आप लोगों को विश्वास तो चूना और नौसादर मंगाकर आपके सामने ही जावेगी और खिलाये बिदून भी होश ठिकाने

मेले के लोगों को तो इस बात के देखने का बहुत शौक होरहा था और सब को एक प्रकार का तमाशा सा होरहा था। इस कारण वह एक दम चिल्ला उठे कि डाक्टर साहब आप भी तो हिंदू धर्म हैं तब कोई अपवित्र दवा कैसे दे सक्ते हैं, आप तो बेखटके जो दवा चाहें खिलावें वा सुघावें और इन औरतों को होश में लावें। इस पर डाक्टर ने अपना बक्स मंगाकर उन सब स्त्रियो को अमोनिया सुंघाया और ब्रोमाईडा पानी में घोलकर पिलाया, जिससे थोड़ी ही देर में उनका सब नाचना कूदना जाता रहा और वह अपना कपड़ा ठीक करके चुप चाप नमानी सी होकर बैठ गईं।

डाक्टर-अब पंडों से पूछो इनका भूत प्रेत कहां चला गया है और अगर नहीं गया है तो क्या कोई पंडा इतनी शक्ती रखता है जो इनको पहले की तरह उद्धत बनाकर नचा कुदा सके।

इस पर पंडे लोग अटकलपच्चू बातें बनाकर बहुत कुछ शोर मिचाने लग गये और अंग्रेज़ी पढ़े बाबू लोगों की बुराई कर करके और कलुयुग का दोष निकाल २ करके महा अंधेर सिद्ध करने लग गये, परन्तु लोगों पर उनके इस शोर का कुछ भी असर न हुवा, सब को इन स्त्रियो का ही मायाचार निश्चित होगया।

डाक्टर-लोगो, यह सब नतीजा बाल विवाह और अनमेल विवाह का ही है, जिस कारिवाज आज कल बहुत ही ज़्यादा हो रहा है, अगर आप लोग खोज लगावें तो आपको साफ़ २ मालूम होजावे कि इन स्त्रियो के पति इनके जोड़ के नहीं हैं, इसही से यह ऐसी उद्धत और निर्लज्ज होगई हैं, इनमें से किसी

का पति तो इनसे उमर में, क़द में वा ताक़त में कम है, कोई इन से बहुत बड़ा है वा बिलकुल ही बुड्ढा होगया है कोई व्यभिचारी है, कोई दुराचारी है, कोई छोटी उमर में विवाह होजाने से ही नामर्द वा कमज़ोर होगया है, किसी ने बालपन में ही अपने ब्रह्मचर्य को नष्ट कर दिया है, ग़रज़ पुरुषों के इस बिगाड़ने ही इन स्त्रियों को ऐसा मस्त बनादिया है, मैंने जो दवा इन स्त्रियों को पिलाई है वह नसों को ढीला करके मस्ती के दूर कर देने के सिवाय और कुछ भी असर नहीं रखती है जिस से साफ़ सिद्ध है कि इनको जवानी की मस्ती के सिवाय और कुछ भी ओपरा असर नहीं था, भूत प्रेत वा देवी देवता का बहाना तो झूठ मूठ ही किया जा रहा था।

सेठ पुत्र—डाक्टर साहब का कहना बिल्कुल सच्चा है। लोगो मैं इस स्त्री का अभागा पति हूं, मेरे माता पिता पांच करोड़ के धनी हैं ओर मै ही एक अकेला उनकी सन्तान हूं। मेरी सास भी सात करोड़ की मालिक है और उसके भी एक यही लड़की है। मेरे माता पिता ने साफ़ साफ़ यह बात जानते हुए भी कि यह लड़की हमारे लड़के से दो बरस बड़ी है और रांड का सांड होने के कारण बहुत ही उद्धत और सिर चढ़ी हो रही है, इन सात करोड़ रुपयों के लालच में ही आंख मीच कर मेरे गले बांध दी है और मेरी सास ने भी यह सब बातें जानते हुए कि लड़का लड़की से उमर में क़द में ताक़त में बल में ग़रज़ सब ही बातों में हीना है, केवल अपने समान धनवान और प्रतिष्ठावान देखकर ही अपनी लड़की ब्याह दी है। ब्याह नहीं दी है किन्तु हम दोनों की जान मुसीबत में फंसा दी है। मै अपनी स्त्री की इस निर्लज्जता से जो वह अपने ऊपर भूत चढ़ाकर लोगों को दिखाती है बहुत ही ज़्यादा लज्जित होरहा

हूँ। जीता ही धरती में गड़ा जा रहा हूँ, अपने जीवन को विलकुल ही निरर्थक और भार स्वरूप समझ रहा हूं, अव तुम ही वताओ कि मै क्या करूं, मर जाऊं वा ज़िन्दा रहूं और ज़िन्दा रहूं तो किस तरह इस महा वेहयाई का जीवन विताऊं।

दुलारी-ज़रूरत तो इस ही वात की है कि जिस धन के लालच मै तुम्हारे माता पिता ने तुमको इस दुख सागर में डुवोया है, जिस धन के चमत्कार को देखकर तुम्हारी सास ने अपनी लड़की को यहां सौंपा है तुम उस धन को उन्हीं के वास्ते छोड़कर ब्रह्मचारी हो जाओ और देश २ घूमकर अनमेल विवाह की प्रथा को दूर कराओ, परन्तु तुम बहुत ही ज़्यादा लाड़ में पले हो, और बहुत ही ज़्यादा तुनक मिज़ाज़ और नाज़ुक हो रहे हो इस वास्ते तुम से घर छोड़ना और फ़क़ीरों की तरह रहना असम्भव ही प्रतीत होता है।

सेठ-(वात काटकर) मै आप ही अत्यन्त लज्जित हूं कि मैंने लालच में आकर अपने वेटे का अनमेल व्याह किया, उस को भी महा घोर दुखो में डाला और अपनी इज़्ज़त को भी धूल में मिलाया। अव यह लड़का मुझको जो चाहे सज़ा देले और यह सारा का सारा पांच करोड़ रुपया दुनियां से अनमेल विवाहों के उठा देने में लगा दे। जितने चाहे उपदेशक देश विदेश घुमावे पर आप घर से बाहर न जावे।

सेठानी-(हाथ जोड कर) यह सारा दोष तो मुझ मूरख डायन का ही है, मेरी ही ज़िद से यह सगाई ली गई थी और वड़ी वहू व्याही गई थी। इस वास्ते इसका तो सारा दण्ड मुझ ही को मिलना चाहिये, मै तय्यार हूं। मुझे चाहे सूली पर चढ़ा दो चाहे काला मुंह करके देशत्याग दिला दो, पर मेरा

यह बेक़सूर बेटा घर से बाहर न जावे। घर बैठा चाहे जितना धन लुटावे।

सास--मेरा सात करोड़ रुपया भी इस ही काम में लगादे पर घर से बाहर न जावे।

बहू--मैं पापिन भी अपना दोष स्वीकार करती हूं और आगे के लिये प्रतिज्ञा करती हूं कि न तो कोई मायाचारही चलाऊंगी और न कभी कोई भूत प्रेत ही बुलाऊंगी, किन्तु लज्जा और सन्तोष के साथ ही बिताऊंगी, परन्तु आप सब लोगो की दुहाई देकर यह प्रार्थना अवश्य करती हूँ कि चाहे मेरा पति मुझ से बात भी न किया करै, चाहे मेरी शकल देखना भी छोड़ देवे और चाहे मुझे झूठे टुकड़े ही खिलावे और फटा पुराना ही पहनावे और चाहे मुझ से घर का मैला ही साफ़ करावे, विष्टा ही उठवावे, अन्य प्रकार भी मुझको जो चाहे दंड दिलावे परन्तु स्वयम घर छोड़कर कहीं न जावे।

दुलारी--बस अब सब कुछ ठीक होगया है, तुम एक बरस तक घर ही रहो और पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करो, साल भर तक अपनी स्त्री की भी परीक्षा लो और अटूट धन लगाकर अनमेल विवाह की प्रथा को बन्द करने की भी कोशिश करते रहो, फिर साल भर पीछे जैसा उचित समझो करो।

सेठ पुत्र--मुझे देवी की आज्ञा शिरोधार्य है, अवश्य ऐसा ही करूंगा।

सब लोग-- जय हो राम दुलारी देवी की जय हो।

सुबह ही मेला बिछड़ गया और सब लोग अपने अपने घर चले गये।

१०—आग लग रही है संसार में।

इस मेले के दृश्य से दुलारी के मन में बड़ी भारी चोट लगी थी। स्त्री जाति का ऐसा महा पतन देखकर उसका हृदय एक दम उबल उठा था और यही जी चाहता था कि तुरन्त घर से निकल पड़ूं और इनके उद्धार करने में ही लग जाऊं, देश विदेश घूमकर स्त्रियों को जगाऊं, आत्मबल देकर उनको मनुष्य बनाऊं। कष्ट सहने का उसको भय नहीं है, जान जोखम में पड़ने का उसको डर नहीं है, किन्तु एक मात्र यह ही सोच है कि किस विधि से इस महान कार्य को उठाऊं जिससे जल्दी ही सिद्ध कर पाऊं।

घर जाकर अब वह पहले से भी ज़्यादा एकान्त में बैठी रहती थी, अपने तन बदन की भी सुध भूल गई थी, इसकी बाबत अव्वल तो पहले ही से अनेक स्त्री पुरुषों का यह ख़याल हो रहा था कि वह देवी का अवतार है और अब मेले में जाने से तो उसकी यह प्रसिद्धि बहुत ही ज़्यादा हो गई थी और गांव२ फैल गई थी। इस ही प्रसिद्धी के अनुसार एक दिन एक गांव की स्त्री जिसकी उमर अनुमान ३५ बरस की होगी उसके पास आई और पैरों मे सिर रखकर बोली कि देवी मैं बहुत दुखी हूं। मुझ पर भी कृपा दृष्टि हो जाय। तेरी दया से मेरा भी बेड़ा पार होजाय, दुलारी तुरन्त ही उठकर उसको अपने सिराहने बिठाने लगी परन्तु वह न बैठी, और दुलारी के पैर पकड़ कर और आंखों में आंसू लाकर गिड़गिड़ा २ कर यह ही कहती रही कि देवी तेरे सिवाय अब मेरा और कोई भी ठिकाना नहीं रहा है मुझे निराश मत करना। उसकी यह दशा

देखकर दुलारी ने उसकी बहुत कुछ तसल्ली की और धीरज के साथ अपनी सब व्यथा सुनाने की प्रेरणा की।

स्त्री–देवी मेरे कोई पुत्र नहीं है। लड़की तो मेरे पांच हो चुकी है जिनमें ३ अब तक जीती हैं, पर लड़का एक भी नहीं हुआ है। तू मुझे एक लड़का देदे तो मेरे सब संकट दूर हो जांय।

दुलारी–लड़का न होने से तुमको क्या संकट होरहा है?

स्त्री–देवी जी तुम तो अन्तरयामी हो इस कारण आप ही जानती होगी कि लड़का न होने से मै कैसी निरादरी हो रही हूँ, दिन रात कैसे २ चोके सास ससुर के सहती हूँ। उठते बैठते चलते फिरते खाते पीते जैसी २ ज़हर भरी बोलियों के तीर मेरे हृदय में चलाये जाते हैं वह मै ही जानती हूँ, या मेरा हृदय जानता है जो बिध २ कर छलनी होगया है और भुन २ कर कोयला बन गया है। मुझे तो जब से गर्भ रहता है तब से ही बड़ा भारी सहम चढ़ जाता है कि कहीं ऐसा न हो जो अब के भी लड़की हो जाय और मुझ पर दूनी आफ़त आव। पर क्या करूं मेरी तो क़िस्मत ही कुछ ऐसी है कि सदा लड़की ही पैदा हो जाती हैं, और उस ही वक्त से मुझ पर बाण वर्षा होने लग जाती है और मै ज़च्चाख़ाने ही में निरादरी करके छोड़ दी जाती हूं। ननँद, फुफस, द्योरानी, जेठानी, गली मुहल्ले वाली, नायन, धोबन, कहारी, कुम्हारी, भंगन और चमारी जो आती है वह ही घाव पर नोन छिड़कती आती है। मुझे पत्थर जनने का दोष देकर लड़कियों को घूरे का कूड़ा आफत की जड़ और मुसीबत का पहाड़ ही सिद्ध करने लग जाती हैं। हा, वह मेरी सास जो मेरे गौने आने पर मुझे अपनी बेटी

के समान छाती से लगाती थी और मुझ पर वार वार जाती थी वह ही इन लड़कियों के पैदा होने के कारण मेरी बैरन हो गई है। जेठ ससुर आदि सब ही से दुर्कार दिलाती है और नोच २ खाती है। मेरे प्यारे पति को तो उसने मुझ से ऐसा बिगाड़ा है कि बिना लात घूंसे और थप्पड़ जूते के वात ही नहीं करता है। इतना कहकर वह स्त्री रोने लगी।

दुलारी-माता रो मत, रोने से कुछ नहीं होता है। मनुष्य का काम रोने का नहीं है, किन्तु साहस के साथ उपाय करने का ही है।

स्त्री-देवी मै सब उपाय कर चुकी हूं, दाई की वताई हुई बड़ी २ तीक्ष्ण औषधियां भी खा चुकी हूं, पीर पैग़म्बर और देवी देवता भी मना चुकी हूं। ब्राह्मणों से जप भी बहुत कुछ कराये हैं, पितरों की बलि भी दी हैं, जंतर मंतर और जादू टोनों की तो कुछ हद ही नहीं रही है। देवी तुमसे तो कोई बात छिपी हुई नहीं है, मै तो स्यानों के कहने से घर वालों की चोरियों २ बड़े २ साहस के काम भी कर चुकी हूं। नंगी होकर आधी रात को स्मशान में मैं गई हू, खून के थापे लोगों के दर्वाज़ों पर मैने लगाये हैं, लोगों के छप्परों में आग मैने लगाई है जिन मे डंगर बंधते थे और सब जल मरते थे। द्योरानी जेठानी और बगड़ पड़ौस के लड़कों पर टोटके मैने कराये हैं जिस से वह तो मर जायं और फिर मेरे गर्भ में आकर पैदा होजायं, और भी जो कुछ किसी ने बताया है, सबही कुछ किया है, पर किसी से भी कुछ नहीं हुवा है। सदा डला पत्थर ही पैदा होता रहा है। अब देवी मै पापनी कलंकनी तेरे दर पर आई हू अब या तो तू मुझे इस धरती से उठाले, नहीं तो एक पुत्र की मिहरवानी करदे।

हो हो, आग लग रही है ससार में तो, इसको जल्दी बुझाओ और स्त्री जाति को बचाओ। यह कहती हुई दुलारी उठकर चलदी और यह ही कहती हुई बाज़ारों बाज़ार चली गई। लोग उसके पीछे २ हो लिये और नगर भर में शोर हो गया कि देवी फिर भवन में आरही है और बाज़ारों बाज़ार दौड़ी जा रही है। यह सुनतेही लोग बाज़ार में आये और चौक में दुलारी को घेरकर देवी मैय्या की जय पुकारने लग गये, और हाथ जोड़कर बोले कि देवी शान्ति धारण करके जो आज्ञा हो कहो।

दुलारी-संसार के लोगो क्या तुम सृष्टी का मटियामेट करके महा प्रलय ही करना चाहते हो जो पुत्र ही पुत्र चाहते हो और पुत्रियों के पैदा होने पर रोने लग जाते हो। यदि तुम्हारी इच्छा के अनुसार पुत्रियों का पैदा होना ही बन्द हो जाय तब तो निश्चय है कि आगे को सन्तान का होना ही खतम हो जाय। अकेले पुरुषों से तो किसी प्रकार भी सन्तान नहीं हो सकती है किन्तु सृष्टी की समाप्ति होकर महा प्रलय ही हो जाती है। इसके सिवाय तुम्हारे तो यह बस में भी नहीं है कि पुत्र ही पुत्र उत्पन्न करो और पुत्रियां न पैदा होने दो। ऐसा तो सतयुग के शक्ति शाली पुरुष भी नहीं करसके थे जो कन्या के जन्मते ही उसका गला घोटकर मार डालते थे और ऐसा करना अपने पवित्र कुल की एक बड़ी भारी प्रतिष्ठा मानते थे। यह बात तो उनसे भी नहीं हो सकतीं थी कि कन्याओं का गर्भ में आना और जन्मना ही बन्दकरदें। तब तुम किसी स्त्री के पुत्री जन्मने पर क्यो उससे नाखुश हो जाते हो, क्यों उसका निरादर करने लग जाते हो ?

पुरुषो तुमने स्त्रियों का निरादरकरके उन को महा निर्दया

राक्षसी और पशु समान मूर्ख बनाकर अपने घर को ही नरक कुण्ड बना लिया है। तुमने अपने ऊंचे कुल के झूठे घमण्ड मे उनको जन्मते ही मार डालने की महा नीच प्रथा चलाई, पति के मर जाने पर जीती जल मरने का महा भयानक दस्तूर बनाया। एक पुरुष को अनेक स्त्रियां व्याह कर स्त्रियों को सौतिया डाह में जलाया, अब भी तुम उनको बांदी गुलाम के समान मानकर अनेक प्रकार के त्रास देते हो, निर्जीव पत्थर कंकर के समान समझते हो, स्त्री के मर जाने पर आप तो तुरन्त विवाह करा लेते हो किन्तु उन को जन्म भर रांड़ बिठाकर धधकते अंगारों पर तड़पाते हो। छोटी २ कन्याओ को बुढ्ढों के साथ व्याह कर अपने हाथों उनको रांड़ बनाते हो और ऐसी ही ऐसी बातों में अपना ऊंचपना जताते हो। कन्या के पैदा होने पर शोक करने लग जाते हो, हर वक्त उसका मरना मनाते हो, रांड़ मरजानी आदि नामों से पुकार कर अपने हृदय की दाह मिटाते हो।

चिरकाल के तुम्हारे इस व्यवहार से होते २ सब ही स्त्रियो को यह चाह होने लग गई है कि हमारे उदर से पुत्र ही उत्पन्न हों, कन्या न हों, इस चाह में स्त्रियां गुप्त रीति से नाना प्रकार के उपाय करती हैं और धूर्त ठगों से बुरी तरह ठगाई जाकर बड़े २ राक्षसी कृत्य करने लग जाती हैं, परन्तु कभी तुमने यह भी विचारा है स्त्रियों के इन राक्षसो कृत्यों का फल क्या होता है। ज़रा सोचो और बुद्धि लगाओ तो तुमको मालूम हो कि अपने इन राक्षसी उपायों के कारण ही स्त्री जाति अब कोमल हृदय नहीं रही हैं, किन्तु वज्र के समान अत्यन्त ही कठोर क्रूर हो गई है। यह ही कारण है कि सगी दौरानी जेठानी को को भी आपस में एक दूसरी पर विश्वास नहीं होता है।

यह ही खटका लगा रहता है कि यह मुझ पर या मेरे पुत्र पर कोई किसी प्रकार का टोटका वा जादू मंत्र न करादे, इसही से बढ़ते २ स्त्रियों में द्वेष रखने का अभ्यास पड़ गया है और घर २ में नित्य लड़ाई झगड़ा और खैंचतान रहकर गृहस्थ का सब प्रबन्ध मटियामेट होगया है और दुखही दुख रहने लग गया है। इसके इलावा तुम यह भी जानते हो कि पुत्र की उत्पत्ति के लिये स्त्रियों को यह सब राक्षसी उपाय और निर्लज्जता के कार्य बहुत ही ज़्यादह छिपा छिपा कर करने पड़ते हैं, इस कारण उनको बड़ा भारी मायाचार रचना होता है। महा नींच और मक्कार स्त्री पुरुषों को अपना गुप्त भेदी बनाना पड़ता है और बड़े २ नीच प्रपंच जोड़ने होते हैं। इसही प्रकार के संस्कारों से स्त्रियां मायाचारिणी हो गई हैं। मनमें कुछ और बाहर कुछ ज़ाहिर करती है, सदा कपट भरी बात बनाती रहने से महा नीच और निर्लज्ज प्रकृति की बन गई हैं। इसही से तुम्हारा सारा गृहस्थ नरक स्थान बन गया है जिसमें सदा कलह और द्रोह की ही आग दहकती रहती है तुम सबही उस आग में जलते हो और नरकों का त्रास भोगते हो।

स्वार्थी पुरुषो तुम ज़रा अपने घरकी तरफ़ देखो कैसी भयानक आग लग रही है, कैसी आपा धावी पड रही है, घरों का सब प्रबन्ध मलियामेट होकर चारों तरफ़ एक मात्र दुख ही दुख खड़ा हो गया है, इस कारण सावधान हो जाओ और जितनी भी जल्दी होसके इस आग को बुझाओ, यदि दूसरो के घर की आग नहीं बुझाना चाहते हो तो अपने २ घर की तो बुझाओ इस तरह भी संसार भर की आग बुझ जायगी और सब ही जगह सुख शान्ति होजायगी, यदि तुम अपने ही अपने घरोंकी स्त्रियों की मूर्खता, स्वार्थ और द्वेष भावोंको दूर

कराकर आपस में सच्ची प्रति पैदा करादो तो तुम्हारा घर हिंसक पशुओ का जंगल वा कंजरों का टांडा न रहकर गृहस्थियो का घर बनजावे, और तुम्हारी सबकी जिन्दगी सुखशान्ति में ही बीतने लगजावे।

समझदार पुरुषो ज़रा सोचो तो कि जब कन्याओ को पैदा होते ही कूडा कबाड़ बताया जाता है सर्व प्रकार उनका निरादर किया जाता है, यहां तक कि उनके मुंह पर ही उनका मरना मनाया जाता है, तो क्या ऐसी दशा में उनके हृदय मे किसी प्रकार का आत्म सन्मान वा आत्म गौरव आसकता है और कोई उच्च भाव पैदा हो सकता है, जब कन्याये जन्म से ही नीच बताई जाती हैं तो वह तो अवश्य ही नीच बनजावेंगी और जहां व्याही जावेंगी वहां नीचता ही दिखावेंगी, इस ही से उच्च पुरुषो के घर भी नीच ही बनजाते हैं और उन उच्च पुरुषो को भी नीचता के ही नाच नाचने पड जाते हैं, इस ही से कहती हूं घर घर आग लग रही है इसे बुझाओ, बुझाओ और शीघ्र ही बुझाओ।

दुलारी यहां तक ही कहने पाई थी कि उसका पिता अपने कुटुम्बियों को साथ लेकर वहां घुस आया और उसको जबरदस्ती घरले चला।

दुलारी–पिताजी ! मैने अपना काम शुरु करदिया है अब मुझे घर मत ले चलो।

माधोलाल–होश कर बेटी, अब तू बच्ची नहीं रही है, दस दिन में तो तेरा व्याह होने वाला है। अब तेरे ऐसी बात करने के दिन नहीं रहे हैं।

दुलारी-मै ब्याह नहीं कराऊंगी, हर्गिज़ नहीं कराऊंगी। मै तो जन्म भर क्वारी ही रहूंगी, और संसार का उद्धार करूंगी! आग लग रही है ससार में, सबके ही घर जल रहे है, सबही बिलबिला रहे हैं, पर बुझाने की चेष्टा बिल्कुल भी नहीं करते हैं, मै यह आग बुझाऊंगी और सुख शान्ति फैलाऊंगी।

रामप्रसाद-सीधी तरह से चलना हो चल नहीं तो हड्डियां तोड़ डालूंगा।

दुलारी-तो क्या किसी कन्या को यह अधिकार नहीं है कि वह क्वारी रहकर अपना जन्म धर्म अर्थ ही बितावे?

रामप्रसाद-यह सब अधिकार तुझे घर चलकर ही बताऊंगा।

इतना कहकर यह लोग ज़बरदस्ती दुलारी को उठाकर घर ले गये और वहां उसको रस्सियों से बांध जूड़कर स्त्रियों को ताकीद करने लगे कि इसको खोलना मत नहीं तो भाग जायगी, इसको तो भूत प्रेत आ द का कुछ भी असर नहीं है किन्तु किसी हमारे वैरी दुश्मन ने ही बहका रक्खा है।

दुलारी की मां-मै तो चार दिन से चिल्ला रही हूं कि तकिये वाले पीर जी को बुलादो, पर तुम्हे तो ऐसी ज़िद हो रही है कि सुनते ही नहीं हो, अब जब मै बेशरम होकर अपने आप बुलाकर लाऊगी तब मानोगे।

रामप्रसाद-अच्छा तेरे पीरजी को भी बुलाकर लादेता हूं।

११—पीरजी की करतूत ।

यह पीरज़ी साठ बरस का एक बुड्ढा फ़क़ीर था और घोटे शाह के नाम से प्रसिद्ध था, गांव से बाहर सड़क के किनारे एक ठिकानासा बना रक्खा था जो फ़क़ीर का तकिया कहिलाता था, वहीं वह बैठा रहता था, रस्ते चलतों को हुक्का पिला देता था और आग का भी आराम मिल जाता था, जिस से वह पैसा धेला देजाते थे और इसका गुज़र चल जाता था, कभी कोई हिन्दू गंडा तावीज़ बनाने वा भूत प्रेत उतारने को बुलाले जाता था, तो दो चार रुपये भी झटक लाता था, रामप्रसाद भी अपनी स्त्री की अज्ञानुसार तकिये पर गया और सलाम करके सब हाल सुनाया।

पीरजी—लाला साहब लड़की को तो बहुत ही ज़बरदस्त जिन्न चिलचा है, पर कैसा ही हो अल्लाह चाहे तो पकड़ा ज़रूर जावेगा।

आस पास के दो चार मज़दूर भी हुक्का पीने पीरजी के पास आबैठते थे और उस समय भी बैठे हुवे थे।

एक—आपके सामने कौन जिन्न भूत ठहर सकता है, आप ने तो ऐसे २ जिन्नो को पकड़ा है जो किसी के भी क़ाबू में नहीं आते थे, वह थोड़ा ज़बरदस्त था जो क़ादिर की बहू के सिर आता था पर आपने तो उसको चुटकियो में ही पकड़ लिया था।

पीरजी—सब अल्लाह ही करने वाला है, अच्छा लालाजी अबतो हमारी नमाज़ का वक्त है कल जासकते हैं दोपहर बाद।

दूसरा-और अगर रात को ही शाहपुर से नव्वाब साहब का आदमी हाथी लेकर आगया तो ?

पीरजी-हां खूब याद दिलाया, वहां जाने का तो हम वादा कर चुके हैं।

इसपर रामप्रसाद पांच रुपये पीरजी के पैरों में डालकर अभी चलने के वास्ते मिन्नत करने लगा और पास बैठने वाले मज़दूरो ने भी पीरजी को कहा कि यह लाला बहुत दुखी मालूम होता है इस पर रहम करके ज़रूर चलना चाहिये।

इस पर पीरजी उन लोगों को साथ लेकर रामप्रसाद के साथ उसके मकान पर आया।

दुलारी-क्या तुम मेरे ऊपर से भूत उतारने आये हो, पर मेरे ऊपर तो कोई भी भूत प्रेत नहीं है।

पीरजी-हम सब जानते हैं तुम्हारी चालाकियों को, अच्छा जी एक चिराग़ लाओ तेल भरकर, यह ख़बीस वैसे थोड़ाही मानेगा।

दुलारी की मां तेल का चिराग़ लाई और पीरजी ने जेब में से काग़ज़ की एक बत्ती निकाल कर चिराग़ में लगाई और दियेसलाई से जलाई, बत्ती के थोड़ा सा जल जाने पर पटाख़ा सा छूटने की आवाज़ हुई।

पीरजी-अच्छा जी हमारा मवक्कल तो आगया अब बताओ तुमको मवक्कल से गिरफ्तार करावें या वैसे ही जाते हो, (दुलारी को अपनी छड़ी से छेड़कर) बोलो जल्दी बोलो, हम तुमसे पूछते हैं।

दुलारी-मैं तो पहले ही कह चुकी हूं, मेरे ऊपर कोई भूत प्रेत नहीं है।

पीरजी-हम समझ गये यह सीधी उंगलियो मानने वाला नहीं है, अच्छा लाला साहब, इतने यह फलीता जले, तुम दौड़ कर बाज़ार से छटांक भर छोटी इलायची, छटांक भर लौंग, छटांक भर अष्टगंध, छटांक भर गूगल, छटांक भर संदूर, सवासेर मिठाई, सवासेर बादाम, सवासेर छुआरे, पांच गज़ सुर्ख़ कपड़ा, और एक नाला रेशम का लेते आओ, और भई खुदा बख्श तुम हमारे डेरे से वह दोनों शीशे जिस में भूत उतारा करते है और हमारा जादू का सोटा उठालाओ, अब तो आगये है, इसका इलाज ही बनाकर जावेंगे।

इनको गये अभी पांच मिनट भी न हुये थे कि पीरजी ने राम प्रसाद के बड़े लड़के को देखकर कहा कि अहो हम लाला को इतर के वास्ते तो कहनाही भूल गये, जाओ तुम दौड़कर एक माशा इतर लेकर आओ।

फिर जब वह लड़का भी चला गया तो पीरजी ने दुलारी की मां से कहा कि देखो इन अपने छोटे बच्चों को दूर लेजाकर बैठो, यह जिन्नो और भूतों का मामला है, ऐसा नहो कि झपेट में आजायें और हां एक सात तार का नाला भी बांट कर लाओ नहाकर और पाक साफ़ कपड़े पहन कर ही बांटना, ऐसा नहो कुछ गड़बड़ करदो, तुम हिन्दू लोगों को पाकी नापाकी का कुछ ख्याल नहीं होता है, यह सुनकर वह भी चली गई।

अब पीरजी ने अपने साथ के आदमी को भी इशारे से हटा दिया और फिर दुलारी से कहा।

पीरजी-देखो अब कोई भी यहां नहीं है, तुम्हारा जो जो मतलब हो वह बेखटके हमसे कहदो हम ज़रूर उसको पूरा करा देंगे, और तुम्हारी बात भी किसी से नही खुलनेदेंगे।

दुलारी-तुम्हारे जैसों से मैं कुछ भी कहिना नहीं चाहती हूं।

पीरजी-तुम जानों, बहुत पछताओगी, खैर इसही में है कि तुम हमसे खुल जाओ, नहीं तो हम तुम्हारे सब पतड़े खोल देंगे, और तुम्हारी खाल तक उड़वा देंगे।

दुलारी-झूठे मक्कारो तुम मेरे पतड़े क्या खोलोगे, मै ही तुम लोगों के पतड़े खोलने के वास्ते दुनियां में आई हूं।

पीरजी-न मान पर तब तो मानेगी जब तत्ते तवे पर बिठाई जावेगी (एक बोतल दिखा कर जिसमें एक बहुत बड़ा बिच्छू पड़ा हुवा डंक हिला रहा था) देख ऐसे २ बिच्छुओं से कटाऊं-गा और बड़े २ कानखजूरे तेरे बदन को चिमटाऊंगा, पर तू छोटी उमर की नादान लड़की है इस वास्ते तरस खाकर तेरे मन की बात पूछता हूं।

दुलारी-ओ पापी पेट के कुत्ते, तू मुझे क्यों डराता है, तेरे बताने की तो मेरे मनमें कोई बात ही नहीं है।

पीरजी-अच्छा तेरे मनमें कोई बात नहीं है तो हमारी ही बात मान, देख, जब हम मंतर पढ़कर भूत को धमकावें फूक देने का या शीशे में बन्द कर लेने का डरावा दिखावें तो तू यह कह देना कि मै तो जाता हूं फिर कभी इस लड़की पर

नहीं आऊंगा, इतनी बात भी यह तेरी भलाई के लिये बताते हैं, नहीं तो नहीं मालूम हमको क्या क्या करना पड़े और क्या क्या दुख तुम को दिये जावें।

दुलारी-तुम अपनी सी सब कुछ करलो और जो चाहे दुख देलो पर मैं तुम्हारी बोली नहीं बोल सकती हूं।

इतने में दुलारी की मां तागा लेकर आगई।

पीरजी-बीबी-तुम्हारी बेटी को तो बहुत ज़बरदस्त भूत चिपटा है और यह मालूम हुआ है कि एक दिन भूतो का राजा अपनी सारी फ़ौज पलटन के साथ आसमान में उड़ा जारहा था, उस वक्त यह लड़की कोठे पर खड़ी थी। वह भूतों का राजा देखते ही इस पर आशिक़ हो गया और अब किसी तरह भी छोड़ना नहीं चाहता है।

मां-(पैरों में पड़कर) तुमही छुड़ाओगे मेरी बेटी को उससे।

पीरजी-चिल्ला खेचना पड़ेगा, तब कहीं क़ाबू में आवेगा यह भूत तो।

मां-जो तुम बताओगे सोही करूंगी, पर मैं तो जानती नहीं कि चिल्ला क्या होता है ?

पीरजी-नहीं तुम को कुछ नहीं करना पड़ैगा, हमको ही चालीस रोज़ तक एक जगह बैठकर बड़ा भारी तप करना होगा।

मां-बीस दिन तो इसके व्याह के ही रहगये हैं, अब तो जिस तरह होसके इसके व्याह से पहले ही अच्छी करदो, मै तुम्हारा बड़ा अहसान मानूंगी और कभी नहीं भूलूंगी।

पीरजी–अच्छा तो जल्दी तो तब आराम हो सकता है जब कुरबानी चढ़ाई जावे, पर तुम हिन्दू लोग तो नासमझ होते हो, किसी बात पर एतिक़ाद ही नहीं लाते हो।

मां–नहीं जी मेरा तो तुम्हारे ऊपर पूरा २ एतिक़ाद है, मै तो जो तुम कहोगे सोही करूंगी।

पीरजी–अच्छा, तू तो बेचारी बहुत भली औरत मालूम होती है, जा २५) रुपये लादे। हम आप ही जीव की कुर्बानी चढा देंगे और तेरी लड़की को भली चंगी कर देंगे।

मां–अच्छा लाती हूँ, पर मेरी बेटी ब्याह से पहिले अच्छी हो जाय।

दुलारी–अम्मा होशकर, क्या कर रही है तू जो जीव हत्या कराने को तय्यार हो गई है।

मां–बेटी तेरी जान बचाने को ही यह सब कुछ करना पड़ रहा है।

दुलारी–मै तो भली चंगी हूँ, मुझे क्या बचाना है और हत्या करने से तो किसी की भी जान नहीं बच सकती है बल्कि और ज़्यादा पाप में फंस जाती है।

पीरजी–बीबी तुम इस लडकी की मत सुनो, इसमें तो वही भूत बोल रहा है और धोका देकर टलाना चाहता है। तुम ही सोचो कि जान के बदले जान नहीं दी जावेगी तो तुम्हारी लड़की की जान कैसे बच सकेगी।

मां–नहीं जी मै इसकी बात कब सुनती हूँ, जान के बदले जान तो देनी ही पड़ती है।

इतने मे रामप्रसाद और उसका लड़का सब सामान लेकर आगये।

पीरजी--खुल गया लाला साहब सब मामला, जिन्नो का राजा आशिक होरहा है तुम्हारी लड़की पर तो।

रामप्रसाद-तो क्या करना होगा ?

दुलारी--पिताजी, अपनी बेटी के विषय मे इस बुड्ढे पापी की इन निर्लज्ज बातों को सुनकर क्या आपको ग़ैरत नही आती है जो फिर भी उस ही से पूछते हो क्या करना होगा ?

पीरजी-देख भी ली लालाजी तुमने इस भूतों के राजा की दिलेरी।

रामप्रसाद-अच्छा तो आपने इसका उपाय क्या सोचा है ?

पीरजी-ज़रूरत तो चिल्ला खैंचने की थी, पर इसका ब्याह नज़दीक आगया है इस वास्ते अब तो हम अगली जुमेरात को बड़े पीर साहब की क़बर पर रोशनी करके उन्ही को मनावेंगे, और उन्हीं के ज़रिये इस जिन्न को क़ाबू में लावेंगे। इसमे कुछ ज़्यादा ख़रच भी नही करना होगा।

रामप्रसाद-तो भी कम से कम कितना रुपया लग जायगा।

पीरजी-इस वक्त तो तुम सिर्फ दस रुपये दे दो ताकि इसलाम नगर से क़व्वाल बुलालें और फ़रश फरूश का सामान करलें, इतने तुम एक जोड़ी नक्क़ारों की तय्यार करालो।

दुलारी की मां-(अपने पति से) हाथ जोड़कर कहदो कि

नक्कारे भी वह ही तय्यार करालें, इनसे पूछकर उनके दाम भी दे दो और यह दस रुपये भी दे दो।

रामप्रसाद–मेरे पास तो इतने रुपये नहीं हैं जो दे दूं।

दुलारी की मां–नहीं होंगे, अच्छा पीरजी मैं दूंगी यह सब रुपये तुम अपना काम शुरू करो। जो सौ पचास के ख़र्च से लड़की की जान बच जाय तो कौन बड़ी बात है, उसके ब्याह के वास्ते जो यह हज़ारों का ख़र्च हो रहा है तो क्या उसकी जान बचाने को इतना भी न हो सकेगा? यह कहकर उसने बीस रुपये लाकर रामप्रसाद के हाथ पर रख दिये और कहा कि अब तो यह दे दो फिर जो कहेंगे दिये जावेंगे।

दुलारी–(मन ही मन) कहो पुरुषो तुम इन अपनी महा-मूर्ख स्त्रियो के गुलाम हो या यह तुम्हारी गुलाम हैं, और तुम्हारा सारा गृहस्थ इनकी नीचता और मूर्खता के अनुसार चलता है या तुम्हारी ऊंचता और बुद्धिमत्ता के अनुसार, भुगतो पुरुषो भुगतो, जैसा करो वैसा भुगतो। तुम तो स्त्री जाति को अपनी जूती के नीचे रखने के वास्ते कन्याओं को डला पत्थर बनाते हो और बुद्धिहीन रखना चाहते हो परन्तु फल इसका यह होता है कि तुमको स्वयम ही उनकी जूती के नीचे रहना पड़ता है और उन ही बुद्धिहीनों का नाच नाचना होता है। पर तुम तो फिर भी नहीं शर्माते हो और कन्याओं का उचित सन्मान करना नहीं चाहते हो। फिर दुलारी ने सन्मुख होकर कहा कि पिता जी मां तो नहीं समझती है पर तुम भी जान बूझकर क्यों यह रुपया बर्बाद करते हो?

रामप्रसाद–बेटी तेरी मां, मेरी कुछ नहीं चलने देती है,

इस वास्ते लाचार हूं। अपनी समझ की तो मैं कुछ भी नहीं कर सक्ता हूं।

पीरजी-अच्छा तो मै जाता हूं।

मां-और यह जो इतनी सामग्री मंगाई है इस का क्या होगा ?

पीरजी-इनसे तो मंतर पढ़ पढ़कर गंडा वनाया जायगा, जिस से तुरन्त ही संकट दूर होना शुरू हो जावेगा पर वह तो घंटो का काम है।

मां-अच्छा तो यह काम तो करते ही जाओ, मै हाथ जोड़ू हूं तुम्हारे आगे, अपनी बेटी समझकर करते जाओ।

पीरजी-नहीं अब हम नहीं ठहर सक्ते हैं, तुम्हारे मर्दों को एतिक़ाद नहीं है हम पर।

मां-(पैरों पड़कर) तुम इनके कहने पर मत जाओ, इनको क्या समझ इन बातों की।

पीरजी-नहीं अब हमारा ठहरना नहीं हो सक्ताहै।

मां-(अपने पति से) तुमही कहदो, यह काम तो करते ही जावै, खुशामद करके ठहरालो नहीं तो पछताओगे, और यह बीस रुपये तो देदिये होते, इन्हें हाथ में लिये क्यों खड़े हो। यह कहकर दुलारी की मां ने वह बीस रुपये अपने पति के हाथ में से झटक कर पीरजी को देदिये, और बुड़बुड़ा २ कर कहने लगी कि यह घर यूंहीं तो डूबा है, अगर यह ऐसे न होते तो हम इस हाल ही को क्यों पहुंचते। फिर हाथ जोड़कर

पीरजी से कहा कि तुमही दया करके इस डूबते बेड़े को थांभ लो और यह सब सामग्री घर लेजाकर गंडा बनादो।

पीरजी-अच्छा बीबी तू बहुत नेक औरत मालूम होती है। तेरे कहने से हम तेरा काम अपने घर पर ही करदेंगे। उठालो भाई खुदाबख़्श यह सब सामान (रामप्रसाद से) क्यों लाला साहब अगर आप कहें तो यहीं रहनेदें?

मां-इन से क्या पूछो हो, इन्हें अक़ल होती तो यह घरही क्यों बिगड़ता।

दुलारी-पिता जी गुस्सा मत करना, जैसी उसकी बुद्धि है वैसा ही कह रही है। स्त्रियों को मूर्ख रखने में तो मूर्खता की ही बातें सुननी पड़ैंगीं और घरके सब काम भी मूर्खता के ही होते रहेंगे। कांटेदार वृक्ष के लगाने से तो कांटे ही चुभैंगे, मीठे २ आम नही मिल सकेंगे।

इतने में पीरजी सब सामग्री लेकर चल दिया। दुलारी की मां उसके पीछे २ दरवाज़े तक गई और ख़ुशामद करने लगी कि तुम इनके कहने सुनने पर कुछ भी ख़याल मत करना, और मेरी लड़की के बचाने का पूरा पूरा उपाय करना और जितना ख़र्च चाहिये मुझ से मंगा लेना।

पीरजी-कुरबानी के २५) रुपये अभी तक तुमने नहीं दिये हैं, हमने तो जानबूझ कर ही तुम्हारे मर्दों के सामने नहीं मांगे हैं।

इस पर दुलारी की मां ने २५) रुपये भी लाकर उसको दे दिये।

१२—ब्याह की तय्यारियां।

पीरजी के चले जाने के वाद रामप्रसाद ने अपनी स्त्रीकोवहुत कुछ समझाया जिससे उसको भी यह ही निश्चय होने लग गया कि दुलारी को भूत प्रेत नहीं है वलिक किसी ने वहका रक्खा है। इसही से अव वह रात दिन दुलारी को समझाती थी, रोरो प्यार जताती थी, भूखी प्यासी रहकर दिखाती थी और वार २ जाती थी, परन्तु दुलारी पर इसका कुछ भी असर नही होता था, वह तो कुछ भी जवाव नहीं देती थी और अपने ही ध्यान में लगी रहती थी। उसकी मां अव किसीको भी उसके पास नही आने देती थी, स्वयं कड़ा पहरा रखती थी। इस ही के साथ ब्याह की भी तय्यारियां होती रहती थी, अव तो उसकी ननंद और फुफस भी आगई थीं और हर वक्त ब्याह का ही काम पसरा रहने लग गया था।

रामप्रसाद की वहन सुन्दरी की वावत तो हम पहिले ही लिख चुके हैं कि वह वहुत वड़े अमीर घर ब्याही गई थी, पर उसकी वूवा गेंदो की ससुराल ऐसी अमीर नही थी और वह वेचारी तो वालपन से ही विधवा होगई थी, सन्तान भी उसके कोई नही थी, चार पांच हज़ार रुपये की नक़दी पल्ले जरूर थी जिसके ब्याज से ही वह अपना गुज़ारा किया करती थी, इनके आते ही दुलारी की मां ने इस अपनी बूढ़ी फूफस की खूब खुशामद करनी शुरू की। ब्याह का रत्ती २ काम सव उस ही को पूछ पूछकर करने लगी और हर वक्त यह ही कहने लगी कि अव की लाज तो वूवाजी तुम्हारे ही थामे थमेगी, नही तो तुम्हारे भतीजे के पास तो कुछ भी नहीं रहा है। वह तो कोरा

कहकर मेंखड़ा है, गेंदो उसकी इन सब बातों को अव्वल तो चुपचाप सुनती रही, फिर आहिस्ता २ यह कहने लगी कि मेरे पास क्या है जो मैं देदूं। इस पर दुलारी की मां ने कहा नहीं बूवाजी है तो तुम्हारे पास सब कुछ, पर तुम्हें तो यह डर है कि रुपये वापिस नही मिलेंगे, पर बूवा जी तुम्हारा भतीजा तो ऐसा नही है जो तुम्हारे रुपये रख ले, सो घर मारेगा और तुम्हारे रुपये देगा। इस प्रकार की बातें बनाकर आखिर को उससे एक हज़ार रुपये ले ही लिये।

अब उसने सुन्दरी को भी ताने मारने शुरू करदिये कि वह तो अमीर घर जाकर और राज पाट पाकर अपने ग़रीब भाइयों को बिल्कुल ही भूल गई है। दुनियां में ऐसी २ बहनें भी तो हैं जो भाइयों पर बार बार पानी पीती हैं, दुख सुख में सब तरह का सहारा लगाती है और यह तो लखपति करोड़ पति बहन है, ऐसी बहिन तो अगर सारा ही ब्याह अपने पाससे करदे तो क्या कुछ घाटा आता है ? भाई भतीजों की मुहब्बत हो तो सबही कुछ हो सकता है, पर आजकल कौन किसी की परवाह करता है, दुनिया सब अपने मतलब की है, कोई किसी का नहीं है, पर एक बात मैं भी कहे देती हूं, कि भाई भतीजे भी ऐसे नहीं हैं जो बहन का पैसा रखलें, तन बेचैंगे, जान बेचैंगे, और जो लेंगे वह कौड़ी २ चुकावेंगे।

सुन्दरीइन सब बातों को चुपचाप सुनती रही और कुछ भी न बोली, पर जब वह सुनते २ तंग आगई तो मौक़ा पाकर कहने लगी कि भाभी तू जो मुझे सुना सुनाकर यह बात कह रही है, तो क्या मै अपने आपही यह सब हाल नही देख रही हूं, पर करूं क्या मै तो कुछ कर ही नहीं सक्ती हूं। बेशक मेरी

सुसराल वाले लखपती भी हैं और करोड़पती भी हैं जो कहीं सब ही कुछ हैं, पर वे स्त्रियो के हाथ में तो एक पैसा भी नहीं देते हैं, स्त्रियों को तो दमड़ी के साग के वास्ते भी दूकान पर ही कहला कर भेजना पड़ता है। फिर बोल मै क्या करदूं और किस तरह अपना दिल चीरकर दिखा दूं।

दुलारी की मां—अच्छा बीबी जो तेरे पास रुपया नहीं है तो ज़ेवर तो है, ज्यादा नही होगा तो भी पचास हज़ार का तो होगा, जो देना हो तो उस ही मे से दे दे। मै उसे किसी के यहां रखकर रुपया ले आऊंगी, और ब्याह का काम चलाऊंगी, फिर जब आठ दस दिन पीछे दुलारी अपनी सुसराल से वापस आ जायगी, और पचासों हज़ार का ज़ेवर लायगी, तव उसमें से कोई ज़ेवर रख आऊंगी और तेरा ज़ेवर ले आऊंगी। फिर गौने से पहले २ तो दुलारी का ज़ेवर भी छुड़ा ही दूंगी॥ अपनी भाभी की यह वात सुनकर सुन्दरी को कुछ जवाव न आया, इस कारण लाचार एक ज़ेवर निकाल कर देना ही पड़ा, जिसको गिरवीं रखकर उसकी भाभी वारह सौ रुपये ले आई।

अव गुमानीलाल की सुनिये कि यदि रामप्रसाद ने १० मन घी कहा था तो वहां से २५ मन आगया, इसही तरह १५ बोरी खांड को लिखा था तो ३० वोरी भेजदीं। आटा अगर ५० बोरी मंगाया था तो २०० वोरी भेज दिया और लिख भेजा कि यह सब माल बहुत सस्ता मिल गया है इस वास्ते ज़्यादह भिजवा दिया है, जो बच रहैगा उसको बेच डालना। नफ़ा ही रहेगा और अगर न बेचना चाहो तो यहां भेजदेना।

सोना चांदी गोटा ठप्पा और कपड़े लत्ते की बावत हम

पहिले ही लिख चुके हैं कि गुमानीलाल के मुनीब ने दिसावर से बहुत ही ज़्यादा ख़रीदवा दिया था, इस प्रकार सब ही सामान बहुत ज़्यादा होगया, अब रामप्रसाद की स्त्री की आंखें फूलीं और बोली कि लड़की के भाग से सामान तो सबकुछ होगया है और वर भी बढ़िया ही मिल गया है, तो अब व्याह भी बढ़िया ही होना चाहिये।

रामप्रसाद–चाहिये तो सब कुछ पर पीछे से इस सामान के दाम कहां से चुकावेंगे।

स्त्री–तुम्हारी तो सदा यहही आदत रही है, मौक़े को तो देखा नहीं करते हो और इधर उधर की सोच करने लगजाया करते हो। भगवान पर भरोसा रक्खो, वह ही सब कारज साधने वाला है, हमारी क्या ताक़त थी जो इतना सामान इकट्ठा करलेते, यह तो उसही की कृपा हुई है, वह ही भगवान दाम भी चुकती करादेगा, वह तो ग़रीबों का प्रतिपालक दीनानाथ है।

इस प्रकार स्त्री के आग्रह से आहिस्ता २ आंख मीचकर बहुत ही ठस्से की तय्यारियां होनी शुरू हो गयीं और उन का यह बढ़िया सामान देखकर बाज़ार से भी माल उधार मिलने लग गया और बिरादरी के लोग भी कमर बांध कर काम काज में सहायता देने को आने लगे। होते २ हलद का दिन आ गया और बिरादरी की सब स्त्रियां उनके घर आ मौजूद हुईं, परन्तु जब मां ने दुलारी को हलदी चढ़ाने के वास्ते चौकी पर बिठाना चाहा तो उसने साफ़ इनकार कर दिया, और कह दिया कि मै पहले भी कह चुकी हूं और अब भी कहती हूं कि व्याह नहीं कराऊंगी। दुलारी की मां ने बूआ

ने दादी ने और कुटुम्ब की सब ही स्त्रियो ने उसको बहुत कुछ समझाया परन्तु वह एक न मानी। तब स्त्रियो ने उसको ज़बरदस्ती खींचकर चौकी पर बिठाना चाहा, परन्तु उस समय तो उसमें इतना बल आगया था कि वह सब ही स्त्रियों को धकेल देती थी और शेरनी की तरह गरज कर कहती थी कि तुमको शरम नहीं आती है जो स्त्री होकर भी स्त्री की सहायता नही करती हो, उन पर जो ज़बरदस्ती हो रही है उसको दूर हटाने की कोशिश नही करती हो, बलिक उलटा आप ही ज़बरदस्ती करने को खड़ी होगई हो।

स्त्रियां-बेटी, औरत की ज़ात तो परमेश्वर ने ऐसी ही नमानी बनाई है कि कुछ बोल ही नहीं सक्ती है, सिर नीचा करके सब कुछ सहन करनी पड़ती है, इस ही में औरत की इज्ज़त है और इस ही में उसकी बड़ाई है, और अपने व्याह सगाई के मामले में तो औरत की ज़बान ही नही उठ सक्ती है।

दुलारी-परमेश्वर ने तो औरत की ज़ात नमानी नहीं बनाई है परन्तु पुरुषों ने अपना ज़बरदस्ती से ही इसको नमानी बनादी है, उनके जुल्मों को सहते सहते ही तुम नमानी होगई हो, मनुष्य से पशु समान बनगई हो। चुपके चुपके सहन करना और सांस तक न खींचना ही अपना धर्म समझ बैठी हो।

दुलारी की यह बातें सुनकर बिरादरी की औरतें तो अलग हट गईं और आहिस्ता आहिस्ता टलकर घर चलदीं परन्तु कुटुम्ब की स्त्रियां बराबर डटी ही रहीं और पकड़कर जबरदस्ती हल्दी लगा देने को कहने लगीं। इस पर मां और बूआ आगे बढ़ीं परन्तु दुलारी ने दूर से ही ललकारदिया कि

ख़बरदार मेरे वदन को हल्दी मत लगाना मैं हर्गिज़ व्याह नहीं कराऊंगी। इस पर भी जब वह न मानीं और ज़बरदस्ती हल्दी लगाने ही लगीं तो दुलारी ने अपनी सगाई का सब मामला खोलकर उनको लजाना चाहा सुन्दरी और गेंदो को सब हाल सुनाया परन्तु वह तो शरमिन्दा होने के स्थान में उल्टी क्रोधित होगई और दौड़ी २ बाहर जाकर रामप्रसाद को बुला लाई और गुस्से के साथ कहने लगीं कि दुलारी ने तो आज हमको बिरादरी की औरतों के सामने दो कौड़ी का भी नहीं रक्खा है जो मुंह आया बका है, इसको तो कुछ भी ओपरा असर नही है, किन्तु इसका तो हद्‌डा ही खोया गया है। कुछ भी लाज शरम नही रही है (हाथ मलमल कर) हाय, हाय, भले घरों की लड़कियां क्या इस तरह बेहया बना करती हैं और अपने मां बापों को बदनाम किया करतीं है। कलयुग क्या आया हद ही हो गई अब तो।

रामप्रसाद-(लकड़ी दिखाकर) बोल क्या कहती थी तू, अब मेरे सामने बोल।

दुलारी-मैं कहती हूं कि स्त्री पुरुष को अधिकार है कि वह चाहे तो व्याह कराकर गृहस्थी बनजावे और चाहे ब्रह्मचारी बनकर धर्म में लग जावे, इसही अधिकार के अनुसार मैंने भी जनम भर ब्रह्मचारिणी रहने का निश्चय कर लिया है।

रामप्रसाद-अच्छी बात है, अब बताता हूं तुझे ब्रह्मचारनी बनना, तेरी मां तो तेरे सिर से भूत उतारने का उपाय करचुकी पर अब देख मै पल भर में ही सारा भूत उतारे देता हूं। यह कहकर उसने दुलारी को एकदम लाठियों से पीटना शुरू कर दिया और पीटता ही रहा जबतक कि दुलारी की मां और

बूआ दुलारी के ऊपर पड़कर अपने बदन पर ही वह लाठियां न खाने लगीं। इस मार से दुलारी बिल्कुल ही बेहोश होगई थी, इस कारण अब उसकी मां और बूआ ने उसके बन्दन को हल्दी लगाकर हल्दी चढ़ाने की रीति पूरी करही दी।

१३--कलई खुलगई।

एक दो दिन के बाद उस नगर में धरमपुर से एक बरात आई जिस में गुमानीलाल का मुंह लगा नौकर बारू भी आया और रामप्रसाद की ही बैठक में ठहरा। इस बारात में जो रंडियां आई थीं उनमें चांदतारा नाम की एक वह रंडी भी थी जो बरसो गुमानीलाल के यहां रहचुकी थी, पर अब दो चार महीने से चित्त से उतर गई थी। वह बारू को राज़ी करके फिर गुमानीलाल के मन चढ़ना चाहिती थी इस वास्ते वह भी सौ बहाने बनाकर बारू ही के पास आ ठहरी। बैठक की सब बात अन्दर हवेली में सुनाई देती थी और रात को तो साफ़ २ ही सुन पड़ती थीं, इस कारण बारू और उस वेश्या में रातको जो बातें हुईं वह रामप्रसाद और उसकी स्त्री ने सबकी सब सुनीं, जिनसे यह बात साफ़ साफ़ खुल गई कि गुमानी-लाल पहले दरजे का व्यभिचारी और दुराचारी है, जो वेश्यायें भी रखता है, शराब भी पीता है, मांस भी खाता है, कुटनियो के द्वारा घर गिरस्तनों को भी बुलाता है और अब दस हज़ार के बदले उत्तमचन्द की लड़की से भी व्याह कराना ठहराया है।

रामप्रसाद--बहुत बड़ा धोखा हुआ हमारे साथ तो।

स्त्री--मैं तो यूं कहूं कि हे भगवान् जैसा धोखा कमला ने

हमारे साथ किया वैसा उसके आगे आवे।

रामप्रसाद-कोसने के वास्ते तो सारी उमर पड़ी है, पर अब तो यह सलाह करलो कि कोई दूसरा वर ढूंढें या क्या करें।

स्त्री-तुम्हारी तो सदा उलटी ही बातें रही, रीति की तो कभी एक दिन भी न कही।

रामप्रसाद-तो फिर रीति की तुमही बता दो।

स्त्री-अभी कल परसों को तो बरात आने वाली है, सामान सब तय्यार ही हो लिया है जो बहुत करके सारा का सारा उनहीं की मारफ़त आया है, इस पर तुम कहते हो कि कोई दूसरा वर ढूंढें, दुनियां क्या कहेगी तुमको ?

रामप्रसाद-दुनिया चाहे जो कहती रहे पर लड़की की तो जान बच जायगी।

स्त्री-लड़की बेचारी की कौन पूछता है, वह बेचारी तो पहलेही से चिल्ला रही है, पागल तक होगई और धूआधू मार भी खा चुकी है पर सुनता कौन है उस बेचारी की (रोकर) बेटी तेरी क़िस्मत ! मेरा इसमें क्या बस।

रामप्रसाद-रोने धोने से कुछ नहीं होगा, सलाह करो अच्छी तरह होश करके।

स्त्री-लड़की को कुवे में धकेलने के सब बन्दोबस्त कर कराकर अब सलाह करने बैठे हो।

रामप्रसाद-अभी फेरे तो नहीं फिर गये हैं जिससे लाचारी हो गई हो।

स्त्री-लाचारी तो नहीं है पर बदनामी कितनी होगी, और मुश्किल कितनी पड़ैगी।

रामप्रसाद-तो थोड़ी देर के वास्ते बदनामी भी उठालो और मुश्किल भी झेल लो पर लड़की को तो कूवे में ढकेलने से बचालो।

स्त्री-क़िस्मत में किसी की कोई नही घुस सकता है, अच्छा वर ढूढने पर भी जो कोई ब्याह पीछे दुराचारी हो जाय तो कोई क्या कर सकता है।

रामप्रसाद-तो क्या देखती आंखो भी दुराचारी को ब्याहदें।

स्त्री-मर्दों के दुराचार का तो कही विचार होते देखा नहीं गया है।

रामप्रसाद-अच्छा तो तुम्हारी यह सलाह है कि दुलारी को इस ही के साथ ब्याह दें।

स्त्री-मेरी क्या सलाह होती, तुम अपना ब्योंत देख लो, और यह भी सोच लो कि दूसरा बर कोई मुट्ठी में तो रक्खा ही नही है, न मिला बरस दिन छेः महीने तक, तब तक यह सामान तो रक्खा ही नहीं रहैगा, दुबारा ही बनवाना पड़ेगा, पर बनवा भी लोगे दोबारा या नही यह सब अच्छी तरह सोच लो, अब भी भगवान ने नहीं मालूम किस तरह इकट्ठा करा दिया है, दुबारा तो क्या ही हो सक्ता है।

रामप्रसाद-तू तो दोबारा तय्यार होने को कहती है और मैं यह कहता हूं कि अगर फेरे न फिरे तो हमको तो गुमानीलाल ही जीता न छोड़ैगा; डिगरी के फैसले को रद्द करके

उसमें तो सारी जायदाद और घरवार नीलाम करावेगा, और माल असबाव की नालिश करके मुझे पकड़वाकर जेलखाने भिजवावेगा ।

स्त्री-तो एक काम करो, इन अपने लड़कों को तो ज़हर देते जाओ और मेरे गले में बागली बांध जाओ मैं अपना मांगूगी और खाऊंगी ।

रामप्रसाद-बड़े भारी जाल में फांसा है हमको तो इस गुमानीलाल ने, अब तो किसी तरह भी इस जाल में से निकास नहीं हो सकता है, (सांसभरकर) अच्छा बेटी तेरी क़िस्मत ! अब कुछ नहीं हो सक्ता है, अब तो उसही के साथ फेरे फेरने होंगे, कौन जानता है जो तेरी क़िस्मत से उसही के आचारण ठीक होजावें, और तुझे देखकर दूसरा व्याह कराना भी बन्द करदे ।

स्त्री-ऐसी क़िस्मत कहां है हमारी लड़की की ।

रामप्रसाद-ख़ैर, अब तो परमेश्वर के भरोसे पर फेरे फेरदो ।

स्त्री-मेरा तो मन पकड़ा गया, किस तरह हां करदूं, और फिर यह लड़की भी तो अपनी जान खोदेगी, जिसका सुनसुन कर ही यह हाल हो रहा है वह जब वहां जाकर अपनी आंखों यह सब बातें देखेगी तो ज़रूर ही मर रहैगी, हर्गिज़ भी जीती न बचेगी ।

रामप्रसाद-उसकी क़िस्मत, अब हम क्या करलें इस में ।

स्त्री-क़िस्मत तो है ही, पर अच्छा न हुवा उसके वास्ते ।

रामप्रसाद-अब कोई दूसरी सलाह हो तो वैसी कहदो, अभी कुछ नहीं बिगड़ा है।

स्त्री-मैने कभी दूसरी सलाह करी हो तो कहूं, मै तो हांजी हांजी करना जानती हूं, तुम मर्द हो जो तुम्हारी सलाह में आवे करो।

रामप्रसाद-अच्छा तो फिर हमारी सलाह तो यह ही है कि जो होगया सो होगया, अब इसमें कुछ हेर फेर करना ठीक नहीं है।

स्त्री-मै तो कुछ भी हेर फेर करने को नहीं कहती हूं, पर क्या करूं अन्दर वाला नहीं मानता है, देखती आंखों अपनी बच्ची को कुएं में ढकेलने का साहस सा नहीं होता है।

रामप्रसाद-कैसी चुड़ैल से पाला पड़ा है जो न इस तरह मानती है और न उस तरह।

स्त्री-मुझ पर क्यों नाहक़ गुस्सा करते हो, जो तुम्हारी मर्ज़ी में आवे सो करो, मैं नहीं बोलूंगी अब किसी भी बात में।

१४--दुलारी निकल भागी।

जिस दिन बारात आने वाली थी उससे पहिली रात को रत जगा हुवा। बिरादरी की सब ही जवान स्त्रियां आ पहुंची और नाच गाकर खूब धमा चौकड़ी मचाने लगीं। वहीं कुछ स्त्रियां अलग बैठकर इस प्रकार बात करने लगीं।

कृपादेई-देखोजी दुनियां का तमाशा, मां बाप तो धन के

लालच में अपनी बच्ची को महा कुकर्मी बुड्ढे के साथ ब्याह रहे हैं, लड़की इससे बचने के लिये सदा को कारी रहने का प्रण कर रही है और इस तरह भी न बचा जाय तो जान तक खो देने को तय्यार हो रही है, और यह बिरादरी की औरतें अपना अलग राग अलाप रही हैं। खूब आनन्द के साथ नाच गा रही हैं, बुड्ढा मरे व जवान अपने हलवे मांडे से काम, इनकी बला से चाहे कुछ होता रहे, इन्हें तो अपने नाचने कूदने से ध्यान।

गुणीकी मां-हमरा तो सच मानों आने को भी मन नहीं चाहता था, पर करें क्या बिरादरी में तो बिन आये भी नहीं सरता है, नहीं तो यह क्या कोई ब्याहों में ब्याह है जो इस तरह खुशियां मनाई जावें।

कृपादेई-हमें तो भगवान जाने रुलाई आती है उस बेचारी की दशा पर।

पारो की नानी-किसी से कहने की बात नहीं है, पर मैने पक्के तौर पर सुना है कि वह अपनी जान खो देगी पर उसके साथ फेरे नहीं लेगी।

कृपादेई-ताँ क्यों जी क्या उसकी जान बचने का कोई उपाय ही नहीं हो सक्ता है?

पारो की नानी-हो क्यों नहीं सकता है, कोई हिम्मत कर के चुपके से साथ लेजाकर अपने मकान में छिपा ले, और बारात चली जाने के पीछे निकाल दे। क्यो गुणी की मां, तू लेजा इसको अपने साथ, तुम्हारा तो मकान भी ऐसा बड़ा है जिसमें दस आदमी छिप रहें। तोभी पता न लगे,

गुणी की मां-कृपादेई तू भी जान बूझकर ऐसी बात कह दिया करती है, मेरी सास को नहीं जानती जो एक बाल भी सिर पर नहीं रहने देगी और चुट्टिया पकड़ कर घर से बाहर निकालेगी. नहीं तो मुझे क्या इन्कार था? मै तो दुलारी को अपने हृदय में छिपा लेती।

कृपादेई-हां, वह तो पूरी जल्लाद है, क्या जाने तू किस तरह उसके साथ निबाह करती है।

पारोकी नानी-मैं ही अपने घर रखलेती, पर मेरा घर तो ऐसे नगड़ में है, जहां पचासों आदमी रहते हैं, इस वास्ते वहां तो किसी तरह भी छिपकर नहीं रहा जासकता है, हां कृपादेई अपने घर ले जावे तो ठीक हो, इनका घर दूर भी है और अलग को भी है; वहां तो कोई कानों कान भी नहीं जानेगा, कौन आया और कौन गया।

कृपादेई-चाची तू तो नहीं जानती है पर गुणी की मां तू ही बता मेरा कुछ बस चलै है अपने घरमें। वेहया बनकर क्या जाने किसतरह दो दिन के वास्ते अपनी मांको देखने आजाती हूं, सो उसके भी चलते सांस हैं, आज मरी कल दूसरा दिन फिर कौन बुलावे और कौन आवे।

गुणी की मां-हांजी इसकी भावज तो वड़ी ही ज़हरी है, काला नाग है वह तो, हर वक्त फुंकारती ही रहती है, परमेश्वर बचावे उससे तो, अपनी सास को तो उसने सचमुच ही ठीकरे में पानी पिला रक्खा है, तब इसको तो वह क्याही समझती है।

पारो की नानी-अच्छा तो एक बात मेरी समझ में आई है जो कृपादेई भी पसन्द करले, यह जो मुन्शान रहती है तुम्हारे

पड़ौस में, ख़बर नहीं ब्राह्मणी है या बनायानी है या कायथनी है उसके यहां कोई भी नहीं आता जाता है। बेचारी इतनी बड़ी हवेली मे सारा दिन अकेली हां पड़ी रहती है, उसके यहां इसको छोड़ दो, कोई स्वप्न में भी तो नहीं जानेगा कि वहां छिप रही होगी।

कृपादेई-हां, सलाह तो अच्छी बताई, वह तो निस्संदेह बहुत ही भली औरत है, दुलारी को देखते ही छाती से लगा लेगी और किसी को भी ख़बर न होने पावेगी।

इस तरह यह सलाह ठहरकर उन्होंने चुपके से दुलारी को अपने पास बुलाया और यह सब मामला सुनाया, जिस पर वह राज़ी होगई और भोर के तड़के सब स्त्रियों के जाने से पहले ही कृपादेई उसको अपने साथ लेगई, पर उस वक्त तक मुन्शन के घर का दरवाज़ा नहीं खुला था, इस कारण गली में ठहरना पड़ा और कृपादेई को बदनामी का डर मालूम होने लगा, तब दुलारी ने उसको अपने घर चली जाने के वास्ते कहा और यक़ीन दिलाया कि मै बिल्कुल नही घबराऊंगी और दरवाज़ा खुलते ही मुन्शन के घर चली जाऊंगी और अपनी सब व्यथा कहकर उसको राज़ी भी करलूंगी। इसपर कृपादेई उसको उसही गली के एक टूटे से ख़ाली मकान में बिटाकर चली गई और दर्वाज़ा खुलने पर दुलारी मुन्शन के मकान में पहुंच गई, जिसको देखकर वह चकित सी होकर पूछने लगी कि तू कौन है और सुबह ही सुबह कैसे आई है।

दुलारी-मैं अत्यन्त दुखारी मुसीबत की मारी तुह्मारी शरण लेने आई हूं।

मुन्शन-अच्छा तो मै उनके वास्ते चाय बनाकर भेज दूं तब सुनूंगी तेरी सब बात। इतने तू एक तरफ को होकर उस मकान में जा बैठ। फिर चाय से निबट कर दुलारी के पास आई और उसकी सब व्यथा सुननी चाही।

दुलारी-जो तुम्हे रोटी बनाने की भी जल्दी हो तो वह भी बना लो, मै बैठी रहूंगी, मुन्शी लोगो के यहां रोटी जल्दी ही बन जाती हैं इस वास्ते कहती हूं।

इस पर मुन्शन ने रोटी बनाई, मुन्शी जी को खिलाई और जब वह कचहरी चले गये तो दुलारी के पास आई और कहने लगी कि चल पहले रोटी खाले फिर बात करना।

दुलारी-मै नहीं जानती तुम्हारे हाथ की रोटी खा सक्ती हूं या नहीं। इस पर मुन्शन पूरियां उतार लाई, दुलारी को खिलाई फिर पीछे आप रोटी खाकर उसकी व्यथा सुनने को आई।

दुलारी-मेरे मां बाप मेरा व्याह ऐसे के साथ करना चाहते है जो महा दुराचारी व्यभिचारी है और उमर में भी ४० बरस से कम नहीं है। आज ही उसकी बरात आने वाली है, पर मैं हर्गिज़ भी उसके साथ व्याह नहीं कराऊंगी, जनम भर क्वारी रहकर सारी उमर स्त्री जाति के उद्धार में ही बिताऊंगी, इस ही वास्ते घर से निकल आई हूं और तुम्हारी शरण लेना चाहती हूं।

मुन्शन-(घबराकर) बड़ा ढेठ किया है तू ने तो।

दुलारी-अपने कारण मै किसी को भी कुछ दुख देना नहीं

चाहती हूं, इस ही से हाथ जोड़कर कहती हूं कि अगर मुझे यहां ठहराने में तुमको ज़रा भी कोई खटका या घबराहट हो तो मै तुरन्त ही यहां से चली जाऊं।

मुन्शन-नहीं अब तो मै तुझे हर्गिज़ भी नहीं जाने दूंगी, चाहे कुछ हो जाय, मैं तो सिर्फ़ यह सोचती थी कि ऐसा न हो मुन्शीजी को ख़बर हो जाय और वह नाराज़ होने लग जांय, उनका कुछ ऐसा ही स्वभाव है।

दुलारी-हैं, हैं, तुम तो कांप रही हो, पर तुम इतना क्यों घबराती हो, मैं तो अभी चली जाती हूं। यह कह कर वह जाने लगी,।

मुन्शन-(हाथ पकड़कर), नहीं अब तो मैं नहीं जाने दूंगी, अपनी जान पर खेल जाऊंगी और तुझे बचाऊंगी।

दुलारी-मेरे ठहरने से तुम पर कोई आफ़त आती ज़रूर नज़र आती है इस वास्ते मेरा ठहरना बिल्कुल भी मुनासिब नहीं है।

मुन्शन-नहीं आफ़त क्या आनी है मुझे तो वह बात बात में ही मार छेत लेते हैं, जो इस बात में भी मार लेंगे तो क्या हो जायगा, परसों दाल में नमक ज़्यादा होगया था बस इतनी ही बात पर देगची चूल्हे से उतारकर मेरे सर पर दे मारी (सिर पर से ओढना उतारकर) देखले कैसे बड़े २ फफोले पड़ रहे हैं।

दुलारी-हाय हाय, तुम्हारी तो सारी पीठ और गर्दन जली पड़ी है।

मुन्शन-मेरे साथ तो नित्य यह ही रहता है। यह इतनी बड़ी हवेली है जिसमें सारा दिन अकेली पड़ी रहती हूं, कोई पंछी भी यहां आकर नहीं फटकता है, इसमें पड़े २ जब बहुत ही जी घबराता है और क़िस्मत की मारी ऊपर चढ़कर गली मुहल्ले की तरफ़ झांक लेती हूं तो इतनी सी बात पर ही मारते मारते भुस बना देते हैं और अधमूई सी कर देते हैं।

दुलारी-दस बजे कचहरी जाते होंगे, और चार बजे आते होंगे। इस तरह तुमको तो छै घन्टे तक बिल्कुल अकेले ही रहना होता होगा।

मुन्शन-नहीं जी, छै घन्टे क्या, वह तो तड़के ही उठकर बाहर चले जाते हैं, रोटी के वक्त आते हैं और खाते ही चले जाते हैं। फिर कचहरी से तो चार बजे ही आजाते हैं पर घर तो रात को नौ दस बजे ही आते हैं और कभी नहीं भी आते हैं। कहां रहते हैं और क्या करते हैं, इसकी बाबत मैं अपनी ज़बान से कुछ नहीं कहना चाहती हूं।

दुलारी-हा स्त्री जाति, तेरी तो बहुत ही भारी दुर्दशा हो रही है। यह कह कर वह उठकर चलने लगी।

मुन्शन-(हाथ पकड़ कर) मैं कह चुकी हूं, तुझे हर्गिज़ नहीं जाने दूंगी। में ऐसे बाप की बेटी नहीं हूं जो शरण आये को जाने दूं।

इस प्रकार बातें करते २ पांच बज गये और अचनाचक किसी काम के लिये मुन्शीजी अन्दर घर में चले आये और दुलारी को देखते ही पूछने लगे कि यह कौन है जिससे तू इस तरह घुल २ कर बातें कर रही है।

मुन्शन-(घबराकर) पड़ौस की लड़की है वैसे ही चली आई है।

मुन्शी-नहीं कुछ दाल मे काला ज़रूर है, साफ़ साफ़ बता नहीं तो तू मुझे जानती है।

मुन्शन-अच्छा तो चाहे मारो चाहे छोड़ो सच्ची बात तो यह है कि इस लड़की का बाप एक बुड्ढे से इसका ब्याह कर देना चाहता है, यह उससे ब्याह कराना चाहती नहीं है इस वास्ते छिपकर यहां आ बैठी है।

मुन्शी-अच्छा तो यह यह लड़की है जो बाबू गुमानीलाल मे ब्याही जाने वाली है, ऐसे करोड़पति को छोड़कर और किसको पसन्द किया है इसने ? सच कहा है औरत की ज़ात बड़ी ही नीच होती है, इस वास्ते नीच ही को पसन्द करती है, फंस गई होगी कहीं किसी नीच से, तभी तो भागी २ फिर रही है, और हां इसके ऊपर तो देवी भी आया करती है, यह तो वैसे भी पूरी खिलार है। पर हरामज़ादी मैं तुझसे यह पूछता हूं कि तू ने किस तरह नाता गांठा इससे, जो सारे शहर को छोड़कर तेरे ही पास आई।

मुन्शन-मेरे साथ बेचारी का क्या नाता होता, मैं तो आज से पहले इसको जानती भी न थी, किसी ने बता दिया होगा कि यहां छिपजा, तब चली आई, आखिर कहीं तो जाती ही।

मुन्शी-सच कह गये हैं अगले लोग कि तिरिया चरित्तर को कोई भी नहीं जान सकता है, स्त्री को चाहे सात तालों के अन्दर बन्द रक्खो तो भी वह बदमाशी किये बिदून नहीं रह सक्ती है।

मुन्शन-ऐसा मैंने क्या क़सूर किया है जो इतना गुस्सा कर रहे हो।

मुन्शी-क़सूर नहीं किया है जो ऐसी बद्चाल लड़की से यारयाना गांठा है और घर में छिपाया है।

मुन्शन-देखो जी तुम मुझे जो चाहे सो कहलो, मै तुम्हारे बस में हूं, पर किसी बेगानी लड़की को कुछ कहोगे तो जान खोदूंगी, और कुछ हो अब तो मै इसे शरण दे चुकी हूं, इस वास्ते कहीं न जाने दूंगी।

मुन्शी-और जो इसके पकड़ने को थाने की दौड़ चढ़ आई तो उनसे भी लड़ियो, बद्माश कहीं की, बड़ी निकली है शरण देनेवाली।

मुन्शन-देखो मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ूं हूं, पैरो पड़ूं हूं, जो होगया सो होगया, अब तो मै इसको शरण दे चुकी हूं, इस वास्ते जिस तरह हो सके इसको निभाओ।

मुन्शी-(मन ही मन) माल तो बढ़िया है और आप ही आप परमेश्वर ने भेजा है, पांच चार दिन तो कहीं भागकर जा भी नहीं सक्ती है और न कुछ किसी प्रकार का शोर ही मचा सक्ती है इस वास्ते थाम ही क्यों न लू (अपनी स्त्री से) अच्छा जो तुझे अपनी बात ही निभानी है तो इसको बाहर की कोठरी में बिठाकर बाहर का ताला बन्द कर देंगे, वहां खाना पानी दे दिया करेंगे, यहां ज़नानों में इसका रहना तो हम हर्गिज़ भी मंजूर नहीं कर सक्ते हैं, उसमें तो सौ फ़ज़ीहते हैं।

मुन्शन-(मुन्शी जीकी नीयत ख़राब देखकर) देखो, आज

तक मैंने तुम्हारा सामना नहीं किया है तुम रंडियों में जाते हो और यहां भी बुलाते हो, क़ाबू लगे तो चूहड़ी चमारी तक को भी पिलच जाते हो, मैं यह सब बातें अपनी आंखों देखती रही हूं और कभी कुछ भी नहीं बोली हूं, पर आज मुझे बोलना पड़ेगा, और बोलना क्या अगर तुमने ज़रा भी कोई बेजा बात करी तो अपनी जान पर ही खेल जाना होगा।

मुन्शी-ओ हो, औरत ज़ात होकर तुझे इतना हौसला, अब तू हमारा सामना करेगी और हमारे चाल चलन को मुंह पर लाने के जोग बनेगी, तेरी यह मजाल, यह कह कर वह उसको तड़ा तड़ जूतों से पीटने लग गया, और दुलारी मौक़ा पाकर तुरन्त ही बाहर निकल आई, और मन ही मन यह कहती चली गई कि पुरुषो तुम पर तो किसी भी प्रकार का कोई अंकुश नहीं रहा है, जिससे तुम्हारा तो बहुत ही ज़्यादा पतन होगया है, घर की स्त्री को पैर की जूती बनाकर उसको अपने आचार व्यवहार पर रोक टोक करने का अधिकार न देकर तुम तो बिल्कुल ही उद्दंड होगये हो और पशुओं से भी ज़्यादा नीचे गिर गये हो।

१५-बारात आपहुंची।

पाठक अब ज़रा रामप्रसाद के घर का भी हाल सुनिये कि तड़क में जब कंगना बांधने के वास्ते दुलारी की खोज हुई और वह न मिली तो बड़ी भारी चिन्ता हुई, कुनबे की सब ही स्त्रियों ने घर का कोना २ ढूंढ़ मारा पर वह कहीं भी न मिली, हां इतना पता ज़रूर लगा कि कृपादेई और गुणी की मां के साथ बातें कर रही थी और पारो की नानी भी वहां बैठी थी, कई

स्त्रियां दौड़ी २ उनके यहां भी गई पर उन सब के यहांसे तो यह ही जवाब मिला कि हम तो उसको वहीं बैठी छोड़ आई थीं, आखिर जब कहीं भी पता न चला तो दुलारी की मां ने धड़ाधड़ अपनी छाती पीट ली और स्त्रियों को कोस २ कर कहने लग गई कि उत्ती रांडों ने बहका २ कर नहीं मालूम मेरी लड़की में क्या भूत भर दिया है और कहां छिपा दिया है, नहीं तो वह राम की बंदी तो एक से दो भी कहना नहीं जानती थी, जो मै कहती सो ही मानती थी, ऐसी भोली लड़की तो किसी की हो ही लो, पर इन नाशगई खसम-पीटी रांडों का सत्यानाश जाय जिन्होंने उसे बहकाया है। हाय, मेरी तो उन्होंने सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी, अब मैं किस तरह किसी को मुंह दिखाऊंगी, मै तो अब कूये में डूब कर ही मरूंगी, यह कहती २ वह बाहर की तरफ़ दौड़ी। स्त्रियों ने उसको बड़ी मुश्किल से पकड़ा और समझाया कि तू तो बाल बच्चो वाली है, तुझे तो ऐसी बात हरगिज़ भी नहीं विचारनी चाहिये।

दुलारी की मां–हाय, मैने कैसी २ कोशिश से ऐसा बढ़िया वर ढूंढा था, कैसा २ ज़ुर काट कर दात दहेज़ तय्यार किया था, कैसा बढ़िया पत्तल परोसा बनाया था, सब मिट्टी में मिला दिया, एक दम पानी में बहा दिया, हाय मेरी कोख से ऐसी जड़ पाड़ा लड़की पैदा हो, आग न लग जाय ऐसी कोख को। यह कह कर उसने अपना पेट ही पीट लिया।

इधर जब रामप्रसाद को यह ख़बर लगी तो वह एक दम दौड़ा हुआ अन्दर आया, पर अपनी स्त्री को रोती पीटती देखकर बाहर ही लौट गया, सिर पीटकर चारपाई पर जा पड़ा और पड़ा पड़ा इधर उधर करवटें ले ले कर यह ही

कहने लगा कि लुट गया लोगो में तो, गया में तो दोनों ही जहान से, मेरा तो धर्म ईमान भी गया और जान माल भी गया, अब तो मैं जेलखाने में ही पड़ा पड़ा सडूंगा और अपने स्त्री पुत्रो से घर घर भीख मंगवाऊंगा, हाय दुलारी क्या तुझे इस ही लिये पाली पोसी थी कि तू इस तरह धोखा दे जायगी, बाप की पगडी में ख़ाक डाल कर जायगी, हाय तू मर क्यों न गई पैदा होते ही, तुझे प्लेग क्यों न खागई, हैज़ा क्यो न होगया, मुझे यह दिन तो न देखने पड़ते, अब किस तरह किसी को मुंह दिखाऊंगा, मुझे तो कोई दो पैसे का ज़हर लादे जिसे खाकर सो रहूंगा और फिर उठने का नाम भी नहीं लूंगा। लोगों ने उसको बहुत समझाया, सैकड़ों आदमियों को दुलारी के ढूंढने के वास्ते दौड़ाया, गली २ शोर मचाया, घर घर पुछवा कर मंगाया, पर कहीं भी पता न मिलसका, इतने में बारात भी आ पहुंची, हाथी घोड़े बग्गी टमटम, रथ बहली, नालकी पालकी, आदि अनेक प्रकार की सवारियो में बैठे हुवे बाराती आन बानके साथ आ पहुंचे। सात तायफ़े रंडियों के, तीन मंडलियां नक्कालों की, दो मंडली कत्थकों की. दो नाटच-कारों की, दो जादूगरो की, दो भानमतियों की, तीन भजन गाने वालो की, तीन अंग्रजी बाजे पचास पचास आदमियों के, चार बैंड बाजे, तीन रौशन चौकी, तीन जलतरंग और अन्य भी अनेक बाजे वाले गाने वाले नाचने वाले और अन्य भी अनेक प्रकार से रिझाने वाले साथ थे। बहुत ही कम करते करते तीन सौ गाड़ियो की बारात होगई थी, २१ मोटरकार, सात हाथी और ५० घोड़े इनसे अलावा थे, सब बाराती हंसते खेलते खुशी २ आरहे थे और बादलपुर की मशहूर रंडी बिजली का नाच देखने के वास्ते तड़पे जा रहे थे, जो पांच हज़ार रुपये रोज़ पर आई थी और देश भर में प्रसिद्ध हो रही थी।

बारात के पहुंचते ही शोर मच गया कि लड़की तो रात से गायब है, फेरे किससे होंगे। इस खबर के सुनते ही सब बाराती सुन्न होगये, जितने मुह उतनी बातें होने लगीं, कोई कहता था कि लड़की बड़ी सुन्दर है, उस पर कोई जिन्न आशिक़ होगया था वह ही उड़ा लेगया है, कोई कहता था कि नही उसका तो किसी से लगाव था, उसही के साथ भाग गई है, किसी का कहना था कि पागलो वह तो पक्की धर्मात्मा है, इस दुराचारी से व्याह नही करना चाहती थी इस ही से किसी कूवे में डूब मरी है, कोई कहता था कि नही तुम नहीं जानते हो वह तो सारी उमर भगवत भजन में ही बिताना चाहती है इस ही वास्ते कहीं अदृश्य होगई है, कोई कहता था कि वह तो साक्षात देवी का अवतार है, उससे कौन व्याह करा सक्ता है, कोइ कहता कि वाह तुम क्या जानों असल बात यह है कि मोटी चिड़िया देखकर उसका बाप कुछ अधिक रुपया गुमानीलाल से झटकना चाहता है, इस ही वास्ते लड़की को अलहदा कर दिया है। इस प्रकार सब अपनी२ वाणी बोल रहे थे और खिचड़ीसी पका रहे थे।

गुमानीलाल को इस खबर के सुनने से बहुत ही ज़्यादा चिन्ता हुई, मुंह लगने वालों में से किसी ने तो यह सलाह बताई कि अब अगर वह लड़की मिल भी जावे तो भी न व्याही जावे किन्तु बारात ही वापस लेजाई जावे। किसी ने कहा कि नही अब तो चाहे कुछ होजाय व्याह करके डोला ले चलने मे ही बात है, किसी ने कहा कि नहीं फेरे तो ज़रूर फेर लिये जायँ पर डोला यहीं छोड़ दिया जाय। इस प्रकार अनेक सलाहें होकर आख़िर यह ही बात ठहरी कि जिस तरह भी होसके लड़की को ढूंढ निकल वायी जाय और फेरे फिरवा

कर यहीं छोड़ दिया जाय। इस पर अव्वल तो गुमानीलाल के आदमी रामप्रसाद को लालच देने को आये परन्तु जब उससे बात करने से निश्चय होगया कि वह तो वास्तव में ही कहीं भाग गई है तो वे भी उसकी ढूंढ में लगे। शहर में जंगल में और आस पास के गांओं में सब ही तरफ़ आदमी दौड़ाये और बड़े २ इनाम ठहराये, सारा दिन इस ही फ़िकर मे बीता, बारातियों को खाना और जानवरों को दाना घास भी रामप्रसाद के यहां से न मिला। गुमानीलाल को आप ही इसका बन्दोबस्त करना पड़ा, रामप्रसाद तो मुंह सिर लपेटे पड़ा ही रहा।

१६--ज़बरदस्ती के फेरे।

शाम को जब दुलारी मुन्शी जी के यहां से निकली तो किसी ने उसको पहचान कर पकड़ लिया और शोर मचा दिया कि दुलारी मिल गई मिल गई, तुरन्त ही शहर के हज़ारों आदमी और बराती दौड़ पड़े और हाथों हाथ उठाकर रामप्रसाद के मकान पर ले आये, जिसको देखते ही रामप्रसाद ने चिल्लाकर कहा कि दूर हटाओ इस कलंकनी को, मेरे घर पर हर्गिज़ मत लाओ, मै तो इसका मुंह भी देखना नहीं चाहता हूँ, इस प्रकार रामप्रसाद तो पड़ा पड़ा बकता ही रहा और लोग दुलारी को अन्दर घर मे ले गये, जहां दुलारी की मां ने एक दुहत्तड़ बड़े ज़ोर से उसकी कमर पर मार कर कहा कि नासड़े गई, कुलकलंकनी, हमारी तो इज़्ज़त खोदी, बाप दादे की पगड़ी तो उतार कर मिट्टी में मिला दी अब क्यो आई, इस पर लोगों ने समझाया कि मार पीट तो पीछे करना अब तो तुम ज़रा सावधानी के साथ इसकी चौकसी रक्खो, नहीं तो

फिर भाग जायगी, इसके थोड़ी देर पीछे, रामप्रसाद भी गंडासा हाथ में लेकर अन्दर आया और दुलारी को ललकार कर कहा कि बोल अब क्या सलाह है, सीधी तरह व्याह कराने पर राज़ी होती है या गंडासे से अपने दो टुकड़े कराना चाहती है।

दुलारी-(हांपती हुई) नहीं मै राज़ी नहीं हूं।

रामप्रसाद-(गुस्से में भरकर) अच्छा तो आज तेरा ख़ातमा ही करे देता हूं, मुझे फांसी तो आवेगी ही पर इस कलंक से तो छूट जाऊंगा।

दुलारी की मां-(गन्डासा उसके हाथ से छीनकर) मैं आप वहला फुसलाकर समझा लूंगी, तुम तो अब वाहर जाओ और वारात के खाने पीने का बौंत बनाओ।

होते २ फेरों का वक्त आगया परन्तु जब दुलारी को न्हिलाने के वास्ते चौकी पर बिठाना चाहा तो उसने साफ़ इन्कार कर दिया, आख़िर पुरोहित की सलाह से विना न्हिलाये ही फेरो के कपड़े पहनाने चाहे पर उसने वह भी न पहने, इस पर रामप्रसाद ने आकर चार पांच दंडे उसको ऐसे ज़ोर से मारे कि लोगों को ख़ून का मुक़दमा होजाने का भय होगया, इस वास्ते उन्होंने दौड़कर उसको पकड़ लिया और मारने से रोक दिया, दुलारी इस मार से वेहोश होकर गिर पड़ी थी, इस कारण पुरोहित और मामा ने उसको फेरों के कपड़ों में लपेट लिया और गठरी सी उठाकर फेरों वाले पटरे पर ला पटका, इतने में उसको कुछ होश आगया और वह अपने आप को उनके हाथों से झटक कर वोली कि बिरादरी के इतने आदमियों में से क्या कोई भी ऐसा मर्द नहीं है जो अपना

कर्तव्य पालन करें और मुझे इस जुल्म से बचावे, यह बात सुनकर चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया और सब कोई एक दूसरे के मुंह की तरफ़ देखने लग गया।

आख़िर दो आदमी जो दूर खड़े थे और कहीं परदेश के ही रहनेवाले मालूम होतेथे बोले कि पंचायत क्यों नहीं बोलती है और क्यों इस कन्या का न्याय नहीं करती है, इसकी बात सुनो और जो तुम्हारे परमेश्वर को भावे सो न्याय करो, इतने में गुमानीलाल उठकर चलने को तय्यार होगया और ख़ुशामदी लोग घबराकर उससे पूछने लगें गये कि आप क्यों उठे।

गुमानीलाल-मै बाज़ आया इस ब्याह से, मैं तो पहले ही बारात वापस लेजाना चाहता था, मगर तुम लोगों ने मुझे दबाया और समझाया कि इसमें दोनों ही तरफ की बिरादरी की जग हंसाई है, तब मै तुम लोगों का कहना मानकर ज़हर की सी घूंट पीकर बैठ गया था, मगर मालूम होता है कि तुम लोग इस बहाने मेरा फ़ज़ीता ही कराना चाहते हो, इस वास्ते अब मै नहीं ठहरना चाहता हूं और इस ब्याहसे बाज़ आता हूं।

ख़ुशामदी-इनका आप क्यों ख़याल करते हैं, यह तो कोई ग़ैर ही आदमी हैं जो बेमतलब ही बकने लग गयेहैं, (लोगोंसे) क्यों जी यह लोग अपनी बिरादरी के तो नहीं हैं।

सब लोग-न तो अपनी बिरादरी के हैं और न यहां के रहने वाले ही है, मालूम नहीं कौन हैं और कहां के हैं।

ख़ुशामदी-तो इनको निकाल क्यों नहीं देते हो यहां से, इनका यहां क्या काम।

इस पर कई लोगों ने उनको धक्के देकर निकाल दिया, और वह सीधे थानेदार के पास पहुंचकर और सारा हाल सुनाकर बोले कि आपको तुरन्त ही वहां पहुचना चाहिये और लड़की को इस भारी जुलम से बचाना चाहिये नहीं तो सम्भव है कि वह अपनी जान खोदे।

थानेदार-आप उस लड़की के क्या होते हैं।

दोनों आदमी-हम तो परदेशी हैं, कुछ भी सम्बन्ध नहीं है

थानेदार-तो लड़की के मां बाप के मुक़ाबिले में तो मै कुछ भी नहीं कर सक्ता हूं, ।

एक-मगर मां बाप तो इस देश में बहुतेरे ऐसे भी हैं जो दो चार हज़ार रुपयों के बदले अपनी लड़की को साठ साठ सत्तर सत्तर बरस के बुड्ढे से व्याह देते है और जल्दी ही रांड बना देते हैं।

दूसरा-अजी मैंने तो एक अमीर आदमी को यहां तक देखा है कि वह ब्याह कराता है और बरस दो बरस के बाद उस औरत को घर से निकाल देता है और फिर नई ब्याह लाता है, चार बार इसही तरह कर चुका है, तो भी लोग अपनी लड़की उससे ब्याह देने को तय्यार हैं, इसही कारण अब पांचवां ब्याह कराने वाला है।

थानेदार-मां बाप का कुछ न पूछिये बहुतसी ऊंची जातियों में तो मां बाप जन्मते ही अपनी बेटी को अपने हाथ से गला घोट कर मार डालते है, इसी कारण सरकार ने इस जुलम रोकने के वास्ते एक अलग महकमा बनाया है जिसमें मैंने भी दस बरस नौकरी की है, मगर हमारा ही जो

जानता है किस तरह हम लोग लड़कियों को उनके मां बापों के हाथसे बचाते थे और किस तहर वह भी हमारी आंखों में धूल डाल कर अपनी लड़कियों को मारही डालते थे,

एक--अच्छा थानेदार साहब अगर आपको इस ब्याह में दखल देने का इख्तियार नहीं है तो लड़की की जान बचाने के तो आप ज़िम्मेदार है, इस कारण मौकेपर तो जरूर ही चलिये और जो मुनासिब हो करिये,

थानेदार--अगर आप लड़की के कुछभी तआल्लुकदार होते तो मै आपकी रपट लिख कर ज़रूर साथ होलेता मगर आपतो बिलकुल ही ग़ैर आदमी है इस वास्ते आपके ब्यान पर कैसे कोई काररवाई होसक्ती है,

लाचार वह लोग नाकाम्य वापस चलेगये--कारण असली इसका यह था कि गुमानीलाल के आदमी पहले ही थानेदार की पूजा करगये थे, २००) नकद चढ़ागये थे, पर गुमानीलाल से ५००) बतादिये थे,

अब इधर सुनिये कि दुलारी चिल्ला २ कर कह रही थी कि मैने तो अपना जीवन स्त्री सुद्धार के वास्ते अर्पण कर दिया है इस वास्ते मेरा ब्याह तो किसी तरह भी नही हो सक्ता है, ऐसा कह कह कर वह बहुत ज़ोर के साथ अपने आप को छुड़ा रही थी, अपनी जान तक लड़ा रही थी, और फैरे नही होने देती थी,

खुशामदी--क्या नगर भरमें कोई भी ऐसा नही रहा है जो खड़ा होकर इस फ़ज़ीते को बन्द करादे और फेरे फिरवादे,

इस पर रामप्रसाद ने उठ कर तीन चार दंड दुलारी की टांग में ऐसे मारे कि वह धड़ामसे ज़मीन पर गिर पड़ी,

धरमचन्द-(बिरादरी का एक आदमी) जब यह लड़की ईश्वर भक्ती में ही अपना जीवन बिताना चाहती है और व्याह कराने से भागती है यहांतक कि जान देने तक को तय्यार हो रही है तो ऐसी दशामे उसपर क्यों ऐसी ज़बरदस्ती की जा रही है,

इस पर बरात के दस आदमी एकदम उठकर चिल्लाने लगे और कहने लगे कि मालूम होता है रामप्रसाद से तुम्हारा कुछ बैर है, इसी वास्ते ऐसी बातें बनाते हो, नहीं तो भाईसाहब तुम भी बेटा बेटी वाले हो, घर घर यह ही मटियाले चूल्हे है, अगर एक भी लड़की को ऐसा हौंसला दे दिया गया तो फिर देखना लड़कियां क्या क्या कर दिखाती है. वह तो धरम के ही बहाने ऐसी २ बातें बनावेंगी, कि लोगों को इज़्ज़त थामनी भारी होजायगी, आप है किस हवामें, और आप ज़रा यहतो सोचें कि क्या बाबू गुमानीलाल को कुछ औरतो का घाटा है, चाहें तो आजही रातकी रातमें चार व्याह करालें, पर वह तो बिरादरी के सिर मौड़ हैं सरदार है इस वास्ते दोनों तरफ की बिरादरी की इज़्ज़त थामने के वास्ते ही ऐसी महाउद्धत लड़की से फेरे कराने को तैय्यार हो रहे है, तुमको तो भाईसहाब उनका एहसान मानना चाहिये और जिस तरह होसके इस फ़जीते को दबाना चाहिये, इस पर रामप्रसाद की बिरादरी के सब लोग कहने लगे कि बेशक बाबू गुमानी-लाल इस ही लायक़ है और हम सब उनकेताबेदार है, यह

कहकर और रामप्रसाद के पास जाकर ज़ोर से चिल्ला उठे कि उठाओजी चार आदमी इस लड़की को और फेरे फेर दो, क्यों फ़जूल बेहयाई फैला रक्खी है, यह कहकर उन्होने दुलारी को तोड़ मरोडकर गठरीसी बनाकर उठा लिया, न तो उसके हाथ पैर ही हिलने दिये और न ज़बान ही खुलने दी और सात बार गुमानीलाल के साथ अग्नी के गिर्द घुमा दिया।

इन सात फेरों के बाद जब उन्होंने दुलारी को धरती पर रक्खा तो वह मुर्दे के समान बिलकुल ही बेजानसी हो रही थी, तुरन्त ही पंखा हिलाया गया, गुलाब केवड़ा छिड़का गया परन्तु उसको होश नही आया, ऐसी हालत देखकर बिरादरी के लोग तो उठकर चल दिये. गुमानीलाल भी बहुत ही घबराया, तुरन्त ही वहा से उठआया और मोटर भेजकर होशियार डाक्टरों को बुलाया, जिनके इलाज से दस बजे दिन के दुलारी को कुछ होश आया, तब ही सब लोगों के दम में दम आया, और तब ही बरातियों ने कोशिश करके रंडियों का नाच शुरू कराया।

तीसरे दिन बारात बिदा हुई, परन्तु जब दुलारी को डोले में बिठाने लगे तो वह तड़ककर बोली कि मेरा ब्याह नही हुवा है, इस वास्ते मै डोले में नहीं बैठूंगी मै कंकर पत्थर के समान कोई निर्जीव वस्तु नहीं हूँ जिसको उठाकर मेरे मां बाप किसी को दे सक्ते हों, न मै ढोर डंगर हूं जिसका रस्सा चाहे जिसको पकड़ा सक्ते हों, मै तो सजीव मनुष्य हूं जिसने अपना जीवन स्त्री उद्धार के वास्ते अर्पण कर रक्खा है, इस कारण मेरा ब्याह तो किसी प्रकार हो ही नही सक्ता है, इस शरीरको ज़बरदस्ती पकड़कर सात बार नहीं चाहे सौ बार फेरेदे दिये जावें तोभी विवाह नहीं होजाता है, मै पहले भी बार बार कह चुकी हूं और अब

फिर ललकारकर कहती हूं कि मैं कारी हूं और उमर भर कारी ही रहूंगी, स्त्रियोने सदा मे अपना शील बचाने के वास्ते अपनी जान देदी है पर अपने शील पर आंच नहीं आने दी है इसही प्रकार मै भी जान देदूंगी और अपने शील को बचाऊंगी, तुम चाहे कुछ भी ज़बरदस्ती करलो पर मै किसी की पत्नी नहीं बन पाऊंगी।

दुलारी की यह बात सुनकर रामप्रसाद और गुमानी लाल को बड़ा भारी सोच पैदा हुआ, आखिर डाक्टरों के द्वारा उसको बेहोशी की दवा दिलाई गई जिससे मुर्दा सी होकर वह डोले में डाली गई और गुमानी लाल के घर पहुंचाई गई, और वहां फिर दवा दारू करके होश में लाई गई, होश तो उसको आगया परन्तु डाक्टरों ने यह भी वड़े ज़ोर के साथ जता दिया कि इसके दिल पर भारी सदमा पड़ा हुआ है जिस से ज़रा सी भी ठेस लगने पर, कुछ भी ज़बरदस्ती होने पर इसके प्राण हीं निकल जावेंगे, इस पर वह अलहदा मकान में ठहराई गई और दो दासियां उसकी सेवा के वास्ते छोड़ी गईं, जो उसको फुसलाती रहें और जिस तरह भी हो सके गुमनीलाल की स्त्री होकर रहनेके लिये रज़ामन्द करदें।

१७--जगत चर्चा।

दुलारी के इस ब्याह का सब हाल बहुत कुछ नमक मिरच लगाकर अनेक समाचार पत्रो में छपा, जिससे घर घर और नगर २ उसका चर्चा होने लगा, एक जगह की बात चीत हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ इस जगह भी दर्ज करते हैं जो चर्खा कातती हुई स्त्रियां तीसरे पहर आपस में कर रही थीं।

एक–अच्छा लो हम एक नई बात सुनावें, आज वह अख़बार पढ रहे थे कि एक लड़की फेरों के समय सब के सामने खुले दहाने अपने बाप से लड़ी कि इस चालीस बरस के बुड्ढे से तो मैं हर्गिज़ भी ब्याह नही कराऊंगी।

दूसरी–बसजी तो अब तो कलजुग के आने में कुछ भी संदेह नही रहा, जो लड़कियां भी अपने मां बापों के साथ इस तरह लड़ने लगी।

तीसरी–क्योंजी ज़बान कैसे खुली होगी उस नासड़े गई की, धरती में ना गाड दी ऐसी निर्लज्ज को।

चौथी–हमतोजी अपने वक्तों की बात जानें है कि जब किसी लड़की के ब्याह की बात चलती थी तो शरम के मारे वह लड़की उठकर कही दूर चली जाती थी।

पांचवी- वह ज़माने गये अब तो लड़कियां पटापट बोलती है और साफ २ कहती है कि इससे ब्याह कराऊंगी इससे नही।

छटी–आज कल की कुछ न पूछो धरती आकाश एक होगया है आजकल तो, एक ब्राह्मण था हमारे गांव में सुल्लढ़ मिस्सर, बेचरा ग़रीब आदमी था, मिसरानी उसकी बड़ी लड़ाकी थी, सारा ही शहर कांपता था उससे तो, चम्पा उसकी लड़की थी, जो दिनभर शहर का चक्कर ही लगाती रहती थी, ज़ोरावर ऐसी कि दो दो तीन तीन आदमियो के सिर भिड़ाकर मार दे, ग़रीबी से लाचार होकर उसके बापने १५ सौ रुपया लेकर उसका नाता एक ६० वर्ष के बुड्ढे से कर दिया, जब चम्पा ने सुना तो पहले तो वह अपने बाप से लड़ी, वह न माना तो शहर भर में कहनी फिर गई कि ब्याह के वक्त एक ऐसा तमाशा

दिखाऊंगी जो आजतक कभी किसीने भी न देखा हो और न सुना हो।

बसजी जब बरात आली और फेरों के वक्त चम्पा को फेरों के वास्ते मर्दों में लाये तो उसने उस बुड्ढे बर को लातों और मुक्कों से मारना शुरू कर दिया, मारती जाती थी और कहती जाती थी कि बाबाजी पोती को व्याहने आये हो, पहले इस व्याह का मजा तो चख लो, बसजी मौड़ तो बेचारे का कहीं जापड़ा और वह धाड़ मार कर चिल्लाने लग गया कि बचाओ लोगो मुझे इस राक्षसनी से, सुल्लड़ मिस्सर चम्पा के पकड़ने को उठा तो उसने उसकी छाती में ऐसी लात मारी कि वह भी लुड़कनियां खाता हुआ दूर जा पड़ा, और भी जो कोई उठा उसका यहही हाल हुआ, बस फिर क्या था, हुल्लड़ मिचगया, सब लोग उठ कर भाग पड़े और बुड्ढे ने भी उसके साथ व्याह करने से हाथ जोड़ दिये, और अपने रुपये वापस मांगे, पर सुल्लड मिस्सर ने एक पैसा भी हटा कर न दिया, आखिर बुड्ढे ने अपने रुपयों के वास्ते सर्कार में अर्ज़ी दी, पर सर्कार ने भी उसकी कुछ न सुनी, उसकी अर्ज़ी ख़ारिज ही करदी, सुना है उस के पास ले यह ही जमा पूंजी थी जो उसने घरबार बेच कर इकट्ठी की थी, इस वास्ते उसने तो इन रुपयो के मारे तडफ २ कर जान ही देदी।

दूसरी--आज कल तो सब ऐसी ही दीदा दलेर पैदा होती है, हमारे गांव में भी एक लड़की फेरों के वक्त कोठरी के किवाड़ बन्द कर के बैठ गई थी, मां बाप ने बहुतेरा हाथ जोड़े पैरों में सिर दिया कि बेटी हमारी

लाज रखले और किवाड़ खोल कर फेरे फिरवाले, पर उसने नाही किवाड़ खोल, यह ही कहती रही कि इस बुड्ढे से तो मैं हर्गिज़ भी व्याह नहीं कराऊंगी, आख़िर जब कोठरी का दर्वाज़ा तोड़ा और उसको ज़बरदस्ती बाहर निकाली तो फेरे फिरे।

तीसरी–हमारी तरफ़ भी एक लड़की फेरों के वक्त किसी दूसरे के मकान मे जा छिपी थी, ढूंढ़ते २ जब उसका पता लगा और मां बाप उसको लेने को वहां गये तो मकान वाले ने भी कह दिया कि तुम्हारी लड़की इस बुड्ढे वर से व्याह कराना नही चाहती है और अपनी जान बचाने के वास्ते मेरे आश्रय आगई है, इस वास्ते अब मै उसको तुम्हारे सुपुर्द नही कर सकता हूं, बसजी लाचार बरात तो वापिस होगई और बाप ने अपनी लड़की के मिलने के वास्ते नालिश करदी पर वहां से भी उसको लड़की न मिली।

चौथी–तब ही तो लड़कियों का इतना हौसला बढ़ गया है, हमारे यहां तो एक लड़की ने अपने आपही सर्कार में अर्ज़ी दे दी थी कि मेरा बाप जिससे मेरा व्याह करना चाहता है वह मेरे जोग नही है, उसमें भी सर्कार ने लड़की की ही तरफ़दारी की थी और वह व्याह नहीं होने दिया था।

पांचवीं–हौसला सा हौसला, अब तो लड़कियां ऐसा २ ढेठ करती है कि सुन सुन कर छाती दहलती है, एक लड़की के बाप ने तीन हज़ार रुपये लेकर उसके फेरे फेर दिये, अब उस लड़की की चतुराई देखो कि जब डोले में बैठी तो चुपचाप वह सारा रुपया अपने साथ रख लिया, पीछे मां बाप ने सारा घर ढूंढ़ मारा, पर कही रुपया हो तो मिले, आख़िर बाप बेचारा

दौड़ा हुवा लड़की के पास गया तो उसने साफ़ कह दिया कि हां रुपया तो सब मैं उठा लाई हूं, न लाती तो खाती क्या तेरा सिर, जमा पूंजी तो जो कुछ यहां थी सब तूने छीन ली थी, अब जब मेरा क़ाबू लगा मैं उठा लाई।

छटी–कैसा जिगरा होता होगा इन लड़कियों का, जो इस तरह बाप के सामने दूबदू हों।

सातवीं–किसी का कुछ क़सूर नहीं है, कलजुग ही करा रहा है यह सब कुछ।

आठवीं–तो क्यों जी तुम्हारी समझ में वह मां बाप तो कुछ भी बुरा काम नही करते हैं जो अपनी बेटियो को रुपये के लालच में बुड्ढों के हाथ बेच देते हैं।

सब स्त्रियां–(तनककर) क्यों वह बुरा क्यो नहीं करते हैं, वह तो चंडालों और क़साइयों से भी ज़्यादा बुरे है, उन वारों की तो कोई शकल भी न देखे।

आठवीं–तो जब वे क़साई मां बाप अपनी लड़कियो का गला काटने के वास्ते छुरी हाथ में उठाते हैं, उनको किसी बुड्ढे के साथ व्याहने को तय्यार होजाते है, तो उनकी बेटियों को अपना गला कटवाने के वास्ते खुशी २ अपनी गर्दन आगे कर देनी चाहिये, हंसते २ उस बुड्ढे से व्याह करा लेना चाहिये और अगले ही दिन रांड होजाने के वास्ते मां बाप का गुण गाना चाहिये, या अगर हो सके तो उन मां बापो के पंजे से अपनी जान बचा लेनी चाहिये, वह व्याह ही नहीं होने देना चाहिये।

स्त्रियां-(धीमे स्वर से) अपनी खुशी तो कौन उमर भरकी ऐसी भारी मुसीबत में पड़ना चाहता है पर करें क्या लड़कियों का तो कोई वस ही नही चल सक्ता है।

आठवीं-जिनका वस चला, अर्थात जिन्होंने लड़ भिड़ कर या भाग दौड़ कर अपनी जान वचाली तो क्या उनको नहीं वचानी चाहिये थी।

स्त्रियां-नहीं उन्होंने अपनी जान वचाली तो बुरा तो नहीं किया पर हमारा कहना तो यह है कि कलजुग आया तवही तो लड़कियो को इतना ढेठ हुआ, नहीं तो अपने ब्याह के मामले में तो लड़कियां आंख भी ऊपर को नहीं उठा सक्ती थीं।

आठवीं सतयुग में जब स्वयम्बर होता था, देश देशान्तर से आ आकर अनेक वर इकट्ठे होते थे, कन्या वरमाला लेकर उनके वीचमें आती थी, एक एक के सामने जाती थीं उनकी वंसावली सुनती थीं, गुणों को परखती थीं और फिर अन्त में उनमें से एक को पसन्द करके उसके गले में वरमाला डालती थीं, तव कैसे ढेठ होता था उन कन्याओं का, क्या तुम्हारी समझ में वह भी निर्लज्ज ही होती थीं जो अपने मां बापों और कुटम्बियों के सामने भरी सभा में आप ही अपना वर पसन्द करती थीं और आप ही उसके गले में वर-माला डालकर उसको अपना पति बनाती थी, तुम चाहे ऐसी कन्याओं को वेशरम और निर्लज्ज कहो परन्तु शास्त्रों में तो उनकी बड़ी ही प्रशंसा लिखी है और सीता आदि पूज्य स्त्रियों ने इस ही प्रकार अपनी पसन्द से अपनी शादी की है, सतयुग में तो बहुत करके लड़कियां आप ही अपना वर ढूंढती थीं और इस विषय में खुलम खुल्ला अपने मां वापों से बात करती थीं, यह

तो कलयुग मे ही लड़कियो से सलाह लेना बन्द होगया है और उनका बोलना बुरा समझा जाता है ।

स्त्रियां-अच्छा तो यह स्वयम्वर की रीति बुरी नहीं थी तो बन्द क्यों हो गई, ।

आठवीं-रीति तो यह महा प्रशंसनीय और अति उत्तम ही थी परन्तु पशुओं की तरह पुरुषों में भी ज़बरदस्ती और छीना झपटी का भाव आने से ही यह रीति बन्द करनी पड़ी है, स्वयम्वर में जहां सैकड़ों वर इकट्ठे होते थे और सब ही उस कन्या को व्याह लेजाना चाहते थे वहां तुम जानो कन्या तो एक ही के गले में वर माला डालती थी, एक ही को अपना पति बनाती थी, तब जो बाक़ी रह जाते थे, वह बहुत पहले समय में चुपचाप वापस चले जाते थे, परन्तु फिर होते २ ऐसा होने लगा कि जो बाक़ी रह जाते थे वह ज़बरदस्ती उस लड़की को छीन कर लेजाना चाहते थे, लड़की का पिता और पति उनकी इस ज़बरदस्ती को रोकते थे तो वह अपना ज़ोर दिखाते थे और लड़ाई दंगा करने लग जाते थे, पुरुषो के इसही पशुवत व्यवहार से स्वयम्वर की यह शुभ प्रथा बन्द हुई है और इसके स्थान में महा दुखदाई छोटी उमर की शादी चल पड़ी है, और छोटी उमर में शादी होने से ही व्याह की बाबत लड़कियों की सलाह लेना और उनका बोलना बन्द होगया है और होते २ बेशर्मी और निर्लज्जताका काम समझाजाने लगाहै ।

१८--दुलारी की दासियां ।

अब दुलारी की व्यथा सुनिये कि अलग हवेली में ठहराकर

दो दासियां जो उसके फुसलाने को छोड़ी गई थीं वह ऐसी महा नीच प्रकृति की, ऐस दुष्ट स्वभाव और महान पतित आत्मा की, ऐसे महा खोटे और निर्लज्ज विचारों की थीं कि दूसरे को दुखी देखकर ही उन्हें आनन्द आता था, किसी को रोता तड़पता सुनकर ही उन्हें आह्लाद होता था, और कुशील और व्यभिचार की गंदी वार्तों में ही उनका जी लगता था, दुलारी को उनकी यह बात कान में पड़ने से बड़ा भारी दुख होता था, तो भी वह उनसे घृणा नहीं करती थी, वल्कि उन की दुष्ट प्रकृति और गंदे स्वभाव को दूर करने का ही उपाय सोचा करती थी, प्यार मुहव्वत के साथ उनको उपदेश भी देती रहा करती थी।

होते होते यह दासियां भी उसको अपना हितू समझ कर उससे अपने दुख दर्द की बातें कहने लग गईं, तब दुलारी ने एक दिन उनकी सारी ही जीवन कथा सुननी चाही और प्रथम गौरा दासी ने इस प्रकार सुनाई कि मै एक महाविद्वान ब्राह्मण की लड़की हूं जो धर्म कर्म में भी वहुत प्रसिद्ध थे, मैं और एक मेरा भाई दोही हम उनकी सन्तान थे, भाई मेरा बहुत ही तरस २ कर पिता की चालीस वरस की उमर में पैदा हुवा था, पीछे मै हुई थी, मेरे भाई को उन्होंने बहुत ही लाड़ से पाला और वहुत ही ज्यादह सिर चढाया जिस से न तो वह कुछ पढ़ ही सका और न कुछ तमीज़ ही सीख सका, रही मैं सो मै तो कोई चीज़ ही नही थी जिस का कुछ ख़याल किया जाता मै तो जिस प्रकार सब लड़कियां रहती हैं विलकुल निरादरी ही सी रहती थी और वात विन बात आठों पहर झिड़के ही खाया करती थी, भाई मेरा जव चाहे मुझे धूधू कूटने लग जाता था और जब मैं मार खाने से रोती थी तो मेरी मां

उलटी मुझे ही धमकाने लग जाती थी कि नासड़े गई मरती नहीं गई है जो भाई के ज़रा हाथ लगाने पर ही इतनी चिल्लाने लगीहै, इस प्रकार होते होते में भी ऐसी ढीट होगई थी कि मेरी मां तो मेरे ऊपर बरसते बरसते हल्कान हो जाती थी और मै अन्दर ही अन्दर हंसती रहा करती थी।

फिर जब मै जवान हुई तों मेरे मां बापने खूब धन लगा कर धूम धाम के साथ एक ब्राह्मण के लड़के से मेरा व्याह कर दिया जो अभी काशी से ज्योतिश पढ़कर आया था, ससुर मेरा बहुत बुड्ढा हो गया था जिससे चला फिरा भी नही जाता था, पर सास बिल्कुल ही जवानथी, जो मेरी असली सास के मरने पर ससुर के बुढापे मे ही ब्याही गई थी, जेठ मेरा खेती करता था और देवर वैद्यक पढ़ता था, जेठ मेरा खेती से सौ सवा सौ रुपये साल कमा लेता था और पचास साठ रुपये व्रत जजमानी से आजाते थे इस ही से सारे कुटुम्ब का गुज़ारा चलता था, फिर थोड़े ही दिनों में मेरे पति की ज्योतिश चल पड़ी तो मुझे अलग होने की सूझी एक दिन भी इकट्ठा रहना भारी होगया, इस कारण तुरन्त ही झगड़ा छेड़ दिया और सास और जेठानी से खुल्लम खुल्ला ही लड़ना शुरू कर दिया, मेरे पति को मेरी यह बात ज़हर के समान लगती थी और वह शरम के मारे धरती में गढ़ा जाता था, इसही कारण मुझको धमकाता भी था और मारता भी था, पर मै तो बचपन से ही मार खाती आरही थी इस वास्ते इन बातों को बिल्कुल भी नहीं गरदानती थी, बेहया बनकर सबही कुछ सहन कर लेती थी और अपनी धुन को नहीं छोड़ती थी।

फिर आहिस्ता २ झूठी सच्ची लगाकर और दिन रात कान भरभर कर उसको भी मैने अपने ही ढब पर कर लिया और

सास जेठानी को कोरी २ सुनाकर अपना चूल्हा अलग धर लिया, फिर तो जेठानी ने भी शोर मिचाया कि हम ही क्यों सास ससुर का दंड भरै इस वास्ते वह भी अलग होगई, देवर वैद्यक पढने कहीं बाहर चला गया और मांग २ कर अपना पेट भरता रहा, इस प्रकार अलग होने से सबसे ज़्यादा दुख मेरे ससुर को हुवा जिसका तो गुज़ारा होना ही मुश्किल होगया था, क्योंकि व्रत जजमानी में से भी उसको तिहाई चौथाई ही मिलने लगा था, तो भी मुझे तो वह बुड्ढा ज़हर दिखाई दिया करता था जो तीन जवान बेटों के होते भी एक छोटी सी लड़की व्याह लाया था, कभी २ चोरी छप्पे मेरा पति उनको कुछ दे भी दिया करता था, पर जब मुझे मालूम होजाता था तो मै तो महना ही मथ डालती थी और बहुत ही भारी फ़जीहता मचाती थी इस कारण होते २ मेरा पति भी मुझ से ऐसा डर गया था कि पिता के पास तक भी जाकर नही फटफता था, फिर कुछ दिन पीछे जब ससुर का देहान्त होगया तो सास को तो हमने व्रत में से भी एक पैसा तक देना बन्द कर दिया, अब तो वह बेचारी पीसना पीसकर ही अपना पेट भरती थी और लोगों की रोटियां पकाती फिरती थी, कुछ दिन पीछे देवर भी वैद्यक पढकर आगया और कमा कमाकर आपही अपना व्याह कर लिया।

पर जैसी कमाई मेरे पति की हुई ऐसी किसी की भी नहीं हुई, इसही कमाई से उसने २०-२५ हज़ार रुपये लगाकर एक बड़ी भारी हवेली भी चिनवाली, एक बड़ा भारी बाग भी लगवालिया और सब ही प्रकार का ठाठ रचलिया, पर अभी यह सब काम पूरे भी नही होने पाये थे, कि एकदम उसको अर्द्धंग मार गई, लेने के देने पड़ गये, जो नक़दी थी वह सब उसकी बीमारी में खर्च आगयी, बल्कि मैने तो अपना ज़ेवर

भी बेच २ कर लगा दिया पर उस को कुछ भी आराम न हुआ आख़िर बरस दिन बीमार रहकर वह तो राम को प्यारा हुआ और मुझ दुखिया को अकेला छोड़ गया।

अब जेठ की बन आई, उसने चट मुक़दमा छेड़ दिया कि हम तीनो भाई तो शामिल रहते थे इसवास्ते हवेली और बाग़ सब हमको ही मिलना चाहिये और इस औरत का तो सिरफ रोटी कपड़ा बंध जाना चाहिये।

लोजी, पति के मरने का ग़म तो मुझे जो था सो थाही, पर यह ग़म उससे भी बढ़िया खड़ा होगया, आख़िर मैंने भी जो कुछ मेरे पास था सब बेच बाचकर खूब कोशिश के साथ मुक़दमा लड़ाया, और अपने पति का भाइयो से अलग रहना साबित कर दिखाया, तब बड़ी मुश्किल से वह मुक़दमा ख़ारिज हुआ।

दूसरी दासी–क्यों बहन अगर यह सिद्ध न हो सक्ता कि तुम्हारा पति अलग रहता था तो क्या तुम्हारी हवेली और बाग सब तुम से छिन जाते।

गौरा, हां, हमारे वकील भी ऐसाही कहते थे।

दूसरी–तब तो यूं समझो कि सर्कार ही भाई भाई का अलग रहना सिखाती है, और वह ही स्त्रियां बुद्धिमान हैं जो लड़भिड़ कर पतिको देवर जेठो से अलग करा देती है।

दुलारी–नहीं बुद्धिमान तो नहीं हैं, क्यों कि जो स्त्रियां देवर जेठों के शामिल रहती हैं और उन को अपना समझती हैं तो फिर ऐसी मुसीबत पड़ने पर वे देवर जेठ भी उसको

अपना ही समझते हैं और सब तरह से उसकी प्रतिपाल करते रहते हैं, और जो अपनी चलती में देवर जेठों से अलग हो जाती हैं, उनको ग़ैर समझती हैं, तो वे भी उसको ग़ैरही समझने लगजाते हैं और मौका पड़ने पर वैर ही दर्साते हैं, जैसे को तैसा यह कहावत तो प्रसिद्ध ही है।

गौरा—अच्छा जी अब आगे सुनो कि बाग़ और हवेली मुझे मिलतो गये पर बाग़ तो तुम जानो अभी नया ही लगा था जिससे अभी तो कुछभी आमदनी नही हो सक्ती थी, बल्कि उस पर तो अभी बहुत कुछ लगाने की ही ज़रूरत थी, पर लगाऊं कहां से, मेरे पास तो कुछ भी नही रहा था, इस वास्ते उसका तो सुख साख कर यूंही सत्यानाश हो गया, रही हवेली सो गांव में मकान किराये पर चढ़ने का तो रिवाज ही नहीं है, इस वास्ते उस से भी एक कौड़ी की आमद्नी नही हो सक्ती थी, लाचार बरस छै महीने तो बचा कुचा असबाब बेच कर काटे, फिर बाग़ और हवेली बेचने का इरादा किया पर कोई भी मोल लेने को खड़ा न हुआ।

हमारे गांव में पहले इसी तरह एक रांड ने आठ हज़ार में अपनी जायदाद बेची थी, उसके पति की सात पीढ़ी में भी कोई नाम लेवा और पानी देवा नहीं रहा था, पर इस जायदाद के बिकने पर कहीं से एक आदमी आ खड़ा हुआ और सर्कार में दावेदार हो गया कि मै इस रांड के पति के कुटुम्ब में दसवीं ग्यारहवीं पीढ़ी में हूं, और रांड के मरने पर जायदाद का हक़दार हूं इस कारण रांड को कोई इख्तियार इस जायदाद के बेचने का नहीं है, इस पर सर्कार से वह बेच रद्द होगई और मोल लेने वाले के आठ हज़ार रुपये

मारे गये, तब से हमारे गांव में रांड के पास से कोई भी जायदाद मोल नहीं लेता है।

आखिर जब मैं बिल्कुल ही भूखों मरने लगी तो अपने बाप के यहां गई, पर वहां तो मेरे से भी ज़्यादा बुरा हाल था, मां बाप तो मर ही चुके थे एक बड़ा भाई था जो लाड़प्यार के कारण बिल्कुल ही मूर्ख और उजड्ड बन गया था, यहां तक कि जजमानों के भी कुछ काम नहीं आता था, मेरी भावज ही यजमानों में जाती थी और आधा चौथाई वसूल करके लाती थी। वह भी मार छेतकर सब वह ही छीन ले जाता था और भांग तम्बाकू में उड़ाता था, ऐसी दशा में वहां मैं क्या निभ सकती थी, दो दिन ठहरकर फिर सुसराल ही जाने की सूझी और लाचार यही मन में ठानी कि अब की बार तो जिस तरह भी होगा, हाथ पैर जोड़कर जेठ देवर में ही घुसूंगी और देवरानी जेठानी की ही टहल करके अपने दिन काटूंगी, पर रास्ते में गुमानीलाल की दासी लछमना मिल गई जो बहुत २ बड़ाई गाकर और झूठ सच बताकर मुझे यहां ले आई, यहां आकर जैसी बीती वह कुछ भी कहने की बात नहीं है, किस घर की बेटी और किस घर की बहू और कैसी नीच अति नीच अवस्था में आकर पड़ी, पर पेट बुरी बला है और विधवाओं की क़िस्मत में तो धक्के ही खाते फिरना बदा है, अब जब छटे महीने सर्कार का सिपाही मकान का चौकीदारा और बाग़ का महसुल वसूल करने आता है तो फिर इन सब चीज़ों की याद आ जाती है और कलेजे में आग सी लग जाती है, पर कर क्या सकती हूं, दिल मसोसकर यह ही सोचने लग जाती हूं कि रामजी तो हमसे रूसा ही था, पर इस नाश गई सर्कार ने भी हमारे वास्ते ऐसा ही क़ानून बना दिया जिससे पति की अपने

हाथ की पैदा करी हुई जायदाद में भी रांडो को पूरा पूरा अधिकार न मिले, और वे भटकती ही फिरती रहें।

दुलारी-एक ज़माना ऐसा था जव रांडों को जीती ही आग में जला देते थे और कन्याओ को जन्मते ही गला घोटकर मार डालते थे उस समय स्त्री तो घास के तिनके के वरावर भी नहीं समझी जाती थी तव उसके वास्ते कानून में ही क्या अधिकार दिये जा सकते थे, अव सकराने रांडों का ज़िन्दा जलाना और कन्याओ का गला घोटकर मार डालना तो वन्द कर दिया है वाक़ी सव क़ानून ज्यो का त्यो चला आता है।

फिर दूसरी दासी गुलावदेई ने अपनी कथा इस तरह सुनानी शुरू की कि मै तो वनिये की वेटी हूं, वाप के घर कपड़े की दूकान होती थी, और ससुराल में लेन देन का काम था, मेरा पति अपने वाप के एक ही वेटा था और एक वेटी थी यमुना, जो मेरे व्याह के वक्त पांच वर्ष की थी, तीन वरस पीछे मेरा गौना हुआ, गौने के दो वर्ष पीछे घर में प्लेग घुस गई, अव्वल मेरा पति मरा फिर दो दिन पीछे सास मरी फिर उसके तीन दिन पीछे ससुर मरा, अव रह गई मै अभागन और एक वह लड़की यमुना, रो पीटकर सवर किया और लेन देन का सव काम अपने हाथ में लिया, फिर एक पढ़ा लिखा वर ढूंढ़कर यमुना का व्याह कर दिया, पर मैं क्या जानूं थी वह ही मेरी जान का दुश्मन हो जायगा, लोजी व्याह के होते ही यमुना के पति ने नालिश करदी कि अपने वाप के सारे माल की मालिक तो यमुना ही है, इस पर सर्कार ने भी उस ही की वात मानकर सव माल अस्वाव और घरवार तो यमुना को दिलवा दिया और मुझे एक छोटीसी कोठरी में रहने का हुकम

हो गया, पांच रुपये महीना मेरे रोटी कपड़े का यमुना के ज़िम्मे बंध गया, बसजी मै तो धरती में गड़ गई और शरम के मारे वह गांव ही छोड़ आई।

दुलारी-ऐसी ही मै सुनाऊं, अभी हाल की बात है कि हमारे मामा के गांव में एक ठाकुर रहते थे। भरतसिंह, नाम था अच्छे ज़मीदार थे, उनके एक बेटा था धरमसिंह उसका ब्याह करते ही ठाकुर का देहान्त हो गया, पीछे एक कन्या का जन्म देकर धरमसिंह और उसकी स्त्री भी मर गई, बेचारी छोटीसी कन्या को उसकी दादी ने आर्थात् धरमसिंह की मां ने ही पालना शुरू किया और ठाकुर की जयदाद पर अपना नाम चढ़वा लिया, पीछे एक दूर के कुटम्बी ने उस बुढ़िया से किसी बात पर नाराज़ होकर अर्ज़ी देदी कि ठाकुर की जायदाद की हक़-दार तो ठाकुर की स्त्री नहीं हो सकती उसकी मालिक तो उसकी पोती ही है, पर दादी ने उस जायदाद पर अपना ही नाम चढ़वा लिया है जिससे ज़ाहिर है कि वह पोती की जाय-दाद को आपही हड़प करना चाहती है। इस पर सर्कार से ठाकुर की सारी जायदाद और माल अस्बाब उस बुढ़िया से छिनकर उसकी मालिक वह पोती ही बनादी गई और वह पोती भी उससे छीनकर किसी दूसरे को ही पालने के वास्ते देदी गई और बुढ़िया की रोटी पोती के ज़िम्मे करदी गई, बेचारी बुढ़िया को इस बात का बहुत ही रंज हुआ और उसको भी शरम के मारे गांव ही छोड़ना पड़ा।

इससे भी ज्यादा अंधेर की बात और सुनो, हमारे ही कुटम्ब का मामला है कि पहले तो मेरा चाचा वीरभान मरा फिर उसके दो ही दिन पीछे उसका बेटा दयाराम मर गया'

जिसके ब्याह को अभी दो ही महीने हुए थे और गौना भी नहीं हो पाया था। अब आश्चर्य की बात सुनो कि दयाराम की वहू के बापने नालिश करदी कि वीरभान के माल की मालिक तो उसकी स्त्री नही है बलिक उसके बेटे की ही वहू है, इस पर सर्कार से भी ऐसा ही हुक्म होगया, अर्थात् दयाराम की मां से सारा माल अस्वाब छिनकर दयाराम की वहू को मिल गया और दयाराम की मां का रोटी कपड़ा बहू के ज़िम्मे हो गया।

अब सबसे ही ज़यादा आश्चर्य की बात सुनो कि रामलाल एक बनिया था, लेन देन किया करता था गिरधारीलाल उसका एक बेटा था जो कुछ दिन पीछे मर गया, रामलाल बेचारा जब बुढ्ढा होगया तो लेन देन का सब काम गिरधारी की बहू ने सभांल लिया और सास ससुर की टहल सेवा में ही दिन बिताना शुरू कर दिया, चार पांच बरस इस ही तरह बीते फिर उसके सास ससुर भी मर गये, अब झगड़ा उठा कि इनके सब माल अस्वाब और लेन देन का मालिक कौन है।

गौरा—और मालिक कौन होता वह उनके बेटे की बहू मालिक थी कि नहीं वह तो नहीं मर गई थी।

दुलारी—नहीं वह मालिक नहीं मानी गई बल्कि यह बात निकली कि अव्वल तो बुढ्ढे की लड़की अर्थात् गिरधारी की बहन मालिक हो सकती है और जो कोई लड़की न हो तो कुटम्बी मालिक हो, परन्तु न तो गिरधारी की कोई बहन थी और न कोई कुटम्बी ही था, तब गिरधारी के बाप की बहन वा उसके भी बाप की बहन आदि की तलाश हुई कि वह ही मालिक हो जावे, परन्तु वहां तो गिरधारी की बहू के सिवाय कोई भी नहीं था, तो भी गिरधारी की बहू मालिक नहीं मानी

गई, लाचार सर्कार ही मालिक हुई। उसको तो सिर्फ तीन रुपये महीने की तनख्वाह मुक़र्रर होगई।

गौरा-बसजी हद होगई तब तो इसे तो न्याय न कहो विधवाओं के वास्ते जुल्म की तलवार कहो।

दुलारी-यह सब अन्याय तब ही से चला आता है जब स्त्रियां अति ही तुच्छ मानी जाती थीं और विधवा होने पर जीती ही जला दी जाती थी।

गौरा-हमारी समझ में तो यह आता है कि ऐसे ही ऐसे जुल्म भरे क़ानून से तंग आकर विधवाओं ने पति के साथ जल मरने की रीति निकाली होगी, जिससे एक दम ही सब झगड़ा छूट जाय और उमरभर के धक्के न खाने पड़ें।

दुलारी-ऐसा तो है ही!

गौरा-तो हमारी समझ में तो इस महा भटकावे की ज़िन्दगी से तो वह जलमरना ही अच्छा था, नहीं मालूम सर्कार ने क्यों इस रीति को बंद करके विधवाओं के त्रास को बढ़ा दिया है। एकदम जलमरने की जगह सारी उमर का जलना क्यों उनके वास्ते पसंद किया है।

दुलारी-उमरभर के त्रास भुगतने की जगह सर्कार ने तो उनके वास्ते दूसरा विवाह कर लेने का रास्ता खोल दिया है।

गौरा-तो फिर रांडों का विवाह ही क्यों नहीं हो जाता है।

दुलारी-विरादरी के लोग अभी तक इसको अच्छा नहीं समझते है।

गौरा-अच्छा नहीं समझते हैं तो रंडवे होने पर अपना क्यों दूसरा व्याह करा लेते हैं।

गुलाबो-आप तो सत्तर बरस का बुड्ढा होने पर भी, मुंह में दांत और पेट में आंत न रहने पर भी व्याह करालेते हैं और स्त्री के तो बाल विधवा होजाने पर भी, दस बरस की ना समझ बच्ची होने पर भी उसके व्याह की आज्ञा नहीं देते हैं। उमर भर रांड बिठाना ही पसन्द करते हैं, मैंने अपनी आंखों देखा है एक बुड्ढे की दोनों गालें तो अन्दर को घुस रहीं थीं, चहरे पर झुर्रियां पड़गई थीं, बदन की खाल लटकी पड़ रही थी, गर्दन डग डग हिल रही थी, कमर तिर्छी हो गई थी, तो भी उसको व्याह की सूझ रही थी। हाट हवेली बेच कर पांच हज़ार देने को फिर रहा था और सात हज़ार पर बेटी व्याह देने वाला भी मिल गया था, उसही बुड्ढे के पोते की वहू अभी बेचारी गौने भी नहीं आई थी कि रांड होगई, उसके भाई को उस पर तरस आया और उसका दो बारा व्याह कराना चाहा तो यह ही बुड्ढा पंचायत लेकर वहां पहुंचा और बहुत ही कुछ शोर मचाया कि ऐसी अन होनी करके मेरे बुढापे में क्यों खाक डालते हो। पर उस लड़की के भाई ने उसकी एक न सुनी और बेचारी का व्याह करही दिया, अब वह चैन से अपनी ज़िन्दगी बिता रही है, हमारी तरह भटकती नहीं फिर रही है, अपना धर्म नहीं गंवारही है।

गौरा-रांडों के व्याह होजाने में नहीं मालूम इन बिरादरी वालों का क्या बिगड़ता है जो इतनी हाय हाय करने लग जाते हैं।

दुलारी-बिगड़ता तो कुछ नहीं है भला ही होता है, क्यों कि जिस घर एक भी रांड होती है वह उसके रोने धोने लड़ने

झगड़ने और नित्य की थूका फ़ज़ीहती रहने से वह घर तो साक्षात ही नरक कुंड बन जाता है और उस घरके सब ही लोगों को ज़िन्दगी बितानी भारी पड़जाती है। रांड का ब्याह होजाने से तो यह सारी ही बला टलती है और उसकी भी ज़िन्दगी सुख शान्ति में गुज़र जाती है, इस कारण सब तरह से नफा ही नफ़ा है, परन्तु नवीन बात होने से एक झिझक सी हो रही है जो अब आहिस्ता २ कमती होती जा रही है।

गौरा–हमारी समझ में तो रांड क्या और सुहागन क्या, कुंवारी क्या और ब्याही क्या, सबही स्त्रियां जहाज़ में बिठाकर और बीच समुद्र में लेजाकर गड़प से डबोदी जावें, चलो छुट्टी हुई, आंख फूटी पीर गई न रहैगा बांस न बजैगी बांसुरी। जब स्त्रिया ही नहीं रहैंगी तो जुल्म ही किस पर होगा, मर्दों को जो यह स्त्रियां कांटा सा खटकती हैं उनका कांटा भी निकल जायगा और स्त्री जाति भी नित्य के जुल्मों से बच जायगी।

दुलारी–क्यों हिम्मत करके मनुष्य जाति का ही ऐसा सुधार क्यों न कर लिया जावे जिससे स्त्री और पुरुष दोनों ही सुख चैन से ज़िन्दगी बिताने लगजावें और कोई भी किसी प्रकार का जुलम और ज़बरदस्ती न करने पावे।

१९–मोल की जोरू।

अब गुमानीलाल का हाल सुनिये कि इस ब्याह के पांच सात दिन पीछे ही उसने उत्तमचन्द को बुला भेजा और अलग हवेली में ठहराकर खूब ठस्से के साथ ब्याह रचा दिया। बिरादरी के लोगों को प्रसन्न करने के वास्ते जीमन ज्योनार भी

बहुत ही बढ़िया की गई और रंडियों का नाच भी बड़े ठाठ के साथ कराया गया। इस प्रकार सब ही की पूरी २ प्रसन्नता के साथ गुमानीलाल का विवाह उत्तमचन्द की अलबेली कन्या चन्द्रमुखी से होगया, और उत्तमचन्द्र भी रुपयों की भारी गठरी बांधकर अपने गांव को चल दिया।

इधर चन्द्रमुखी ने गुमानीलाल के घर आकर दो चार दिन पीछे ही पर निकालने शुरू कर दिये, झोंपड़ों की रहने वाली ने महलों में आकर रंग बदला। बड़ी भारी तंगी और कंगाली में पलने वाली को एकदम राज पटरा मिल गया तो उसकी आंखें फूल गईं, अभिमान के शिखर पर चढ़कर बिल्कुल ही आपे से बाहर होगई और सबकों तुच्छ तिनके के बराबर समझने लग गई। सगे सम्बन्ध की और बिरादरी की जो औरतें इस नई बहू को देखने आती तो वह उनको कुछ भी आदर न देती नखरे से बात करती, उनका गहना कपड़ा देखकर नाक भौं चढ़ाती और कहती कि यह भी कुछ पहनने की चीज़ं है। फिर अपना गहना कपड़ा दिखाती कि मुझे तो यह भी नहीं भाते हैं मैं तो इनसे भी बढ़िया २ बनवाऊंगी और तब तुमको दिखाऊंगी, इस ही प्रकार अपनी बड़ाई दिखाने के वास्ते उनके सामने अपनी दासियों पर खूब ही हकूमत जताती, बे मतलब ही उनको ताड़ने लग जाती और कहती कि मैं ऐसी दासियां नहीं रक्खा करती हूं, चुटिया पकड़कर निकाल दिया करती हूं। इस प्रकार की धमकियां दिखाती और मारने चढ़जाती, स्त्रियां उसके ओछेपन को देखकर मन ही मन हंसती चली जातीं और फिर न आतीं, होते २ भली औरतों का उसके यहां अना ही बन्द होता गया और ऐसी औरतों का आना शुरू हो गया जो झिड़के पर झिड़के खातीं थीं और फिर भी उसके मुंह

चन्द्रमुखी—क्या बेइज़्ज़ती लिये फिरता है, मैं जूतियों पिटवाया करती हूं तेरे जैसों को।

इतनी बात सुनकर गुमाश्ते ने कुछ भी बोलना उचित न समझा और चुपके ही वापस चला गया। शामको जब गुमानी लाल कचहरी करके घर आया तो चन्द्रमुखी ने उसके सामने रो रो कर बहुत ही बुरा हाल बनाया और कहा कि आज तुम्हारा गुमाश्ता यहां घर में घुस आया था, और मुझसे कुचेष्टा करना चाहता था, मैंने उसको तो जूतियों पिटवाकर निकलवा दिया है तो भी बड़ा भय हो रहा है कि मैं किस तरह इस घर में रह सकूंगी और किस तरह अपनी जान बचा सकूंगी, मैं तो अब हीरे की कणी चाट कर सो रहती हूं और सब झगड़ा ही ख़तम कर देती हूं।

इतनी बात सुनकर गुमानीलाल गुस्से में भरगया और कहने लगा कि उस हरामज़ादे को तो मै धरती मै गड़वादूंगा और यहां का ऐसा कड़ा इन्तज़ाम करदूंगा कि कोई हवेली के दर्वाज़े तक भी न फटकने पावेगा। इस पर चन्द्रमुखी ने गुमानीलाल को बहुत ही ज़्यादा फटकारा और कहा कि तुम्हारा तो सब हाल मैं रत्ती २ सुन चुकी हूं इस वास्ते तुम पर तो मै ज़रा भी भरोसा नहीं करसक्ती हूं, जो पुरुष आप ही दुराचारी और व्यभिचारी हो वह अपनी स्त्री के शील की क्या क़द्र कर सक्ता है, जिन नौकरों और कारिंदों की मारफ़त तुम रंडियां बुलवाते हो, जिनके सामने तुम बेहया और बेशरम बनकर इन कलमूहियों से कलोल करने में नहीं लजाते हो वह कब तुमसे दब सक्ते है और कब अपनी बदमाशी से बाज़ आसक्ते हैं। ऐसा न होता तो मुझे यह दिन देखना ही

क्यों पड़ता, यह कहकर वह रोपड़ी और ज़हर खाकर मर रहने को ही डराने लगी।

इस प्रकार की बेहयाइयों से उसने गुमानीलाल को भी नचा दिया था और उसके सब नौकरों को भी क़ाबू में कर लिया था जो उसके नाम से ही थर थर कांपते थे, उसकी उचित अनुचित सबही तरह की आज्ञाओं को सिर धरते थे और उसकी बुरी भली सबही क्रियाओं को छिपाने लग गये थे, बल्कि उसकी ख़ातिर सब तरह का झूठ बोलने में ही; दिन को रात और रात को दिन कहने में ही अपनी जान की सलामती समझते थे।

इस प्रकार खुद मुख्तार होकर वह बिल्कुल ही मन माना करने लगी, नगर की अनेक नीच और निर्लज्ज स्त्रियां उसके पास आने लगीं और हर हरवक्त नीचता की ही बातें रहने लगीं, इस प्रकार गुमानीलाल की सारी ही शेखी किरकिरी होगई थी और दिन रात बहूजी की उचित अनुचित आज्ञाओं का पालन करते रहने पर भी उसको चैन नहीं मिलती थी, क्योंकि वह स्त्री ज़रासी देर में कुछ से कुछ बखेड़ा खड़ा करदेती थी और अपनी निर्लज्जता के द्वारा दम की दम में जैसा चाहे स्वांग रचलेती थी, बाबूजी की सारी इज्ज़त ख़ाक में मिला देती थी।

अब वह अपनी पहली स्त्री शान्तिकुमारी को याद करता था जो एक इज़्ज़तदार घराने की बेटी थी। इस ही कारण अपनी इज़्ज़त आबरू बचाने के वास्ते चुपचाप उसकी सब सख्तियां झेलती थी और चूं तक भी नहीं करती थी। सारांश यह कि शान्तिकुमारी को तो उसने अपनी बांदी गुलाम बना

दुःखी थी और अब इस चन्द्रमुखी ने उसको ही अपना गुलाम बना लिया था, पहले वह जो चाहे करता था और शान्तिकुमारी कुछ भी नहीं बोल सक्ती थी और अब चन्द्रमुखी जो चाहे करती है और गुमानीलाल कुछ नहीं बोल सक्ता है। इस प्रकार गुमानीलाल की क़िस्मत का पासा बिल्कुल ही उलट गया है।

२०—दुलारी का छुटकारा।

दासियों की दुख भरी बातें सुनकर दुलारी उनको बहुत २ तसल्ली दिया करती थी। अपनी इस क़ैद से छूट जाने पर उनको भी इस पापमय जीवन से छुड़ाकर दिलाकर उत्तम जीवन बिताने की उम्मैद बंधाती रहती थी। इस प्रकार होते होते जब उनको दुलारी की पूरी पूरी भक्ती होगई और दुलारी को भी उन पर पूरा २ विश्वास होगया तो उसने ज़िले के हाकिम के नाम चिट्ठी लिखकर उनके द्वारा डाक में डलवादी, जिसमें लिखा था कि तीन महीने से गुमानीलाल ने मुझको अपने मकान में बन्द कर रक्खा है, आप स्वयम यहां आवें और मेरा न्याय करके मुझे छुटकारा दिलावें।

इस चिट्ठी के पहुंचने पर ज़िले का बड़ा हाकिम तुरन्त ही वहां आया, गुमानीलाल को बुलाया और चिट्ठी को दिखाया। गुमानीलाल (कांपते हुवे) हां यह तो मेरी स्त्री की चिट्ठी है जो पागल होगई है।

हाकिम—अच्छा तो हम उस पागल से ही मिलना चाहते हैं।

इस पर गुमानीलाल डरता कांपता हाकिम को दुलारी के

पास ले गया और दुलारी ने अपना सारा हाल ज्यों का त्यों सुनाया।

हाकिम-यह स्त्री पागल नही हो सक्ती है।

गुमानीलाल-हजूर इस देश की कोई भी लड़की अगर वह पागल न हो तो अपने ब्याह के मामले में माँ बाप के सामने इस तरह की ज़िद नही कर सक्ती है जैसी इसने की है।

हाकिम-तब तो तुमने जान बूझकर ही पागल स्त्री से ब्याह कराया।

गुमानीलाल-हजूर यह स्त्री असल में पागल नहीं है लेकिन बात पागलों की सी करती है।

हाकिम-खैर जो कुछ हो, यह बात तो दीवानी की अदालत ही तै करेगी कि इस प्रकार ज़बरदस्ती फेरे फिर जाने से असलियत में विवाह होगया है या नहीं, और यह स्त्री तुम्हारी जोरू बन गई है या नहीं, लेकिन इतना कहे बिदून नहीं रहूंगा कि तुम्हारा इसका सम्बंध अनमेल ज़रूर है, और जब यह स्त्री तुम से विवाह कराने में इतने ज़ोर के साथ इनकार करती थी तो इसके मां बाप ने इसपर ज़बरदस्ती ही नहीं की है बलिक बड़ा भारी जुल्म किया है। तुम्हारे जैसे प्रतिष्ठित और नगर के आनरेरी मजिस्ट्रेट को तो हर्गिज़ भी ऐसे जुल्म में शामिल नहीं होना चाहिये था। कमलावती पर दबाव डालने के वास्ते किसी बदमाश से उसके पति राबेलाल पर झूठा मुक़दमा दायर करादेने का जो इल्ज़ाम यह स्त्री तुम्हारे ऊपर लगाती है, उसके सच होने का शुबह भी इसही वजह से पक्का

होता है। इस कारण मै ज़रूर पूरी २ खोज कराऊंगा, और अगर यह बात सच निकली तो तुम पर फौजदारी का मुक़दमा भी ज़रूर चलाना पड़ेगा। इसही के साथ यह ज़ाहिर कर देना भी ज़रूरी समझता हूं कि अगर कोई स्त्री किसी की ब्याहता भी सिद्ध हो जावे तो अदालत ज़बरदस्ती उस स्त्री का हाथ उसके पति को नही पकड़ा देती है पति की ज़बरदस्ती तो उसपर कभी भी नहीं हो सकती है, इसकारण मुझे तो यह भी संदेह होता है कि स्त्री को मकान में बन्द रखने में भी तुमने अपने अधिकार से बाहर ही काम किया है जिस से बहुत सम्भव है कि तुम पर इसकी बाबत भी मुक़दमा चलाया जावे।

हाकिम इतनीही बात कहिने पाया था कि गुमानीलाल घबराकर बीच में ही बोल उठा कि यदि मेरे सब अपराध क्षमा करदिये जावें तो मैं इस स्त्री के ऊपर से अपना साराही दावा उठालूं।

हाकिम-क्या तुम्हारा यह मतलब है कि जिस प्रकार यह स्त्री तुमको अपना पति नही मानती है इसही तरह तुम भी इसको अपनी पत्नी न समझो, मानो तुम्हारा इसका ब्याह ही नहीं हुआ है।

गुमानीलाल-जीहजूर, अगर मेरे पिछले सारे क़सूर मुआफ़ कर दिये जावे तो मै निस्संदेह ऐसा ही करने को तय्यार हूं।

हाकिम-तुम जो मुनासिब समझो करो, हम कुछ वादा नहीं करसकते हैं, हां अपना इतना ख़याल ज़रूर ज़ाहिर करदेना चाहते हैं कि अगर तुम इसको अपनी पत्नी ही रखना

चाहोंगे तो इस बात को सिद्ध कर देने के वास्ते अव्वल तो तुमको अदालत मे नालिश अवश्य करनी पड़ेगी और वहां से डिगरी पाने पर भी यह स्त्री तुम्हारी पत्नी होकर रहना मंजूर नही करगी और अदालत इसको ज़बरदस्ती तुमको सौंप नहीं देगी, अर्थात् डिगरी होने पर भी यह तुम को नहीं मिल सकेगी।

गुमानीलाल–हजूर तो हमारे माई बाप हैं, इसवास्ते यह सब कुछ मेरे भले के ही वास्ते समझा रहे है, मुझे तो यह भी पूरा पूरा भरोसा है कि हजूर मुझे सबही झगड़ों से बचालेंगे और कुछ भी आंच न आने देंगे।

हाकिम–मगर हम कुछ वादा नहीं करते हैं, हां इतना ज़रूर कहे देते है कि हमसे जहांतक हो सकेगा तुम को ख्वामख्वाह झगड़े मे नहीं डालेंगे, तुम ऐसा ज़्यादा मत घबराओ।

गुमानीलाल–मेरे ऊपर तो सदा ही हजूर की छत्र छाया रही है, आपके होते मुझे क्या घबराहट हो सकती है, मै तो अब खुशी से इस स्त्री से अपना सम्बन्ध हटाता हूं और आगे को इससे कुछ भी वास्ता नहीं रखना चाहता हूं।

हाकिम--हम तुम्हारे इस विचार की प्रशंसा करते हैं और इस स्त्री को आज़ाद करते हैं।

गुमानीलाल (हाथ जोड़कर) हजूर मेरी एक अन्तिम प्रार्थना यह भी है कि यह स्त्री कुछ दिनों तक इस ज़िले में न रहै, कहीं दूर देश में चली जावे, इसके यहां रहने से तो लोग बेमतलब भी मेरी हंसी उड़ावेंगे, इसके दूर देश जाने का सब खरच देने को मैं तय्यार हूं।

दुलारी-मैं नहीं चाहती कि मेरे कारण किसी की कुछ हानि हो इस वास्ते दूर देश जाना मैं मंजूर करती हूं।

इस समय दोनों दासियां दुलारी के पैरों पड़कर रो रोकर कहने लगीं कि देवी हमको भी साथ लेचल, हम भी तुम्हारी सेवा में रहकर अपना जीवन सफल करेंगी।

गुमानीलाल-अगर यह स्त्री इन दासियों को भी अपने साथ ले जाना चाहे तो इनका भी सफ़र ख़रच मैं देने को तय्यार हूं।

इस प्रकार यह तीनों ही स्त्रियां चलदीं, हाकिम स्वयम स्टेशन तक इनके साथ गया और साहसपुर का टिकट ले दिया गया।

२१-दुलारी सेविका।

साहसपुर पहुंच कर यह तीनों स्त्रियां एक धर्मशाला में जा टिकीं और उस दिन मुसाफ़िरों की सेवा करके उदर पूर्णा करली, अगले दिन नगर में घूम फिर कर दोनों दासियां तो दो जगह बच्चे खिलाने पर नौकर हो गईं और दुलारी ने एक बीमार स्त्री की सेवा करने की नौकरी करली।

इस बीमार स्त्री का नाम बसन्तीदेवी था, जिसने अभी दो महीने हुए एक पुत्र को जन्म दिया था, अपनी धोरानी जेठानी आदि किसी से भी उस स्त्री की नहीं बनती थी, सबही को ग़ैर समझती थी और अपने पति को भी यह ही शिक्षा देती रहती थी, झूठी सच्ची लगाकर उनसे उसका मन फाड़ती

रहती थी और कभी २ लड़ाई भी करा देती थी, ऐसी दशा में कौन उसके काम आसक्ता था और यदि कोई काम आना भी चाहे तो वह कैसे उनसे काम लेसक्ती थी और कैसे उनपर विश्वास कर सकती थी, इस कारण उसने तो बच्चा पैदा होने के समय दूर देश से अपनी बड़ी ननंद को ही बुलाया था, सब काम उसही से कराया था।

ननंद बेचारी बहुत डर डरकर काम करती खाने पीने के लिये जो कुछ उसकी भावज मांगती वह ही देती और हवा पानी और सर्दी गर्मी का प्रबन्ध भी जैसा वह कहती वैसाही करदेती। कुटम्ब की बड़ी बूढ़ी स्त्रियों की यह मजाल तो कहां थी कि ज़च्चा को समझावें और नुक़सान देने वाली बातों से बचावें, वह तो आगे पीछे उसकी ननंद को ही समझाती थी और ज़च्चा के सब नियम बताती थी, जिस पर वह बेचारी अपनी लाचारी जताकर यह ही कहने लग जाती थी कि दस दिन के लिये आई हूं क्यों उसे नाराज़ करूं और बुरी बनकर निकलूं, मै तो जो वह कहती है वह ही कर देती हूं और उस ही की हां में हां मिलाती रहती हूं।

इस प्रकार ज़च्चा की उचित सेवा न होने से उसको प्रसूत की अनेक बीमारियां होगई थीं और टांगों में बाय होकर चलना फिरना भी बन्द होगया था। ननंद बेचारी दो महीना ठहरी और जितनी बन पड़ी सेवा भी करती रही परन्तु एक तो उसके साथ उसके तीन बच्चे थे जिन की देखभाल में ही उसका बहुत समय लग जाता था, इसके सिवाय उसकी भावज को उसके इस रेवड़ का पालन पोषण भी भारी हो रहा था इस वास्ते उसको तो अब यहां से जाना ही पड़ा, या यूं कहो कि भावज ने उसको निकाल ही दिया।

उसके बच्चों से तंग आकर उसने अपनी ननंद को भेज तो दिया परन्तु उसके चले जाने पर उसके नाक में दम आगया, अब बच्चा तो अपनी मां के पास पड़ा २ बिलबिलाता रहता था जो उसको न उठा सकती थी और न बिठा सकती थी, रोटी इस के पति को बनानी पड़ी जो कच्ची पक्की जैसी बन सकती बनाता वह ही आप खाता और वह ही ज़च्चा को खिलाता, जिससे ज़च्चा की बीमारी और भी ज़्यादा बढ़ गई और पति को भी कुपच की बीमारी होगई। कुटम्ब की स्त्रियां ऐसी नही थी जो बिल्कुल ही आंखों पर ठीकरी रख लेती और चुपचाप बैठी रहती, वह तो बराबर आती थीं बच्चे को भी गोद में उठाना चाहती थीं और रोटी बनाने को भी तय्यार होती थीं परन्तु बसन्ती को कब उन पर विश्वास हो सकता था और साथ ही यह भी डर लगा रहता था कि वह उमरभर एहसान जतावेंगी और ताने दे दे मारेंगी, इस वास्ते वह तो सौ मुसीबत उठाती थी पर उनसे ज़रा भी काम नहीं कराती थी।

इस ज़च्चा का पति विष्णुदत्त कचहरी में ६० रुपये महीने का नौकर था, इस कारण बहन के चले जाने पर पहले तो उसने १० दिन की छुट्टी ली जिसकी तनख्वाह नही कटी फिर एक महीने की छुट्टी बिला तनख़ाह के मिली, जिससे उसको ख़र्च की भी मुश्किल पड़गई, और आगे को तो छुट्टी भी मिलने की उम्मैद न रही। नौकरी ही छुट जाने की फ़िकर होने लगी, अब दुलारी के रख लेने पर यद्यपि दुलारी ने सब काम अपने हाथ में ले लिया था परन्तु रोटी वह उसके हाथ की नहीं खा सकते थे इस वास्ते रोटी तो अब भी विष्णुदत्त को ही बनानी पड़ती थी।

बसन्ती के इलाज में नित्य नये से नये हकीम डाक्टर आते

थे और गंडे तावीज़ भी बनवाये जाते थे खोटे ग्रहों को हटाने के वास्ते जप भी बिठा रक्खे थे तो भी उसको कुछ फ़ायदा नहीं होता था। दिन दिन रोग बढ़ता ही जाता था कारण यह कि न तो वह ठीक तरह से दवा ही खाती थी और न परहेज़ ही करती थी। दुलारी ने कई दिन तक बहुत ही कोशिश की कि वह हकीम वैद्य के बताये अनुसार पर बर्ते परन्तु वहां उसकी कौन सुनता था, वह तो कभी कुटम्बियों को दोष देकर कोसने लग जाती, कभी अपने पति का क़सूर निकाल कर बुरा भला कहती, कभी अपनी क़िस्मत को ही रोने लगजाती, यह ही उसका काम था, और यह ही उसकी बीमारी का एकमात्र इलाज था जो हो रहा था। लाचार एक दिन दुलारी ने उसके पति को कहा कि हकीम डाक्टर को बुलाने और दवा मोल लाकर डाल देने से क्या होता है जब कोई खाता ही नहीं है।

विष्णुदत्त-तो मै क्या कर सकता हूं, स्त्रियां तो सब ही ऐसी होती है जो दवा नहीं खाती है और परहेज़ भी करना नही जानती हैं।

दुलारी-तो हकीम डाक्टर को ही क्यो बुलाकर लाते हो?

विष्णुदत्त-इनकी तो प्रकृति ही कुछ ऐसी होती है कि यूं भी चैन नहीं लेने देती है।

दुलारी-प्रकृति तो ऐसी नहीं है, हां पुरुषों ने अपनी ज़बरदस्तियो से इन को ऐसी ज़रूर बनादी है।

विष्णुदत्त-नित्य के सब ही कामों में तुम्हारी आश्चर्य जनक होशियारी और बुद्धिमानी देखकर मुझे तो पहिले ही यह निश्चय होगया था कि तुम कोई साधारण स्त्री नहीं हो

और किसी दैवी कारण से ही यहां नौकरी करने आगई हो, इस वास्ते तुम्हारी बात मैं बहुत ध्यान से सुनना चाहता हूं और समझना चाहता हूं कि किस प्रकार पुरुषों की ज़बरदस्ती से स्त्रियां ऐसी होगई है।

दुलारी-मै अधिक लिखी पढ़ी तो नहीं हूं, किन्तु स्त्रियों की दशा पर बहुत कुछ विचार करती रही हूं जिससे बहुत कुछ समझ गई हूं और समझती जा रही हूं। यह तो आप जानते ही है कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपने पैर की जूती और अत्यंत ही दीन हीन वस्तु समझ रक्खा है इस ही कारण पुत्र की उत्पत्ति पर तो खुशियां मनाते है और कन्या के पैदा होने पर रोने लगजाते हैं, उसको बिल्कुल ही निरादरी करके रखते है और ईंट पत्थर वा कूड़ा करकट के समान ही समझते है, फल जिसका यह होता है कि वह भी अपने को नीच अति नीच ही समझने लगजाती है और प्रकृति भी उनकी नीच ही बनजाती है, खाने पीने को भी उनको गिरा पड़ा मोटा झोटा ही मिलता है और तन्दुरुस्ती का भी उनके कुछ ख़याल नहीं होता है, यह ही कारण है, कि बड़ी होकर भी वह दवा नही खाती हैं और परहेज़ करना भी नहीं जानती है।

विष्णुदत्त-परन्तु कन्याओं को तो केवल पुरुष ही घृणा की दृष्टि से नहीं देखते है, स्त्रियां भी तो उनको ईंट पत्थर ही समझती है और निरादरी ही रखती हैं।

दुलारी-जब बचपन में कन्याओं को यह निश्चय हो जाता है कि हम बिलकुल ही नीच और निकम्मी चीज़ है तो बड़ा होने पर स्त्री बनकर वह भी कन्याओं को नीच ही समझने लग जाती हैं और घृणा ही करने लग जाती हैं।

विष्णुदत्त-अच्छा यह बात तो तुम्हारी शायद ठीक भी हो परन्तु स्त्रियां आपस में द्वेष क्यों रखती हैं, लड़ती क्यों रहती हैं, और राक्षसों और चांडालो की तरह बेधड़क कोसने क्यों लग जाती हैं।

दुलारी-मेरी समझ में तो इसमें भी सारा दोष मर्दों का ही है, पिछले ज़माने में पुरुष अनेक स्त्रियां ब्याह लाते थे, और भेड़ बकरी की तरह उनका रेवड़ इकठा करने में ही अपनी बड़ाई मानते थे, इस कारण सौतिया डाह की आग घर घर धधक़ती रहती थी, और सौतनों में आपस में खूब ही लड़ाई रहती थी। अनेक स्त्रियां ब्याहने की यह प्रथा हज़ारों बरस तक रही है जिसके कारण स्त्रियों में आपस में द्वेष रखने और कलह करती रहने की आदत ही पड गई है। रही कोसने की चाल, सो वह भी इस ही से चली है, वह ही एक पुरुष की अनेक स्त्रियां अपने पेट से पैदा हुए पुत्र का तो जीना मनाती थीं और सौत के पुत्र का मर जाना चाहती थी, चाहती ही नहीं थीं, बल्कि ऐसे २ गुप्त उपाय भी करती थीं जिससे सौत के पुत्र मर जायं और मरैं नहीं तो पति के मन से तो अवश्य ही गिर जायं, द्वेष की यह प्रचंड अग्नि उनके हृदय में हर वक्त ही जलती रहा करती थी जिससे वह हर वक्त ही मन मन में सौत के पुत्र को कोसती रहा करती थीं, इस ही से होते होते स्त्रियों में कोसने की आदत ही होगयी है और छूटने में नहीं आती है। इसही सौतिया डाह में स्त्रियां ऐसे जंतर मंतर और टोने टोटके भी कराती रहती थीं जिससे सौत के पुत्र मर कर फिर उनके उदर से पैदा हो जायं, इस ही डर से वह सौतें अपने पुत्र को सौत के पास नहीं जाने देती थी, फिर होते होते स्त्रियो में इस डर का एक प्रकार का अभ्यास सा ही होगया

है, और अब अपने बच्चों को दौरानी जेठानी के पास भी नहीं जाने दिया जाता है। इस ही से प्रसूत के समय भी दौरानी जेठानी पर भरोसा नहीं किया जाता है बल्कि दूर देश से ननंद फुफस को ही बुलाया जाता है, क्योंकि उस समय में स्त्रियां अपनी सौत के बच्चा जनने के वक्त बड़ी २ दुष्टता करती थीं और उसको हानि पहुंचाने में कोई भी कसर नहीं रख छोड़ती थीं, कहानियां तो यहां तक कही जाती हैं कि जच्चा ने जो बच्चा जना है वह तो उसकी सौत ने उठा लिया है और उसकी जगह पत्थर रखकर, पत्थर जनना ही प्रसिद्ध कर दिया है।

विष्णुदत्त-तो तुम्हारे कथन के अनुसार तो स्त्रियों के सारे ही खोटे स्वभाव सौतिया डाह ही के कारण पड़े हैं, और इस सौतिया डाह के पैदा कराने के दोषी उस समय के पुरुष ही है जो अनेक स्त्रियां व्याह कर सौतिया डाह उत्पन्न होने के कारण जोड़ते रहा करते थे।

दुलारी-ऐसा तो है ही, अभी आप देखते है कि स्त्रियां बहुत ही ज़्यादा मायाचारिणी और वज्र के समान कठोर हृदया हो रही हैं, कारण इसका भी वह ही पुराना सौतिया डाह ही है। उस समय प्रत्येक सौत यह ही चाहती थी कि मै तो पति के मन चढ़ जाऊं और अपनी सौतों को बुरी बनाऊं, इस मतलब के लिये उनको नित्य ही नया मायाचार रचना पड़ता था, अपने दोषों को छिपाने और सौतों पर झूठे दोष लगाने के वास्ते सब ही प्रकार के मकर फ़रेब बनाने होते थे, छल कपट की चाल चलनी पड़ती थी, धोका और फ़रेब की घातें खेली जाती थीं और महा निर्दयता और क्रूरता के साथ अपनी सौतों और सौतो के पुत्रों का सत्यानाश करा देने के

उपाय मिलाने होते थे, ऐसी दशा में स्त्रियों का ऐसा खोटा स्वभाव हो जाना तो प्राकृतिक ही है।

विष्णुदत्त-तब स्त्रियां कोमल हृदया क्यों प्रसिद्ध हैं?

दुलारी-वास्तव में तो स्त्री की जाति कोमल हृदया ही है परन्तु पुरुषों ने हज़ारों बरसों तक बहुत २ स्त्रियां ब्याह कर उनमें सौतिया डाह भड़काकर उनको निर्दय और वज्र हृदया बना दिया है, यहां तक कि कोसना तो उनकी एक मामूली सी बात हो गई है। जल गया, मर जाना आदि शब्द तो वह प्यार में भी कहा करती हैं और कोसना तो वह ईंट पत्थर आदि वेजान चीज़ों को भी दे देती हैं, पुरुष तो जब किसी कुत्ता बिल्ली व ईंट पत्थर पर नाराज़ होते हैं तो चटापट अश्लील गालियां देने लग जाते हैं और स्त्री नाराज़ होती हैं तो कोसने लग जाती है, जिससे साफ़ जाहिर है कि पुरुषों को तो अश्लीलता का अभ्यास हो गया है और स्त्रियों को क्रूरता का, कारण इन सब बातों का वह ही अनेक स्त्रियां ब्याह लाने की पुरानी चाल ही है। जिस प्रकार स्त्री एक ही पति रख सक्ती है इस ही प्रकार यदि पुरुष भी एक से अधिक स्त्री न रख सक्ता तो न तो उसको ही अश्लीलता का अभ्यास होता और न स्त्रियों को ही कठोर हृदय बनना पड़ता।

विष्णुदत्त-परन्तु हम तो यह देखते हैं कि जब कोई मौत हो जाती है, तो कुटुम्बी पुरुष तो एक आध आंसू बहाकर ही चुप हो जाते हैं पर कुटुम्ब की स्त्रियां धड़ाधड़ छाती पीट डालती हैं और महीनों तक ऐसे कीरने डाल २ कर रोती हैं कि सुनने वालों की भी छाती फटने लग जाती है, तब वह कठोर हृदया कैसे कही जा सक्ती हैं।

दुलारी–यह सब स्वांग तो मायाचार के सिवाय और कुछ भी नहीं है, जिसका उनको चिरकाल से पूरा २ अभ्यास हो गया है, आपने अभी अपने ही कुटुम्ब में देखा है कि सूर्य नारायण की बीमारी में कुटुम्ब की स्त्रियां कुछ भी सहायता नहीं करती थीं, बीमार की टहल सेवा और उसकी स्त्री की सहायता करना तो दूर रहा, अगर अपने पास कोई चीज़ हो और बीमारी में दर्कार हो तो चाहे वह चीज़ पैसे दो पैसे की ही हो तो भी इन्कार कर देती थीं, और नहीं देतीं थीं। इसके अलावा अपने पुरुषों को भी बीमार की टहल सेवा के लिये जाने से रोकती थी और सख्ती के साथ कहती थी कि तुम्हारे दुख सुख में भी कोई काम आया है जो तुम जाओ और मुसीबत उठाओ, बीमार पड़ी २ तुम्हारी स्त्री ने भी इसही प्रकार तुमको रोका है और बीमार के पास नहीं जाने दिया है, परन्तु उसके मरने पर वह ही सब स्त्रियां नित्य जाती हैं और धड़ाधड़ रोपीट कर आती हैं, तुम्हारी बीमार पड़ी २ स्त्री भी जाने के लिये ज़िद करती थी और डोली तक में बैठकर जाना चाहती थी, अब तुमही बताओ कि यह स्त्रियां कोमल हृदया हैं वा कठोरहृदया और मायाचारिणी।

विष्णुदत्त–अच्छा तो अब यह भी बताओ कि स्त्रियों का त्रियाचरित्र क्यों प्रसिद्ध है।

दुलारी–कारण इसका भी वह ही बहुत स्त्रियां ब्याह लाने की खोटी प्रथा ही है, पुरुष चाहें जितनी स्त्रियां ब्याह लावे नेह तो वह एक ही से लगा सकता है अन्य सबको तो निरादरी छोड़ना पड़ता है। इस कारण यदि कोई ग़ैर मर्द किसी समय उनमें से किसी स्त्री को कुशील की तरफ़ झुका ले तो

आश्चर्य ही क्या हो सकता है, परन्तु पुरुष तो सदा यह ही चाहते रहे है कि हमतो स्वच्छन्द होकर उचित अनुचित जो चाहें करते रहै किन्तु स्त्रियां ईंट पत्थर की तरह जड़ पदार्थ ही रहें, इस कारण जब कभी किसी स्त्री की तरफ़ से कोई अनुचित बात सुनने मे आई तो पुरुषों ने दुहाई मचाई और सारी स्त्री जाति को ही बदनाम करने लग गये। नहीं तो स्त्रियां तो सदा शील को ही अपना भूषण समझती रही है और इसकी रक्षा के वास्ते अपनी जान तक देती रही है, बालविधवायें तक अपनी उमर शील संयम में विता देती है और पुरुषों मे तो सत्तर बरस के बुड्ढे को भी व्याह करने की सूझती है, फिर भी स्त्रियां ही बदनाम की जाती हैं और त्रियाचरित्र की दुहाई मचाई जाती है यह पुरुषों की ज़बरदस्ती नहीं तो और क्या है।

विष्णुदत्त-पुरुषों की ज़बरदस्ती तो तुमने सिद्ध करदी, अब तुम कृपा करके अपनी बाबत भी बतादो कि कौन हो एक रामदुलारी का नाम तो समाचार पत्रो में भी पढ़ा है जो देवी प्रसिद्ध हो रही है और गुमानीलाल जैसे करोड़पति की स्त्री बनना नहीं चाहती है।

दुलारी-(नीची गर्दन करके) हां वह मै ही हूं।

विष्णुदत्त-(चौंककर) तो देवी तुमने ऐसी अवस्था क्यों बनाई जो दासियों की तरह मेरे घर रहपाई।

दुलारी-मैने अपना जीवन स्त्री सुधार के लिये अर्पण कर दिया है, परन्तु मै अभी तुरन्त ही गुमानीलाल की क़ैद से छूटकर आ रही हूं इस वास्ते कोई प्रबन्ध नहीं कर पाई हूं।

इस पर विष्णुदत्त ने उसको अपने यहां दासी के तौर पर रखने का बड़ा पश्चात्ताप किया उसको बहुत बड़ा मान सन्मान दिया और नगर के सब ही परोपकारी पुरुषों से मिलाया। नगरभर में देवी के आने की धूम होगई, दुलारी एक अलहदा बड़े मकान में ठहराई गई और उसकी दोनों दासियां उसकी सेवा के वास्ते छोड़दी गई, स्त्री सुधार का काम शुरू होगया और इतना भारी काम होने लगा कि दुलारी को कान खुजाने की भी फुरसत न रही।

२२-सभा की स्थापना।

दुलारी अब भी विष्णुदत्त के यहां जाती थी और उसकी स्त्री को समझाती थी कि इस प्रकार तो तुम्हारे पति की नौकरी भी छूट जायगी और कच्ची पक्की रोटी खाने से तुम्हारी बीमारी भी बढ़ जायगी और बच्चे की भी जान पर आजायगी इस कारण अभिमान को छोड़कर और द्वेष को त्यागकर जिस तरह भी होसके अब तो तुम अपने कुटम्ब की स्त्रियों से ही सब प्रकार की सहायता लो और उनके एहसान को सिर धरो। वैसे न मानें तो खुशामद करो, अपना क़सूर मानकर उनसे क्षमा मांगो, और आगे के वास्ते अपनायत क़ायम करो और आपस में सहायता लेने देने का व्यवहार जारी करो। इस ही प्रकार वह उसके कुटम्ब की स्त्रियों को भी समझाती थी और मिलजुल कर रहने और दूसरे के काम आने के लाभ जताती थी और साथ ही इसके परोपकार भी सिखाती थी। आख़िर उन सबने उसकी बात को माना और विनाश होते घर को थामा।

अब नगर की अनेक स्त्रियां भी दुलारी के पास आती थीं और दुलारी भी स्त्रियों में फिर कर उनको अनेक प्रकार का उपदेश दे आती और बहुत कुछ अनुभव भी प्राप्त कर आती थी, परन्तु जितना २ भी वह उनका हाल मालूम करती जाती थीं उतनी ही अधिक २ दुर्दशा स्त्रियों की खुलती जाती थी, उनकी मूर्खता, नीचता और दुष्टता से सब ही घर नरककुंड बन रहे थे और स्त्री और पुरुष सब ही पूरा पूरा त्रास भोग रहे थे, और त्राह त्राह कर रहे थे। दुलारी ने इन सब दुखों के कारणों को अच्छी तरह खोजकर उपकारी पुरुषों को इकट्ठा किया और शान्ति के साथ समझाया कि तुम लोग स्त्रियों को चाहे जितना निरादर की दृष्टि से देखो, उनको अपनी बांदी गुलाम और पैर की जूती समझो, मूर्ख और गुण हीन रक्खो परन्तु काम तो तुम्हारे घर का सब उनही के हाथ रहेगा, और उनही की मूर्खता और दुष्टता के अनुसार चलेगा। राज्य तो तुम्हारे घर में उनकी नीचता और निर्लज्जता का ही रहेगा घर तो तुम्हारा ही नरक स्थान बनेगा अर्थात तुमको भी नरक में ही रहना पड़ेगा, इसके अलावा तुम्हारी सन्तान भी तो उनही के उदर से पैदा होगी, उनही की गोद में पलेगी, वह ही उनका उठान करेंगी और वह ही उनको भली बुरी मति देंगी वह ही उनकी बुरी भली आदत बनावेंगी, इस कारण तुम्हारी सन्तान तो वैसी ही बांदी गुलाम और पशु समान बनेंगी जैसी वह तुम्हारी स्त्रियां हैं, यह ही तुम नित्य देख रहे हो और रो रो सब आफतें झेल रहे हो किंतु इनके सुधार की कुछ भी चेष्टा नहीं करते हो, इनको दूरदर्शी, बुद्धिमान, और ऊंचे और उत्तम भावों वाली नहीं बनाना चाहते हो।

पुरुष—हमतो इनको बहुतेरा ही समझाते हैं कड़ी २ गालियां

देकर धमकाते हैं और कभी २ मारने पीटने भी लग जाते हैं परन्तु इनकी तो प्रकृति ही कुछ ऐसी नीच होती है कि ज़रा भी नहीं लजाती हैं, सदा अपनी नीचता ही चलाती रहती हैं।

दुलारी–जब वह ईंट पत्थर के समान बिल्कुल ही निरादरी रक्खी जाकर बचपन में ही नीच बनादी जाती हैं, तब पराये घर जाकर गालियां सुनने और मार पीट खाने से वह क्या शरमा सकती हैं, इससे तो उनकी धृष्टता बढ़ती ही चली जाती है। इनका तो असली सुधार तबही होसकता है जब बचपन से ही उनको लड़को के समान मान सन्मान दिया जावे, उन ही के समान इनका लालन पालन करके इनके उच्च भाव बनाये जावें और विद्या से विभूषित करके इनकी बुद्धि को चमकाया जावे।

इस प्रकार की अनेक बातें समझाकर दुलारी ने पुरुषों को उकसाया और समझाया कि स्त्रियों के नीच होने से पुरुषों का ही घर बिगड़ता है उनको ही महा दुख निकलता है, इस कारण पुरुषों को तो अपना महान कर्तव्य समझकर बहुत ही ज़ोर के साथ स्त्री सुधार का बीड़ा उठाना चाहिये, जिससे उनके घर स्वर्गधाम बनने लगजावें और वह सब स्वर्ग का सुख उठावें। होते २ स्त्री दशा सुधारनी नाम की एक महती सभा स्थापित होगई जिसके उद्देश्य प्रारम्भ में इस प्रकार ठहराये गये।

१–गृहस्थरूपी गाड़ी के स्त्री और पुरुष दो ज़रूरी पहिये हैं, जिनमें से किसी एक के भी ख़राब होजाने से गृहस्थ उत्तम रीति से नहीं चल सकता है। इस कारण स्त्री और पुरुष दोनों ही को समान समझना चाहिये दोनों को ही समान आदर

देना चाहिये और दोनो ही को उत्तम बनाने की कोशिश करनी चाहिये,।

२-यदि कन्या न हों तो पुरुषों को स्त्रियां न मिल सकें और संसार समाप्त होजावे, इस कारण कन्याओं का पैदा होना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि लड़कों का पैदा होना, इस लिये कन्याओं के पैदा होने की भी वैसी ही खुशी मनानी चाहिये जैसी पुत्रों की।

३-सब ही पुरुषों का यह मुख्य कर्तव्य और भारी ज़िम्मेदारी होनी चाहिये कि वह अपनी कन्याओं को पूरा पूरा सन्मान देकर उनमें लज्जा साहस और आत्मसन्मान पैदा करावें ऊंचे से ऊंचे भाव बनावें और सब गुण सिखावें।

४-गुणवान पुरुष को उसके समान गुणवान कन्या ही व्याही जावे, और गुणवान कन्या के वास्ते उस ही समान गुणवान वर मिलाया जावे, गुणहीनों की ज़ोड़ी गुणहीनों से ही मिलाई जावे।

५-जो माता पिता पुत्रों के समान अपनी कन्या का सन्मान न करते हों उसको निरादरी ही रखते हों ऐसे माता पिताओं का भी सन्मान न किया जावे, उनको निरादर की ही दृष्टि से देखा जावे।

६-विवाह में कन्या के माता पिता आदि कुछ भी न खर्चने पावें, न तो कोई दान दहेज़ ही देपावें, और न सगे सम्बंधियों वा बिरादरी में ही कुछ भाजी बटवावे, और न कन्या के वास्ते ही कोई नवीन वस्त्र वा आभूषण बनवावें वह तो वरपक्ष के

आते ही कन्या का पाणिग्रहण कराकर जैसी की तैसी को विदा करके फ़राग़त पावें।

७-विवाह से पहले अर्थात् क्वारपन में कन्या को कोई आभूषण न पहनाया जावे और वस्त्र भी उनको बिल्कुल सादा ही पहनाये जावें, व्याहे पीछे ससुराल वाले चाहे जैसा बढ़िया वस्त्राभूषण पहनावें।

८-गौना, तीसरा, चौथा आदि रीतियां बिल्कुल ही तोड़दी जावें, स्त्री जब कभी अपने बाप के यहां जावे तो न तो कोई चीज़ रीति के तौर पर वहां लेकर जावे और न वहां से कोई चीज़ रीति के तौर पर लेकर ही आवे।

९-पुत्र का विवाह हो वा पुत्री का मामा के यहां से भात आदि रीति के तौर पर कुछ भी न आवे, इस ही प्रकार स्त्री के गर्भ रहने वा सन्तान जनने पर उसके पिता के यहां से साध-खिचड़ी छूछक आदि किसी भी रीति के तौर पर कुछ न भेजा जावे।

१०-वरपक्ष वालों को तो वैसे ही स्त्री के मां बाप का एह-सानमन्द रहना चाहिये कि उन्होंने उत्तम रीति से अपनी कन्या का लालन पालन करके और उसको गुणवान बनाकर हमारे सपुर्द करदिया।

११-कन्या पक्षवालों को भी वर पक्ष से नक़दी वा किसी प्रकार का माल असबाब आदि नहीं लेना चाहिये बल्कि एह-सानमंद होना चाहिये कि हमारे स्थान में अब वह हमारी पुत्री का लालन पालन करेंगे और सब भार उठावेंगे।

१२-कन्या का विवाह १६ वर्ष की आयु पूर्ण होने से पहले और पुरुष का २१ वर्ष की आयु पूर्ण होने से पहले न किया जावे।

१३-विवाह तब ही हो जब वर कन्या को और कन्या वर को मंजूर करलेवे।

१४-वर कन्या से १० बरस से अधिक आयु का न होने पावे।

१५-कन्या का विवाह कुंवारे से ही होपावे, व्याहे वा रंडुवे से न होने पावे।

१६-न तो स्त्री ही एक समय में एक से अधिक पति बना-सके, और न मर्द ही एक वक्त में एक से अधिक स्त्री रख सके जिस प्रकार एक से अधिक पुरुष के साथ सम्बंध रखने वाली स्त्री व्यभिचारिणी समझी जाती है इस ही प्रकार एक से अधिक स्त्री रखनेवाला पुरुष भी अच्छा न समझा जावे।

१७-स्त्री और पुरुष दोनों ही के वास्ते सुशील रहना ज़रूरी है।

१८-यदि कोई स्त्री कुशीली होजावे तो उसके पति को चाहिये कि उसको अलग करदेवे और उसके फिर पूर्ण सुशीला होजाने पर बड़ी कड़ी शर्तों पर ही क्षमा करके उसको अपने पास रक्खे, इस ही प्रकार यदि पुरुष कुशीला होजावे तो स्त्री को अधिकार है कि उससे अलग रहने लगजावे और जब तक कि पुरुष पूर्ण शीलवान होकर उससे क्षमा न मांग लेवे उसके पास न आवे

१९-स्त्री के मरजाने पर पुरुष किसी विधवा को व्याहले और पति के मरजाने पर स्त्री किसी रंडुवे से विवाह कराले।

२०-जिस प्रकार १६ वरस की आयु होजाने पर कन्या का विवाह करदेना अत्यंत ही ज़रूरी है इस ही प्रकार रांड और रंडुओं का व्याह होजाना भी ज़रूरी समझा जावे।

२१-परन्तु कन्या हो वा रांड, कुवारा हो वा रंडुवा, सवही को अधिकार है कि वह अपना जीवन धर्मार्थ व परोपकारर्थ अर्पण करदें और व्याह न करावें, परन्तु यह वड़ी ही कठिन तपस्या है जिसका निभाना आसान नहीं है, इस कारण वहुत ही सोच समझकर अंगीकार करना चाहिये और जव अपना मन डगमगाता नज़र आवे तव ही व्याह करा लेना चाहिये।

इन उद्देश्यों को प्रचार देने के वास्ते दुलारी ने सभा की तरफ़ से अनेक छोटी २ पुस्तकें वनवाईं, अनेक लेख समाचार पत्रों में छपवाये, नगर नगर और ग्राम ग्राम उपदेशक भिजवाये और पंचायतें कराईं, सभायें वनवाईं और अन्य भी अनेक प्रकार की सर तोड़ कोशिशें की, जिससे जल्दी ही उसको सफलता भी प्राप्त होगई, स्त्री और पुरुषों की जो बुरी दशा हो रही थी वह वहुत कुछ सुधरने लगी।

२३--दुलारी को जेलखाना।

दुलारी इन उद्देश्यो के प्रचार में लग ही रही थी कि एक दिन उसने एक समाचार पत्रमें "एक अभागी कन्या का कोढ़ी से व्याह" नामका विज्ञापन पढ़ा जिसमें लिखा था कि माता पिता के मरजाने से मै एक दूर के सम्वंधी के हाथ पड़ गई हूं जो मुझे एक बूढ़े कोढ़ी के साथ व्याह देने वाला है, जेठ वदि १३ व्याह की तिथि नियत होगई है, यदि किसी के हृदय में

दया और साहस हो तो कुठारपुर आकर मेरी जान बचावे और पुन्य कमावे। इस विज्ञापन के पढ़ते ही दुलारी एक दम कांप उठी और तुरन्त चलने को तय्यार होगई, उस वक्त रात के दस बजे थे, आध घंटे पीछे रेल जाती थी, इस वास्ते बिना कोई असबाब साथ लिये वैसे ही चलदी, यह देखकर दासियां भी वैसे ही उसके साथ होलीं।

चलते २ जब कुठारपुर १५ मील रहगया तो रेल का पय्या पटरी से उतर गया और रेल का चलना बन्द होगया। नहीं मालूम कब पय्या पटरी पर चढ़े और कब रेल चले, यह विचार कर वे रेल से उतर पड़ी, रात का समय था कोई सवारी उस समय मिल नहीं सक्ती थी इस कारण पैदल ही चलदीं, परन्तु तीन चार ही मील गई थी कि चोरों से घिर गईं, जिन्होने दुलारी और गौरा की साड़ी उतार कर इनको बिल्कुल ही नंगी बूची करदिया। गुलाबो उस समय मल मूत्र त्यागने के वास्ते रास्ते से एक तरफ़ हो रही थी इस वास्ते वह बचरही, लाचार उसकी साड़ी के तीन टुकड़े करके तीनों ने लंगोटी सी बांधली और आगे चलदीं।

दो चार मील और आगे चलने पर सुबह होगई, मुसाफ़िर इनको ठगनियां समझकर कतराने लगे, अब यह भी इतनी थक गई थीं कि आगे क़दम नहीं रक्खा जाता था, इस वास्ते सड़क पर ही पड़गईं और कुछ देर बाद उठकर फिर चल पड़ीं और गिरती पड़ती एक घंटा रात गये कुठारपुर पहुंच ही गईं, जहां उस वक्त बारात जीम रही थी और एक बजे फेरे होने निश्चय हो चुके थे। इन्होंने अन्दर स्त्रियों में जाना चाहा तो लोगों ने नहीं जाने दिया और कुछ खाना देकर वहां से हटा दिया,

इन्होंने पास ही एक कूवेपर बैठकर खाना खाया और पानी पिया तब इनको कुछ होश आया।

वहां कुछ कंगाल स्त्रियां फेरों के समय पैसे मिलने की आशा से इकट्ठी होनी शुरू हो रही थीं, जिनसे यह बातो मे लग गई। उनमें से भग्गो नामकी एक पिसनहारी ने उस लड़की का हाल इस तरह बताया कि वह खजूरवाला गांव की रहने वाली है प्रसन्नी उसका नाम है, बाप उसका अच्छा अमीर आदमी था, जो लेन देन करता था और कुछ ज़मींदारी भी रखता था। पीछे वह प्लेग में मरगया, प्रसन्नी का एक छोटा भाई रामदयाल है, दोनों को उनकी विधवा मां ने पाला, पर दोही बरस पीछे वह भी मरगई। इन बच्चो के बाप चार भाई थे, उनमें से एक की तो रांड बैठी है और दूसरे का जमनादास नाम का एक लड़का है, तीसरा गुरू बख्श अभीतक जीता है, रांड तो अपने बाप के ही घर रहती है, और जब आती है तो लड़ती भिड़ती ही आती है, रहे इन बच्चों का चाचा और चाचा का बेटा, उन्होंने तो इनको खूब ही लूटा, जो कुछ जमा पूंजी इनकी मां ने छोड़ी थी सब हज़म कर लिया, वह तो ज़मींदारी को भी हड़प कर जाना चाहते थे और इनकी जान तक के लागू होगये थे, पर इन बच्चों की बूआ चम्पा इनको यहां अपने घरले आई, रहे तो यहां भी दास दासियों के समान ही पर इनकी जान तो बच गई। बरस दिन पीछे इनकी बूआ भी मरगई, पीछे इनके फूफाने इनके चाचा पर नालिश करके इनका कुछ माल भी उगलवाया और ज़मीन पर भी क़ब्ज़ा पाया, अब वह ही इनका फूफा अपना व्याह कराने की फ़िकर में हुवा, ५० के क़रीब उमर आगई है, कौन ऐसे बुड्ढे को अपनी लड़की दे, और जो कोई देना भी चाहता है तो सात हज़ार

मांगता है। तीन चार हज़ार तो दे भी दे पर बड़ी जातियों में तो लड़कियों का मोल ही बहुत बढ़गया है, तब लाचार उसने प्रसन्नी के बदले मे ही अपने व्याह का जोड़ मिलाया है।

यह जो व्याहने आया है रामानन्द जिसका नाम है, अपने गांव में तो वह भी अमीर ही बजता है, उमर भी ४०, ५० के बीच में ही है, सुना है इसको गर्मी की बीमारी होगई थी, उस ही से फिर कोढ़ चूने लगा, इसकी औरत कोभी यह ही बीमारी लग गई थी पर वह तो चलबसी और इसको व्याह करने की सूझी, पर कोढ़ी को कौन अपनी लड़की दे, अब और सुनो कि इस ही रामानन्द के भी एक भाई था, जिसका कोई बेटा तो है नहीं एक विधवा बेटी है जिसके सास ससुर सब मरगये हैं एक छोटी ननंद रामप्यारी रह गई है जिसकी सगाई उसने प्रसन्नी के फूफा भैरोंदयाल से करदी है और उसके बदले में भैरोंदयाल ने प्रसन्नी का व्याह रामप्यारी की भावज के चाचा इस रामानन्द से ठहरा दिया है जिसकी यह बारात आई हुई है, इस व्याह के पंद्रह दिन पीछे भैरोंदयाल का भी व्याह होजावेगा और दोनों का बदला चुक जावेगा।

इन दोनो अभागी लड़कियों की यह व्यथा सुनकर दुलारी के हृदय में बहुत ही भारी चोट लगी, और रोकर भग्गो से पूछने लगी कि माई अगर तुम्हारी प्रसन्नी का व्याह इस कोढ़ी से न होकर किसी योग्य वर के साथ ही हो तो तुम्हारी समझ में कैसी बात हो।

भग्गो-बेटी यह तो अच्छी ही बात हो, पर इसने ऐसे भाग कहां किये है जो घर आई बारात टलजाय। हाय हाय कैसी फूलसी लड़की बुड्ढे कोढ़ी को ब्याही जाती है इस बात के

विचार करने से मेरी तो छाती भर भर आती है, पर ऊंची जात वालों मे तो ऐसी ही बातें होती रहा करती है। अभी एक ऊंची जात की रांड ने बच्चा जनकर और अपने हाथ से मारकर जंगल में फेंक दिया है कैसा सुन्दर बच्चा था मुझे तो उस बच्चे को देखकर भी रुवाई ही आती थी और हाथ जोड़कर बार बार यह ही कहती थी कि भगवान चाहें नरक मे भेज देना पर किसी ऊंची जात में पैदा न करना जिससे ऐसे ऐसे महा कुकर्म करने पड़ें।

दुलारी-जो इस तुम्हारी प्रसन्नी को कोढ़ी से व्याही जाने से बचाने के वास्ते कुछ भाग दौड़ करनी पड़े तो करोगी भी।

भग्गो-हां हां जो इसकी जान बचे तो मै तो रातो रात दस कोस तक भागी चली जाऊं और जिसको कहो उसको बुलाकर लाऊं, पर इसका कौन बैठा है जो आवे और इसकी जान बचावे।

गौरा-स्वयम देवी आई है इसके बचाने को तो।

भग्गो-कहां है वह देवी और तुम कौन हो।

दुलारी-अभी हम नहीं बता सक्ती हैं कि कौन हैं, पर तुम चुपके से प्रसन्नी से जाकर कहदो कि घबरावे नहीं, उसकी जान बच जायगी, पर देखना उसके सिवाय अन्य कोई इस बात को नसुने।

यह कहकर दुलारी और उसकी दासियां तो वहां से चलदीं और भग्गो ने अन्दर जाकर प्रसन्नी से कहदिया कि तेरी जान बचाने के वास्ते तो स्वयम देवी मय्या आने वाली है, अभी अभी तीन भूलनियां कहीं आकाश से उतर कर कूंवे

पर आई थीं जो इतनी बात बताने के वास्ते मुझे तेरे पास भेजकर अदृश्य होगई है। प्रसन्नी यह बात सुनकर चकित सी रहगई और उधेड़ बुन में पड़गई, अन्त को उसके मन को कुछ ढारस ज़रूर होगया कि कुछ हो यह व्याह नही होने पायेगा, और आखिर को होते २ उसने यह भी विचार कर लिया कि अगर कोई सहायता को भी नही आयगा तो स्वयम साहस करूंगी और फेरे नही होने दूंगी। इस प्रकार इधरतो प्रसन्नी अपनी हिम्मत बढ़ा रही थी और बाहर भग्गो पिसनहारी सब से काना फूसी करती फिरती थी कि आज फेरो के वक्त देवी आवेगी और प्रसन्नी को अपने विमान मे विठाकर ले जावेगी इस कोढ़ी से फेरे नही होने देगी।

उधर दुलारी दासियो के साथ गांव के लोगों के पास गई और दुहाई दी कि तुम्हारे गांव में ऐसा भारी जुल्म होने वाला है, तुमको उचित है कि अपने कर्तव्य को पालो और अपने गांव में ऐसा अधर्म न होने दो। लोगों के हृदय में दुलारी के इस कहने की चोट तो बहुत लगती थी परन्तु प्रसन्नी के फूफा के मुक़ाविले में किसी का भी ढेठ नहीं पड़ता था और इन नंग धड़ंग स्त्रियों का कुछ प्रभाव भी नहीं पड़ता था। इस वास्ते सब ने इनकी बात को वैसे ही टालदी, आख़िर यह स्त्रियां वापस चली आई और फेरो के वक्त जब वर और बाराती अन्दर हवेली में गये तो यह भी उनके पीछे २ चली गई। अन्दर पहुंचते ही दुलारी एक दम ललकार कर बोली कि यह विवाह नहीं होगा तुम सब लोग वापस चले जाओ। फिर दासियां भी बोल पड़ीं कि देवी की आज्ञा है, यह ब्याह नहीं होगा, नहीं होगा, बिल्कुल नहीं होगा!

इनका यह ललकारा सुनकर प्रसन्नी उछल पड़ी और

देवी मय्या की जय जय कहती हुई एकदम भागकर बाहर आई और दुलारी के पैरों में जापड़ी। जय जयकार की आवाज़ सुनकर मकान के बाहर बैठे हुए कगले भी देवी के आने का निश्चय करके जय जयकार करने लगगये, जिससे गांवभर में ही जयकारे की गूंज होगई।

दुलारीने प्रसन्नी को उठाकर छातीसे लगया और प्रसन्नी भी गिड़गिड़ा कर यह कहती हुई उसको चिमट गई कि देवी मेरी जान छुड़ाओ, इन कसाइयोंसे मुझे बचाओ जो मुझे बुड्ढे कोढ़ीके साथ ब्याहते है और कुछ भी दया हृदय में नहीं लाते है। इस-पर दुलारी उसको धीरज बंधाने लगी कि अब तुझ पर कोई ज़बरदस्ती नहीं हो सकती है अब तू कोढ़ी के साथ नहीं ब्याही जा सकती है, यह दृश्य देखकर बराती हैरान थे कि यह नंग धड़ंग स्त्रियां कौन है और गांववाले भी मन ही मन विचार रहे थे कि हमने तो इनको कंगली समझा था, परन्तु यह तो कोई अलौकिक ही शक्ती मालूम होती है।

इतने में प्रसन्नी के फूफा ने चिल्लाकर कहा कि कौन हो तुम जो बिना पूछे अन्दर मकान में घुस आई हो, निकल जाओ एकदम यहां से नहीं तो थाने में पकड़वा दी जाओगी, फिर प्रसन्नी से बोला कि हट यहां से और चल अन्दर नहीं तो तेरी हड्डी पसली एक कर दूंगा इस पर रामानन्द भी खूब चिल्ला २ कर कहने लगा कि देखते क्या हो निकालते क्यों नहीं हो एक-दम धक्के देकर इन ठगनियों को। इस पर बरात के कुछ आदमी इनको निकालने के वास्ते उठने ही को थे कि दुलारी कड़ककर बोली कि लोगो तुम भी बेटा बेटी वाले हो, धर्म कर्म रखते हो, ईश्वर से डरते हो, तो क्या तुम अपनी आंखों के सामने ऐसा

अन्याय होता देख सक्के हो? मां बाप सब के मरते आये हैं, कौन जानता है किस अवस्था में किसके बच्चे माता पिता विहीन हो जांय, असहाय और अनाथ हो जांय, बेटा बेटी वालो डरो परमेश्वर के ग़ज़ब से, बैठे बैठे तमाशा मत देखो, यह पुरुषों का धर्म नहीं है। साहस करके उठो और क़साई से गऊ को छुड़ाओ, नहीं तो इसका कलंक तुम्हारे ही ऊपर रहेगा और परमेश्वर भी तुम से रूठ जायगा।

दुलारी की यह बातें सुनकर सब ही का हृदय कांप उठा और यह ही विचार होने लग गया कि सब के सब चाहें तो यह ब्याह तो रोक ही दिया जावे, इतने में प्रसन्नी का फूफा गुस्से में भरा हुवा दुलारी की तरफ़ झपटा और किचकिचा कर वहुत ही ज़ोर के साथ प्रसन्नी की बांह पकड़ कर उसको खींचकर वहां से हटाने लग गया। परन्तु दुलारी ने उसको ऐसा चिपटा लिया कि वह किसी प्रकार भी न छुड़ा सका, तब उसने लात घूसो से मारना शुरू कर दिया। दुलारी ने उसकी सब मार खाई पर प्रसन्नी को नहीं छोड़ा, इतने में दासियां बीच में पड़ गईं और सारी मार अपने ऊपर झेलने लगीं, और ज़ोर २ से कहने लगीं कि चाहें जो करलो पर प्रसन्नी का ब्याह इस बुड्ढे कोढ़ी से नहीं हो सकता है। इस पर लोगों ने उठकर प्रसन्नी के फूफा को अलग हटाया और आश्चर्य के साथ इन स्त्रियों से पूछा कि तुम कौन हो जो इस प्रकार अपनी जान तक आड़ रही हो।

दुलारी–हम कोई हों, पर क्या प्रत्येक मनुष्य का यह धर्म नहीं है कि अगर किसी पर ज़ुल्म हो रहा हो तो उसे बचावे, किसी की गर्दन पर आरा चल रहा हो तो उसे छुड़ावे? लोगो

तुम भी अपने कर्तव्य का पालन करो और प्रसन्नी को इन राक्षसों के हाथ से बचाओ।

इस पर बहुत से लोग उठ खड़े हुये और यह कहते हुये वहां से चलने लगे कि हमतो अपनी आंखो इस जुल्म को देख नहीं सके हैं, इस वास्ते जाते हैं पीछे जो चाहे होता रहो।

दुलारी—मर्द होकर मर्दों वाली बातें करो, किसी पर जुल्म होता देखकर भाग जाना यह मर्दों का काम नहीं है, मर्द बनते हो तो अपने सामने इस जुलम को हटाकर जाओ।

दुलारी के ऐसा कहने पर वह ठठक कर कहने लगे कि यह तो व्याह नहीं है, साक्षात ही महा अन्याय है, इस वास्ते बिरादरी वालों का यहां ठहरने का क्या काम है। इस पर प्रसन्नी के फूफा और रामानन्द ने पैरों में पड़ पड़ कर और हाथ पकड़ २ कर उनको ठहराना चाहा और बहुत कुछ वावैला मचाया कि अगर बिरादरी को यह व्याह मंजूर नही था तो पहले ही क्यों नही रोक दिया था, जिससे हमारा हज़ारो रुपया तो ख़र्च न होता और बारात को बुलाने और लाने का ढंढस तो न करना पड़ता। इस प्रकार वह बहुत ही चिल्लाये परन्तु बिरादरी के लोग न ठहरे और फिर बराती भी उठ उठकर चलने लग गये।

अब लाचार रामानन्द की सलाह से प्रसन्नी का फूफा थानेदार को तीन सौ रुपय रिश्वत का देना करके बुला लाया और उसकी मदद से फेरे फेरना चाहा, थानेदार ने दुलारी और उसकी दासियों को देखकर यह ही समझा कि यह कोई आवारा फिरती बदमाश औरतें है, जिनको किसी आदमी ने

लालच देकर भेजा है जो आपही प्रसन्नी को व्याहना चाहता है। ऐसा समझकर उसने इन तीनों स्त्रियों को पकड़ लिया और आवारा गर्दी में चालान करके बहादरगढ़ की कचहरी में लेचला और कहचला कि अब तुम मेरे पीछे बेखटके फेरे फेरलेना और कुछ भी डर मत करना, इस पर प्रसन्नी ने शेरनी की तरह गरज कर कहा कि मेरे हाथो मे भी हथकड़ी डालो और इनही के साथ लेचलो नही तो मै अपघात करलूंगी और तुम सबको फांसी दिलवाऊंगी। उसकी इस बात से थानेदार भी डरगया और यद्यपि उसको साथ नहीं लेगया परन्तु यह ज़रूर समझा गया कि अभी जल्दी मत करना, बल्कि इन तीनों स्त्रियो को सज़ा होजाने के पीछे तब ही व्याह करना जब प्रसन्नी अच्छी तरह ढीली होजावे।

जिस समय यह स्त्रियां कचहरी में लाई गईं तो सबने ही यह समझा कि वास्तव में यह कोई ठगनियां ही हैं, परन्तु जब दुलारी ने हाकिम के सामने बड़े हौसले के साथ तक़रीर करी तो लोग हैरान होगये और यह विचारने लग गये कि यह तो वह ही रामदुलारी मालूम होती है जो समाचार पत्रो में प्रसिद्ध हो रही है, इस कारण उन्होंने वकील बैरिस्टरों को ख़बर पहुंचाई जो तुरन्त ही आये और इन स्त्रियो की तरफ़ से पैरवी करने को तैय्यार होगये, परन्तु उस समय तो मुक़द्दमा समाप्त होकर फ़ैसला लिखा जा रहा था, इस वास्ते कुछ न करसके। तो भी अपील होने का भय करके हाकिम ने इतना ज़रूर किया कि छै छै महीने की कड़ी क़ैद की सजा जो वह करना चाहता था उसके स्थान में दो दो महीने की सादी क़ैद की ही सज़ादी।

वकीलों ने तुरन्त ही जज के यहां अपील करके उनको

ज़मानत पर छुड़ाना चाहा परन्तु जज कचहरी से उठ चुका था अगले दिन इतवार था इस वास्ते उनको दो दिन जेल में ही रहना पड़ा, तीसरे दिन अपील करके वैरिस्टरों ने उनको अपनी ज़मानत पर छुड़ा लिया, और खुद जाकर और कपड़े पहना कर उनको वडी इज़्ज़त के साथ जेल से ले आये और बाबू शेरसिंह की कोठी में ठहराया, अगले दिन अपील पेश हुई और दुलारी ने खुद सब हाल जज को सुनाया, जिस पर जज ने वह मुक़द्दमा ज़िले के हाकिम के पास वापस भेज कर स्वयम पूरी पूरी तहक़ीक़ात करने का हुक्म दिया। तहक़ीक़ात होने पर सब हाल दुलारी के कहने के अनुसार ज्यों का त्यों खुल गया, और जज ने उनको वड़ी प्रतिष्ठा के साथ जुरम से वरी करके छोड़ दिया और साफ़ २ लिख दिया कि प्रसन्नी के फूफा को ज़बरदस्ती उसका व्याह करने का कोई अधिकार नहीं है। उसको चाहिये कि अदालत के द्वारा अव्वल तो वह उसका (रक्षक) वली वने फिर व्याह करने की इजाज़त लेवे, तब व्याह कर सके, रामानन्द जैसे बुड्ढे कोढ़ी के साथ व्याह करने में तो वह बड़ा भारी जुल्म कर रहा था जिसके रोकने का सब ही को अधिकार है, इस वास्ते इन स्त्रियों ने कोई भी अपराध नहीं किया है किन्तु प्रशंसा का ही काम किया है, थानेदार को भी ऐसा ही करना चाहिये था, अर्थात ज़बरदस्ती को रोककर व्याह नहीं होने देना चाहिये था, परन्तु उसने तो इसके विरुद्ध रोकने वालियों को ही पकड़ कर चालान कर दिया, इस कारण थानेदार ही अपराधी मालूम होता है जिसकी पूरी पूरी तहक़ीक़ात होकर उचित दंड दिलाना चाहिये।

जेल से छूटने के बाद दुलारी ने यहां ठहर कर अनाथ

संरक्षणी सभा क़ायम की जिसका उद्देश्य यह रक्खा गया है कि वह देश भर के सब ही अनाथ बालक बालिकाओं की और उनको सर्व प्रकार की सम्पत्ति और स्वत्वों की रक्षा करै पीछे से इस सभा ने अपनी अनथक कोशिश से प्रत्येक ज़िले में अपनी एक शाखा सभा बनाई जो अपने ज़िले के सब ही अनाथों की निगरानी रक्खे, जिन अनाथों का कोई सम्बन्धी उनके पालन पोषण का भार अपने ऊपर न लेता हो वा अच्छी तरह पालन न करता हो उनके वास्ते अनाथालय खोले और अनाथों के विवाह की भी पूरी २ देख भाल और योग्य प्रबन्ध रक्खे और १८ बरस की उमर से पहले तो उनका ब्याह ही न होने दे, जिससे जवान होने पर वह स्वयम भी अपनी जोड़ी पसन्द करने के योग्य हो जावें।

२४--विरोधी सभा।

बहादर गढ़ से फ़राग़त पाकर दुलारी शहज़ादपुर चली गई जहां से उसको वार वार बुलावा आरहा था। शहज़ादपुर भी एक बहुत बड़ा शहर है परन्तु वहां कोई भी सुधार की बात नही चलने पाती थी। कारण यह कि वहां मदन गोपाल नाम के एक करोड़ पति सेठ का बड़ा भारी प्रभाव था जो सब गुण पूरे और रंगीले आदमी थे। नित्य नई २ रंडियों का नाचना गाना होता था और शराब का दौर चलता था। इसही के साथ सेठ जी नित्य सुबह उठते ही मंदिर में जाकर ठाकुरों को भोग लगाते, शिवजी को जल चढ़ाते और चरणामृत लेकर आते थे, अनेक प्रकार का धर्मानुष्ठान भी कराते रहते थे। एकादशी और अमावश्या को ब्राह्मण जिमाते और नाना प्रकार के जप भी कराते रहते थे, बरस में दसियों वार रासलीला होती,

गोपी रमण और चीर हरण का दृश्य देखते, ठाकुरों की सवारी बड़ी धूम धाम से निकलवाते, शिवरात्रि का मेला कराते, तुलसा का व्याह रचाते और काली माई पर बकरे और शराब चढ़ाते थे, साधु सन्त भी दो चार सदा उनके यहां पड़े ही रहा करते थे, इस प्रकार सबही रंग के आदमी उनके यहां आते थे और सेठजीकी बड़ाई गाते थे।

परन्तु उनके पास आने वालो को यह भय ज़रूर लगा रहता था कि कोई सुधार की बात इनके कान में न पड़ने पावे जिससे सारा मज़ा ही किरकिरा हो जावे। इस वास्ते पण्डित पुजारी, वैरागी, सन्यासी, शराबी कबाबी, व्यसनी, व्यभिचारी सब ही उसके सामने सुधारको की बुराई करते रहा करते थे और नगर भर में भी सेठ साहब की बड़ाई गाते थे और सुधारकों से घृणा दिलाते रहा करते थे। इस प्रकार यह सारा शहर ही सेठ साहब के मत का हो रहा था, दस बीस पढ़े लिखे बाबू, दो चार पंडित और बीस तीस साधारण लोग जो इनके तरीके के ख़िलाफ़ थे और कुछ सुधार चाहते थे उनकी नगर के लाखों आदमियों के सामने क्या चल सकती थी, इस वास्ते मन की बात मन ही में रखते और कुछ भी नहीं बोलते थे, परन्तु दो तीन बरस से पंडित वासुदेव नाम के एक लायक़ वकील के आने से यहां भी कुछ समाज सुधार की बात उठने लग गई थी, और भ्रात्रि मंडल नाम की एक सभा भी स्थापित हो गई थी, जिसमें अभी तक बडी मुश्किल से २५ ही आदमी शामिल हो सके थे। इस मंडल ने सबसे पहली बात सुधार की यह उठाई थी कि वेश्याओ के नाच की बुराई की जावे और जहांतक हो सके भले आदमियों में इनका आना जाना बन्द कराया जावे।

मंडल की इस बात पर शहर के लोग बहुत बिगड़े और बहुत से पंडितो ने तो शास्त्र की दुहाई देकर यह व्यवस्था ही दे डाली कि जिस प्रकार सतयुग में अप्सरायें देवताओं को नाच गाकर रिझाती थीं इस ही प्रकार इस युग मे यह वेश्यायें भक्तजनों को प्रेम रस पिलाकर ईश्वर की भक्ती में लगाती है। पंडितो की इस व्यवस्था से वेश्या नृत्य का प्रचार और भी ज़्यादा बढ़ागया था और नगर भर का चलन बहुत ही ज़्यादा बिगड़ गया था। इस ही कारण मंडल ने बड़े तक़ाज़े के साथ दुलारी को बुलाया था कि उसके दैवी तेज से ही यहां के लोगो की दशा सुधर जाय।

दुलारी के आने की बात सुनकर तो चलते पुरज़ों ने बड़ा ही भारी हुल्लड़ मिचाना शुरू कर दिया, उसको महा कलंकनी बताकर लोगों को उससे घृणा करानी प्रारम्भ करदी, गली २ यह कहते फिर गये कि जो कोई उसका मुख भी देख पावेगा वह सीधा नरक को जावेगा, बल्कि किसी २ ने तो यहां तक बड़ंत बड़ दी कि शास्त्रों में जिस प्रकार कलंकी अवतार पैदा होने का वर्णन है ऐसा ही कलंकनी के पैदा होने का भी कथन है, जिसके सब लक्षण इस दुलारी में मिलते हैं और उसके प्रगट होने का समय भी यह ही निश्चय होता है, इस कारण यह ही वह कलंकनी है जो जहां जहां को जावेगी वह धरती भी पापमय होती चली जावेगी।

ऐसी २ बातों से शहर वाले उसका यहां आना बहुत ही अशुभ समझने लग गये, और जब वह रेल से मोटर में बिठाकर गाजे बाजे के साथ शहर में लाई गई तो उस पर कंकर पत्थर और खाक धूल फेंकी और रात को मोती मुहल्ले की धर्मशाला में धर्म संरक्षणी नाम की एक बहुत बड़ी सभा जोड़ी जिसमें

शहर के सब ही लोग जमा हुवे, दुलारी ने भी उस सभा में जाने का इरादा किया, जिस पर मंडल वालों ने बहुत रोका परन्तु वह न मानी और जाने के वास्ते तय्यार ही हो गई तब मंडल के लोग लाचार होकर बाबू नन्दकिशोर के पास जाकर उन से प्रार्थी हुवे कि आप भी सभा में जावें और दुलारी के साथ किसी प्रकार का दंगा फ़िसाद न होने देवे।

बाबू नंदकिशोर एक नामी बैरिस्टर थे, मध्यस्थ प्रकृति के आदमी थे किसी भी पार्टी में शामिल नही थे, सब ही से मिलते थे, सब ही के काम आते थे, शान्ति प्रिय थे और शहर के हाकिम और सब ही प्रतिष्ठित लोग उनका लिहाज़ करते थे। उन्होंने दुलारी को अपने साथ सभा में ले जाना मंजूर कर लिया और रास्ते में से डिप्टी बांकेराय और रायबहादुर गुलाबचन्द ऐडीशनल जज को भी साथ ले लिया, सभा में ठसाठस आदमी भरा हुवा था, तिल धरने को भी जगह नहीं थी, तो भी इन लोगों के पहुंचने पर छीड़ होती चली गई, सेठ मदन गोपाल ने स्वयम आगे बढ़कर इनका स्वागत किया और उच्च आसन दिया, और बाबू नन्दकिशोर ने दुलारी और उसकी दासियो को सभापति के पास लेजा कर बिठाया और बहुत कुछ सन्मान दिखाया।

थोड़ी देर बाद पंडितों का व्याख्यान शुरू हुवा जिसमें उन्होने धर्म की दुहाई दे देकर यह ही कहा कि प्राण जायं तो जायं परन्तु हमको अपने बड़ों का धर्म नहीं छोड़ना है, पश्चिम की रीति नीति को ग्रहण करके ईसाई नहीं बनाना है, अपनी कन्याओं और स्त्रियों को निर्लज्ज नहीं बनाना है, यहां के लोग तो शील ही को स्त्रियों का भूषण मानते है, जिसके शील नहीं

उसका तो मुंह भी देखना नही चाहते हैं, यहां के लोग तो सदा से धर्म पर जान देते आये है और अब भी जान देने को तय्यार है, आज कल पादरियों ने हमारी स्त्रियों को बहकाने का बड़ा भारी बीड़ा उठाया है और अनेक कुल कलंकनी स्त्रियों को लालच देकर इस काम के वास्ते नियत किया है, इस वास्ते सावधान हो जाओ, अपने २ घरों को बचाओ, नहीं तो सर्वनाश हो जायगा, बड़ों का चलाया हुवा धर्म ख़ाक में मिल जायगा, इत्यादि।

व्याख्यान के समाप्त होने पर दुलारी ने धन्यवाद स्वरूप कुछ कहना चाहा, जिस पर बाबू गुलाबचन्द ने कहा कि हम तो धन्यवाद मात्र ही नहीं किन्तु आपका विस्तृत उपदेश सुनना चाहते है। जज साहब के मुख से यह शब्द निकलते ही सेठ मदन गोपाल भी दुलारी से प्रार्थना करने लगे कि अवश्य अपना मनोहर उपदेश सुनाकर सभा को कृतार्थ करो। फिर ख़ुशामद में आकर दो चार पंडितों ने भी उठकर यह ही इच्छा प्रगट की किन्तु दुलारी ने उत्तर में यह ही कहा कि समय बहुत बीत गया है, सब लोग थकित और आकुलित मालूम होते हैं इस कारण इस समय तो धन्यवाद स्वरूप ही कुछ कहा जाता है, कल की सभा में अगर मौक़ा मिला तो विस्तार के साथ कहा जासकता है, आज के व्याख्यानो में पंडित महाशयो ने लोगो को धर्म पर दृढ़ रहने और उसको अपनी जान से भी अधिक प्यारा समझने का उपदेश दिया है। इसके वास्ते मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देती हूं, इस ही प्रकार पंडित महाशयों ने शील की प्रशंसा करके उसको स्त्री का भूषण बताया है, मै कहती हूं कि भूषण क्या इसके बिदून तो स्त्री स्त्री ही नहीं है किन्तु कुत्ती सूरी और इससे भी अधिक

घृणित और नीच है, पंडित महाशयों ने ऐसी नीच स्त्रियों की शकल देखने की मनाही की इसके लिये मै उनको जितना भी धन्यवाद दूं वह थोड़ा है। मै तो लाख जिह्वा से भी उनको धन्यवाद देकर तृप्त नहीं हो सक्ती हू और प्रार्थना करती हूं कि कल की सभा में वह इस विषय पर और भी ज़्यादा ज़ोर दें और महा व्यभिचारिणी वेश्याओं की शकल देखना तो बिल्कुल ही बन्द करादें।

मेरा तो यह कहना है और केवल मेरा ही कहना नहीं है किन्तु इस बात को तो आप सब मानते है कि धर्म तो स्त्री और पुरुष दोनो हो के वास्ते है, दोनों ही को इसका पालन पूर्ण रीति से करना उचित है, दोनों ही को पूर्ण शीलवान होने की ज़रूरत है, मै आशा करती हूं कि कल की सभा में पंडित गण इस बात को भी स्पष्ट कर देंगे और साफ़ शब्दों में खोलकर बतादेंगे कि जिस प्रकार स्त्रियों का पूर्ण शीलवान होना ज़रूरी है उस ही प्रकार पुरुषों का भी पूर्ण शीलवान होना लाज़िम है, जिस प्रकार कुशीली स्त्री का मुंह नहीं देखना चाहिये इस ही प्रकार कुशीले पुरुष से भी घृणा करनी चाहिये। पंडित महाशयो ने पश्चिम की रीति रस्मो की बुराई करके उनके ग्रहण न करने का उपदेश दिया है, मै भी उनकी अनेक रीतियों की निंदा करती हूं, विशेष कर विवाह सम्बन्ध जोड़ने की जो उनकी रीति है वह तो बहुत ही घृणित है, मै प्रार्थना करती हूं कि पंडित महाशय हमारी प्राचीन स्वयम्बर की उत्तम रीति को फिर से चलावें और बाल विवाह की खोटी रीति को बिल्कुल ही हटावें।

इतना कहकर जब दुलारी बैठ गई तो जज साहब ने उसकी बहुत प्रशंसा की और इस पर सेठ साहब ने भी उसकी बहुत

कुछ बड़ाई गाई किन्तु पंडितो के द्वारा अनेक बहाने बनाकर अगले दिन की सभा न होने दी, तो भी दुलारी ने वहां ठहर कर मंडल की तरफ़ से अनेक सभायें कीं जिससे लोगो के विचार बहुत दुरुस्ती पर आये और मंडल के सभासद बनकर समाज सुधार में लगगये।

२५--गुमानीलाल का पश्चात्ताप।

डेढ़ बरस तक इसही प्रकार काम करते रहने के बाद जब दुलारी दक्षिण देश के विजय नगर में काम कर रही थी तो वहां उसको अनेक नगरो में ढूंढता फिरता हुवा गुमानीलाल मिला, आंखें जिसकी अन्दर को गड़ रही थीं; गाल पिचक गये थे, खाल लटक रही थी और बदन में हड्डियां ही हड्डियां रह गई थीं, जिससे अब वह पहचाना भी नहीं पड़ता था और बहुत ही चिन्तातुर हो रहा था। देखते ही वह दुलारी के पैरों में गिरपड़ा और रो रोकर कहने लगा कि मै वह ही महा पापी गुमानीलाल हूं जिसने तुमको महान दुख दिया है और अब बेशरम होकर अपने अपराध क्षमा कराने आया हूं। दुलारी ने उसको तुरन्त ही अपने पैरों से हटाया और धीरज बंधाकर हाल पूछना चाहा तो उसने यह ही बताया कि मै अब दुनियां से तंग आगया हूं और यह ही चाहता हूं कि बाकी जीवन परोपकार में ही बिताऊं और अपनी सारी सम्पत्ति भी इसही में लगाऊं, इसही बात की सलाह लेने मै तुम्हारे पास आया हूं।

दुलारी-मालूम होता है कि किसी असह्य कष्ट के कारण ही आप का ऐसा विचार हुवा है, इस वास्ते मुनासिब है कि पहले तुम्हारी सारी व्यथा सुनूं तबही कुछ सलाह दूं।

गुमानीलाल-(टप टप आंसू बहाकर) देवी मैं तुमको अपनी व्यथा क्या सुनाऊं और कहांतक अपनी फूटी क़िस्मत का गीत गाऊं, मैंने जो वह उत्तम चन्द की लड़की ब्याह ली है उसही ने मेरी सारी इज्ज़त ख़ाक में मिला दी है, वह तो नित्य ही नया गुल खिलाती है और ज़रा नहीं शर्माती है। यदि समझाता हूं धमकाता हूं तो धरती आकाश एक कर देती है, मुहल्ले भर को इकट्ठा करलेती है, और मुंह फट होकर मुझ पर ही झूठे सच्चे दोष लगाने लगजाती है, मेरे गुमाश्तों कारिन्दो नौकरों चाकरों पर भी जो चाहे घृणित से घृणित दोष लगा देती है जिससे उनको भी अपनी इज्ज़त भारी होजाती है, इस ही से वह दस दिन भी नहीं टिकते हैं और नित्य नये ही रखने पड़ते हैं। शहर की सबही चालाक औरतें उसके पास आती हैं और गुप्त रूप से मन माना उपद्रव मचाती रहती हैं जिससे मुझको लोगों के सामने आना भी भारी होगया है और अपघात करलेने को ही जी चाहता है।

यह सब बातें सुनकर दुलारी ने उसको कई दिन तक अपने पास ठहराया संसार का ऊंच नीच समझाया और फिर इस ढब पर लाना चाहा जिससे सबसे पहिले वह अपना सर्व प्रकार का दुराचार छोड़कर सदाचारी बनजावे फिर अपनी स्त्री को क़ाबू में लावे और सदाचारी बनावे, परन्तु गुमानीलाल ने रो रोकर बार बार इसका उत्तर यह ही दिया कि मैंने तो अपना सब दुराचार छोड़ दिया है, सब प्रकार से अपने को क़ाबू में कर लिया है और इससे भी ज़्यादा जिस प्रकार तुम कहो अपने को साधने को तैय्यार हूं परन्तु उस दुष्टा को तो किसी प्रकार भी क़ाबू में नहीं ला सकता हूं और न उसके साथ ही रह सकता हूं।

जन्म कर्म खोते हैं, और जब तक यह वेश्यायें रहेंगी तब
इस ही प्रकार अनेक पुरुष अपने को नष्टभ्रष्ट करते रहेंगे।
कारण वेश्याओं का होना ही क्यों न बंद किया जावे, जि
प्रकार मेरा उद्धार हुआ है इस प्रकार सब ही का उद्धार क्यों
न किया जावे, ऐसा जोश हृदय में लाकर उसने दुलारी
आग्रहके साथ प्रार्थनाकी और अपने प्रायश्चित्तरूप अपनी आ
सम्पत्ति इस महान कार्य के अर्थ अर्पण करदी जब दुलारी
वेश्याजन्म सुधारनी नाम की एक सभा स्थापित की जिस
द्वारा इस बात का भारी बीड़ा उठाया कि वेश्यायें बस्ती
अन्दर न रहने पावें, कोढ़ियों की तरह से बस्ती के बाहर
अपनी आबादी बसावें, और कोई भी भला मानुष्य उनके पा
न जावे और न नृत्य आदि के वास्ते अपने यहां बुलावे और ज
कोई पुरुष उन वेश्याओं के पास जावे वह नीच समझा जा
सब कोई उसकी संगित से घृणा खावे और उससे बा
करने तक से लजावे।

सभाने अपने इस प्रस्ताव का बहुत ही ज़्यादा प्रचार किय
नगर नगर और ग्राम ग्राम में वेश्याओं को बस्ती से बाह
निकलवाया, और फिर कुछ दिन पीछे कई स्थानों में वेश्
सुधार आश्रम भी स्थापित किये जिनमें वह वेश्यायें आक
रहें जो दुराचार और व्यभिचार को छोड़कर सदाचारी बन
चाहें, इस समय जगह २ उनकी भारी बेक़दरी होजाने
सबही वेश्याओं को सदाचारी बनने की ज़रूरत [illegible]
इस कारण शीघ्र ही यह सब आश्रम ठसाठस वेश्याओं
गये और अन्य अनेक स्थानों में आश्रम खोलने की
ई। इन आश्रमों में आई हुई वेश्याओ को हाथ
ज़ी कमाना, रूखा सूखा खाना, मोटा